THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180674
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.6/H28Ru. Accession No. G.H 2505

Author हरिकृष्ण 'प्रेमी'।

Title रूप-दर्शन। 1950।

This book should be returned on or before the date last marked below.

रूप-दर्शन

प्रेमी जी की अन्य कृतियाँ

आँखों में	:	काव्य	२)
अग्निगान	:	काव्य	१॥)
अनन्त के पथ पर	:	काव्य	२।)
वन्दना के बोल	:	काव्य	३)
जादूगरनी	:	काव्य	
प्रतिमा	:	काव्य	
स्वर्णविहान	:	गीतनाटिका	
विष-पान	:	ऐतिहासिक नाटक	२)
स्वप्न-भंग	:	ऐतिहासिक नाटक	२)
उद्धार	:	ऐतिहासिक नाटक	२)
छाया	:	सामाजिक नाटक	१)
रक्षा-बन्धन	:	ऐतिहासिक नाटक	१=)
प्रतिशोध	:	ऐतिहासिक नाटक	२)
शिवासाधना	:	ऐतिहासिक नाटक	२)
आहुति	:	ऐतिहासिक नाटक	१)
बन्धन	:	सामाजिक नाटक	१)
मंदिर	:	एकांकी नाटक	१)
मित्र	:	ऐतिहासिक नाटक	१)
शपथ	:	ऐतिहासिक नाटक	

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ६

रूप-दर्शन

हरिकृष्ण 'प्रेमी'

१९५१
आत्माराम एण्ड संस
पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली

प्रकाशक :—
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली

चित्रकार
श्री देवीसिंह
चित्रकुटीर, देहरादून

मूल्य छः रुपये

मुद्रक :—
रामलाल पुरी
यूनीवर्सिटी ट्यूटोरियल प्रेस
काश्मीरी गेट, दिल्ली

भूमिका

एक युग के बाद प्रेमी आ गया है गीत गाने।

विश्व की आँखें बचा कर जल रहा था शून्य में दिल,
वेदना आई हृदय के दीप की ज्वाला दिखाने।
एक युग के बाद प्रेमी आ गया है गीत गाने।

रूप ने इसको जलाया प्रीत के कोमल करों से,
जल रहा है, आँधियाँ आईं इसे यद्यपि बुझाने।
एक युग के बाद प्रेमी आ गया है गीत गाने।

भारती के भव्य मन्दिर में जगत जाने न देगा,
सीढ़ियों पर बैठ कर ही यह लगा वीणा बजाने।
एक युग के बाद प्रेमी आ गया है गीत गाने।

जानता हूँ गायकों में मान पाएगा न प्रेमी,
भारती खुद आयगी इसको निकट अपने बिठाने।
एक युग के बाद प्रेमी आ गया है गीत गाने।

'प्रेमी'

रूप-दर्शन का रूप-दर्शन

सोचा था—जिस प्रकार आकाश अपने आँगन में तारों के फूल बिखेर देता है और एक शब्द भी उनके विज्ञापन में उच्चारित नहीं करता—मैं "रूप-दर्शन" की अनुभूतियों के संबंध में एक अक्षर भी नहीं आँकूँगा, किंतु जहाँ वाद-विवादों के बादल सूर्य-शशि के रूप को भी छुपा लेते हों वहाँ "स्वरूप" के अवगुंठन का स्वयं ही उद्‌घाटन करना आवश्यक जान पड़ता है।

साहित्य और कला का ध्येय जीवन को प्रकाश देना, बल देना और प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है, इस सिद्धान्त को मैं मानता हूँ, किंतु इतने सीमित क्षेत्र में भारती को बंदी नहीं रखा जा सकता। स्व-जीवन के अतिरिक्त विश्व-जीवन भी, अंतर्जगत के साथ ही बाह्य जगत भी काव्य और कला के विषय हैं। मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, और सामाजिक संघर्षों से उत्पन्न होने वाली अनुभूतियाँ भी काव्य और कलाओं में चित्रित की जाती हैं। समय की आँधियों से कवि-हृदय अप्रभावित रहे यह असंभव है इस बात को मैं मानता हूँ, फिर भी "रूप-दर्शन" की रचनाएँ किसी एक काल से बँधी हुई नहीं हैं। इनमें राजनीति की तीखी समस्याएँ नहीं हैं, समाज की विषमताओं की बेचैनी नहीं है।

समय से प्रभावित होकर भी मैंने रचनाएँ लिखी हैं—मेरे "स्वर्ण-विहान" और "अग्निगान" आदि काव्य-ग्रंथ एवं "रज्जा-बंधन", "स्वप्न-भंग" "विष-पान" आदि नाटक इस बात के प्रमाण हैं। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के बदलते ही इस प्रकार के साहित्यिक ग्रंथों के महत्व में कमी आ जाती है इसमें संदेह नहीं है। वे दीपक की तरह रात के अंधेरे में प्रज्वलित होकर जितनी दूर तक उनकी ज्योति की उँगलियाँ जा सकती हैं उतनी दूर तक अंधेरे को चीरती रहेंगी, जब तक कि सवेरा नहीं होता। सवेरा होने पर ये दीप बुझ जाएँगे, किंतु फिर रात आई तो वे फिर जल भी उठेंगे और फिर अंधेरे से युद्ध करेंगे।

"रूप-दर्शन" के गीत तो केवल रात में जल कर प्रकाश देने वाले दीप नहीं हैं। सामयिकता और उपयोगिता की तराजू से तोलने वाली बनिया-बुद्धि इनमें शायद कुछ भी न पाए। "रूप-दर्शन" के गीत रूप (सौंदर्य) प्रीत और यौवन की वे अनुभूतियाँ हैं जो मानव-हृदय में सृष्टि के आदि काल से झंकृत हो रही हैं और अंतकाल तक होती रहेंगी, जो एक सम्राट् के हृदय में नृत्य करती हैं तो एक भिक्षुक के हृदय में भी। "रूप-दर्शन" के पहले की मेरी "आंखों में", "अनंत के पथ पर", "जादूगरनी" और "प्रतिमा" आदि काव्य-पुस्तकें भी इसी प्रकार की हैं।

पेट की भूख कहती है कि हृदय की भूख की बात करना विलासिता है। जो कला से हल या तलवार का काम लेते हैं उन्हें मैं दोष नहीं देता, मैंने भी कविता-कामिनी के

सुकुमार करों से कठोर कार्य लिया है। कला में महानाश की ज्वाला प्रज्वलित करने की क्षमता है और अमृत की वर्षा करने की भी। काव्य आवश्यकता की प्रेरणा से कराला काली बनकर महानाश का ताण्डवनृत्य भी कर सकती है तो प्रीत की तरंग उठाने वाला लास्य भी। पद-दलित, अभाव ग्रस्त, श्रम-क्लांत, अपमानित और उपेक्षित मानवों को भी संघर्ष करने की शक्ति संचय करने के लिए कठोर धरती से उठाकर उसे "सत्यं, शिवं, सुंदरम्" के उस लोक में ले जाना आवश्यक हो जाता है जहाँ दो घड़ी के लिए उसके घाव भर जाते हैं। फूलों की मुसकान और तारों की जगमगाहट से कोई भौतिक कार्य सिद्ध नहीं होता लेकिन फिर भी मानव को उनका आनंद लेने से कोई रोक नहीं सकता। युद्ध-काल में, सैनिक भी युद्ध की भयंकरता को सहने की शक्ति प्राप्त करने के लिए, मनोरंजन की माँग करता है। कला मानव-जीवन को समय और परिस्थिति से संघर्ष करने का उत्साह प्रदान करने के लिए उसे अपनी मादक मधुर मुसकान से आनंद-विभोर करती है तो वह कल्याणकर ही है।

निस्संदेह थोड़े से स्वार्थी मनुष्यों ने अधिकांश मानवों के लिए संसार को जलता हुआ मरुस्थल बना दिया है। अधिकांश मनुष्यों की काया भूखी-प्यासी है और हृदय भी। यदि कला संघर्षमय जीवन के नीरस और तप्त मरुस्थल में अपनी हरीतिमा से किसी हृदय को कुछ क्षणों के लिए पुलकित और हर्षित कर दे तो क्या यह पाप है। जीवन अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का उत्साह तभी पायेगा जब उसकी साँस के धागों को, जो बराबर तनते ही जा रहे हैं, कोई रस-सिक्त करता रहे ताकि वे टूट न जाएँ। संसार में सरिता के नीर की भी उपयोगिता है तो उसके कल-कल नाद की भी। उपयोगिता के नाम पर विचार और तर्क की भट्टियों पर भावना और कल्पना के नदी-निर्झरों को चढ़ाकर वाष्प बनाकर उड़ा देना क्या नितांत आवश्यक है?

"रूप-दर्शन" की भावनाओं की उपर्युक्त स्पष्टीकरण के प्रकाश में पढ़ने पर पाठक उनसे न्याय कर सकेंगे। "रूप-दर्शन" की रचनाएँ अपनी लाघवता के कारण भी शायद पाठकों को पूर्ण संतुष्ट न कर पाएँ, किंतु यह मेरा एक प्रयोग है। तीव्र मदिरा के बड़े-बड़े गिलास, लबालब भर-भर कर, 'पीने वालों के हाथों में न देकर, सौंदर्य, प्रेम और यौवन की आनन्द-वेदनामय अनुभूति-सुरा की छोटी-छोटी प्यालियाँ मैंने पेश की हैं।

उर्दू की ग़ज़ल और हिंदी के गीत का सम्मिश्रण मैंने इन रचनाओं में किया है। गीत की प्रत्येक दो पंक्तियों का जोड़ा अपने आप में पूर्ण है, लेकिन अपूर्ण भी है क्योंकि आगे की पंक्तियों से संबंध भी कायम है। मैं जानता हूँ कि मैंने बचपन किया है क्योंकि प्रत्येक नया प्रयोग बचपन ही होता है—लेकिन मैं अपने बचपन से लज्जित नहीं हूँ क्योंकि अनेक बार बचपन भी अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं को जन्म देता है।

मेरा जीवन तो सदा आँधी-तूफ़ानों की छाती पर सवार होकर चला है, कभी वह उड़

कर हिमालय के ऊपर पहुँचा है तो कभी समुद्र की गहराइयों में जा डूबा है कभी थपेड़ें खाकर मूर्छित भी हो गया है, उसकी बाँसुरी के स्वर रुके भी हैं किंतु कोई अज्ञात मेरे श्वासों में अपने श्वास भर जाता है—और मैं गा उठता हूँ। भाति-भाँति के उतार चढ़ाव मेरे राग में हैं। विद्वत्ता और काव्य-प्रतिभा का अभिमान मुझे नहीं है। ईमानदारी से अपनी अनुभूतियों को उनके प्राकृत रूप में उपस्थित कर देना भर मैं जानता हूँ। आशा है मेरे पाठक "रूप-दर्शन" के गीतों के प्रति सदा की भाँति स्वाभाविक स्नेह का परिचय देंगे।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

समर्पण

शशि को

नभ-निवासी शशि तुम्हें ये गीत मेरे हैं समर्पित।

एक ही कण तो तुम्हारे स्नेह का मुझको मिला है,
स्निग्ध गायन हो गया है, हो गई झंकार हर्षित।
नभ निवासी शशि तुम्हें ये गीत मेरे हैं समर्पित।

कौन से युग में रहा है कौन-सा संबन्ध तुम से,
क्यों लगी पहली नज़र में छवि मुझे इतनी सुपरिचित।
नभ-निवासी शशि तुम्हें ये गीत मेरे हैं समर्पित।

गीत ये पागल हृदय के विश्व की जिन पर नज़र है,
स्पर्श कर दो तुम, इन्हें मिल जाय तो मुसकान सुरभित।
नभ-निवासी शशि तुम्हें ये गीत मेरे हैं समर्पित।

प्रीत पाने के लिए मैं गीत ये गाता नहीं हूँ,
भूल कर मत छीन लेना वेदना दिल की सुअर्जित।
नभ-निवासी शशि तुम्हें ये गीत मेरे हैं समर्पित।

'प्रेमी'

सूची

१.	बावला हो उड़ चला पंछी	१
२.	प्यार की मंजिल	३
३.	पास आ जाए यह चन्द्रमा	५
४.	चाहता हूँ मैं गगन की तारिकाओं को	७
५.	यह मुसाफिर आगया	९
६.	किसी से हम नहीं कहते	११
७.	आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी	१३
८.	बह चला निर्झर	१५
९.	मूक यौवन	१७
१०.	दे गया दिल को जवानी	१९
११.	गगन में घन नहीं	२१
१२.	मौत को भी भूल कर	२३
१३.	किस लिए मैं मौन था	२५
१४.	हो गया है क्या मुझे	२७
१५.	रूप-रवि की रश्मियों ने	२९
१६.	खे रहा हूँ नाव	३१
१७.	प्रीत प्राणों में	३३
१८.	जग उठे हैं	३५
१९.	प्रात के पुलकित पवन ने	३७
२०.	खिली हैं कुंज की कलियाँ	३९
२१.	आज दिल के तार चंचल	४१
२२.	शून्यता में कौन	४३
२३.	थे मिलन के क्षण	४५
२४.	एक दिन अनजान में	४७
२५.	एक दिन कोई	४९
२६.	खींच दूँ तस्वीर	५१
२७.	वह सामने आए	५३

२८.	आप कुछ कुछ दिख रहे हैं	५५
२९.	रूप हँस कर कह रहा है	५७
३०.	देख कर मुसका गए	५९
३१.	वह मिले तो	६१
३२.	उस दिवस	६३
३३.	दर्द मीठा प्रेम का	६५
३४.	मैं कहानी कह रहा था	६७
३५.	रूप की मादक नज़र	६९
३६.	पास जो तुमने बुलाया	७१
३७.	निकट मैं आ गया	७३
३८.	जानता हूँ रक्त में	७५
३९.	समझ में कुछ नहीं आता	७७
४०.	नहीं इसको रहम	७९
४१.	तन सुतन कंचन	८१
४२.	स्वर्ण-सा है तन	८३
४३.	कभी मुसकान	८५
४४.	पतंगा तो नहीं डरता	८७
४५.	अमर है प्यास	८९
४६.	ली तुम्हारी याद ने	९१
४७.	क्या हुआ अपराध	९३
४८.	याद जब आई	९५
४९.	चुभा करती सदा दिल में	९७
५०.	हो गया मुश्किल मुझे	९९
५१.	झर रहीं अविराम आँखें	१०१
५२.	नींद आ जाए ज़रा	१०३
५३.	सामने हँसती रहे छवि	१०५
५४.	कह रही हैं तारिकाएँ	१०७
५५.	आज महफ़िल ने बुलाया	१०९
५६.	चाहता है जग	१११
५७.	उमड़ने आ रहे आँसू	११३

५८. प्यार हो जाता स्वयं ११५
५९. प्रीत के अक्षर ११७
६०. विश्व में मैं खोजता हूँ ११९
६१. मौन क्षण भर दिल रहा १२१
६२. गीत जो दिल गा रहा था १२३
६३. नशे में हैं नयन १२५
६४. वेदना की विधि मिली १२७
६५. इकरार से ज़्यादा मज़ा १२९
६६. बह चली है रक्तधारा १३१
६७. प्रीत करने के नशे ने १३३
६८. मौत सी इस ज़िंदगी को १३५
६९. आज पहली बार जग से १३७
७०. ज़िंदगी के आवरण में १३९
७१. हमें दी ज़िंदगी १४१
७२. है चिता मैंने सजाली १४३
७३. मौत आकर द्वार से १४५
७४. है नहीं आसान १४७
७५. जो बुझाए से न बुझती १४९
७६. किसी को प्रेम दे पाते १५१
७७. भीड़ दुनिया में बहुत १५३
७८. रूप की मदिरा १५५
७९. हैं बहुत सुन्दर सितारे १५७
८०. जिसे हम याद करते हैं १५९
८१. दे गए हैं आग सी १६१
८२. वेदना रहती सदा १६३
८३. शक्ल शीशे में १६५
८४. मैं अभावों का धनी १६७
८५. राजपथ मुझको अपरिचित १६९
८६. मैं स्वयं तूफ़ान में १७१
८७. विश्व में अब हूँ अकेला १७३

८८. चल खिलाड़ी बढ़ खिलाड़ी . . . १७५
८९. स्वर्ग को मैं खोजता हूँ १७७
९०. रूप के प्यासे नयन १७९
९१. आँसुओं को बोलने का १८१
९२. तीर बनकर चुभ गया है १८३
९३. लाल लपटों से लिपट कर . . . १८५
९४. स्नेह का स्वर १८७
९५. ज़िंदगी भर दर्द को १८९
९६. है सरल नज़रें मिलाना १९१
९७. फूल का या शूल का १९३
९८. आ गई अंतिम १९५
९९. है पुकारा आज कवि को १९७
१००. चन्द्रमा माना जिन्हें १९९
१०१. डर न यौवन २०१
१०२. जवानी तो चला करती २०३
१०३. शाप दुनिया ने दिया २०५
१०४. फिर हृदय की वाटिका २०७
१०५. मैं शिला पर आँक दूँगा २०९
१०६. लेखनी है गीत लिखती २११
१०७. की मरण की कामना २१३
१०८. हो गए अरमान मूर्छित २१५
१०९. मुसकुराहट पूछती है २१७
११०. मैं नहीं डरता २१९
१११. जो लगा दे आग २२१
११२. मूर्ति है पत्थर २२३
११३. चल रहा हूँ मैं अलग २२५
११४. आज साक़ी फिर पिला २२७
११५. प्यार मैंने तो किया है २२९
११६. विश्व ने मुझको दिया सम्मान . . . २३१
११७. आप मुझको दें सहारा २३३

११८. भूमिका वासी गगन में २३५
११९. खिल उठीं कलियाँ २३७
१२०. भरी इन स्वर-लहरियों में . . . २३९
१२१. यह जले दिल की तड़प २४१
१२२. मत कुरेदो २४३
१२३. मत जगाओ २४५
१२४. नीड़ से झाँकी विहंगिनी २४७
१२५. प्राण चरणों में २४९
१२६. रूप के रस सिंधु से २५१
१२७. हार कर बिछुड़ा विहग २५३
१२८. गया था प्यार पाने को २५५
१२९. मिल सके तो २५७
१३०. हम नदी के इस किनारे २५९
१३१. कह रहा हूँ मैं २६१
१३२. फूल भी हैं शूल भी २६३
१३३. गीत की पोथी २६५
१३४. चाहता गा गीत अंतिम २६७

रूप-दर्शन

रूप-दर्शन

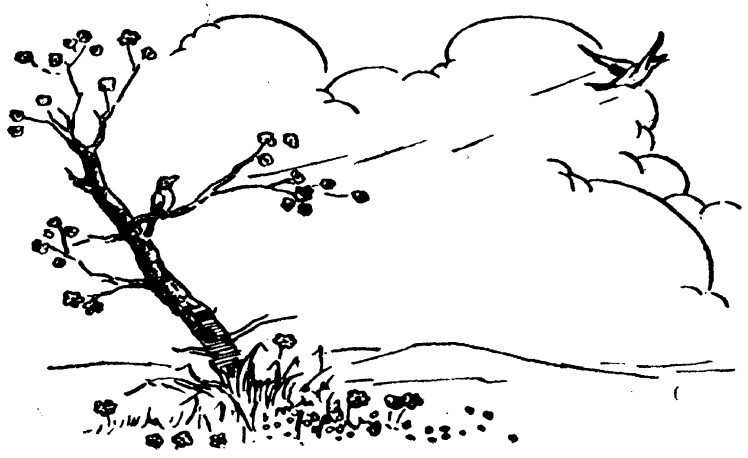

बावला हो उड़ चला......

[१]

बावला हो उड़ चला
पंछी गगन का छोर पाने ।

मन विहंगिनि का चकित है
शून्य से यह प्रीत कैसी ?
भूमि का वासी चला नभ
की कृपा की कोर पाने ।

बावला हो उड़ चला
पंछी गगन का छोर पाने ।

रूप-दर्शन

यामिनी कितनी मधुर थी
पास दोनों सो रहे थे,
उड़ चला पंछी न जाने
किस जगत में भोर पाने।

बावला हो उड़ चला
पंछी गगन का छोर पाने।

बज रहा था जो मधुर
संगीत दिल की धड़कनों में,
बंद कर उसको चला खग
क्यों जगत का शोर पाने?

बावला हो उड़ चला
पंछी गगन का छोर पाने।

स्वप्न में आकर किसी ने
दिल चुराया है विहग का,
आँख खुलते ही चला है
खग हृदय का चोर पाने।

बावला हो उड़ चला
पंछी गगन का छोर पाने।

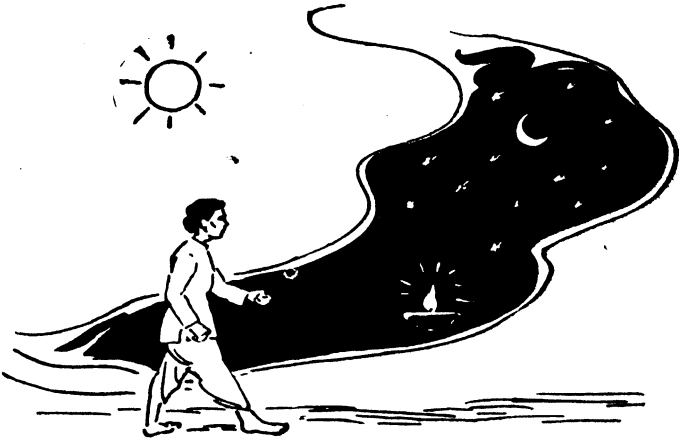

प्यार की मंज़िल.....

[२]

प्यार की मंज़िल कभी
मिल जायगी, चलते रहो ।

सूर्य जलता है दिवस में,
दीप जलता रात में,
भर हृदय में स्नेह प्रिय का
तुम सतत जलते रहो ।
प्यार की मंज़िल कभी
मिल जायगी, चलते रहो ।

मेघ बरसे, भूमि हर्षी,
और नभ निर्मल हुआ।
आँसुओं से दर्द कहता
तुम सदा ढ़लते रहो ।
प्यार की मंज़िल कभी
मिल जायगी चलते रहो।

प्यास कहती है कि बरसेगा
किसी दिन स्वाति भी,
दर्द कहता स्वप्न से
दिल में मधुर पलते रहो।
प्यार की मंज़िल कभी
मिल जायगी चलते रहो ।

बोलते रहते क्षितिज पर
स्वर सरस सौन्दर्य के,
बोल आशा के सुनाकर
तुम मुझे छलते रहो ।
प्यार की मंज़िल कभी
मिल जायगी चलते रहो।

पास आ जाए अगर.....

[३]

पास आ जाए अगर यह
चन्द्रमा तो चूम लूं।

एक कहता, 'यह अमृत है।"
दूसरा कहता, "गरल।"
रूप-रस का पान कर
यह भेद कर मालूम लूं।
पास आ जाए अगर यह
चन्द्रमा तो चूम लूं।

रूप-दर्शन

है नशा इतना कि केवल
देख कर पागल हुआ,
क्यों न छवि-रस पान कर
युग-युग नशे में झूम लूं ।
पास आ जाए अगर यह
चन्द्रमा तो चूम लूं ।

बावला जब हो गया
हर बोल कवि का गीत है,
गीत गुंजित कर जगत में
रूप की कर धूम लूं ।
पास आ जाए अगर यह
चन्द्रमा तो चूम लूं ।

रूप जाएगा जहाँ, यह
कल्पना होगी वहीं,
प्रीत के ले पंख मैं
आकाश भर में घूम लूं ।
पास आ जाए अगर यह
चन्द्रमा तो चूम लूं ।

चाहता हूँ मैं.....

[४]

चाहता हूँ मैं गगन की
तारिकाओं को बुला लूं।

तार वीणा के बजाकर
मैं मधुर संगीत छेड़ूं,
घेर लें छवियाँ मुझे
मैं चन्द्रमा-सा मुसकरा लूं।
चाहता हूँ मैं गगन की
तारिकाओं को बुला लूं।

रूप-दर्शन

रूप आमंत्रण लिए आ
जाय इठलाता हुआ-सा,
रूप के रस-सिंधु में
पागल जवानी को बहा लूं।
चाहता हूँ मैं गगन की
तारिकाओं को बुला लूं।

विश्व कहता है कि छवि की
वारुणी ज्वाला मयी है,
छवि-अनल का पान कर
मैं आग जीवन में जगा लूं।
चाहता हूँ मैं गगन की
तारिकाओं को बुला लूं।

मैं युगों से हूँ भटकता
प्यास प्राणों में समेटे,
विश्व भर के रूप को मैं
क्यों न प्राणों में बसा लूं।
चाहता हूँ मैं गगन की
तारिकाओं को बुला लूं।

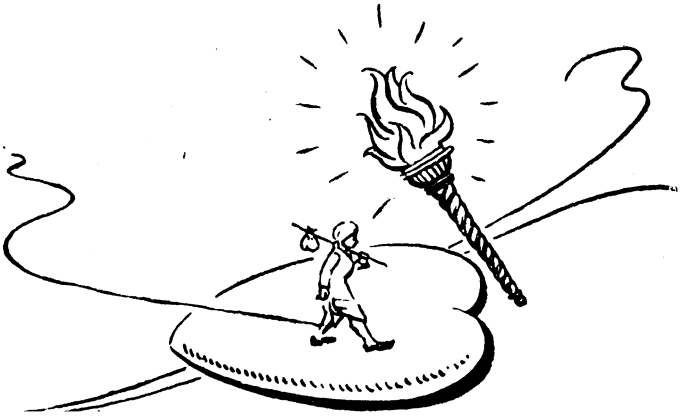

यह मुसाफ़िर आगया है.....

[५]

यह मुसाफ़िर आगया है
आज फिर तेरे नगर में ।

रूप की मुसकान मादक
थी बसी मेरे हृदय में,
याद का अवलंब ले
चलता रहा सूने सफ़र में ।
यह मुसाफ़िर आगया है
आज फिर तेरे नगर में ।

रूप-दर्शन

खींच लेती है शलभ को
ज्योति की उजली जवानी,
आगया खिंच कर स्वयं मैं
यह असर तेरी नज़र में।
यह मुसाफ़िर आगया है
आज फिर तेरे नगर में।

कंटकों के स्पर्श चरणों
को लगे कोमल सुमन-से,
प्रीत ने गति बन उठाए
पाँव प्रेमी के डगर में।
यह मुसाफ़िर आगया है
आज फिर तेरे नगर में।

एक-दो साँसें बची हैं
वे लुटाने आगया हूँ,
रूप की चादर उढ़ादे
आज तो अंतिम प्रहर में।
यह मुसाफ़िर आगया है
आज फिर तेरे नगर में।

किसी से हम नहीं कहते.....

[६]

किसी से हम नहीं कहते
किसी को प्यार करते हैं।

नज़र से जब नज़र मिलती
चमक पड़ती तड़ित सहसा,
हृदय के तार चिर नीरव
मधुर झंकार करते हैं।
किसी से हम नहीं कहते
किसी को प्यार करते हैं।

किसी छबि के पुजारी हैं
न मुँह तक बात आ पाई,
मगर दिलमें किसी की हम
बहुत मनुहार करते हैं ।
किसी से हम नहीं कहते
किसी को प्यार करते हैं ।

नज़र तो पूछ लेती है
हमें दिल में जगह दोगे,
न वह इकरार करते हैं,
न वह इनकार करते हैं ।
किसी से हम नहीं कहते
किसी को प्यार करते हैं ।

न इसका भेद खुल पाया
तभी तो रूप प्यारा है,
हटाते हैं न वह घूंघट
बड़ा उपकार करते हैं ।
किसी से हम नहीं कहते
किसी को प्यार करते हैं ।

आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी.....

[७]

आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी
शिला को फोड़ निकली ।

पर्वतों ने रोकना चाहा
इसे पथ में खड़े हो,
पर जवानी की लहर तो
पर्वतों को तोड़ निकली
आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी
शिला को फोड़ निकली ।

तरु-लताओंने बहुत चाहा,
'कसें हम बाहुओं में।'
प्रिय-मिलन की धुन लिए यह
बंधनों को छोड़ निकली,
आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी
शिला को फोड़ निकली।

कह चुके दोनों किनारे,
'कुछ रुको, विश्राम कर लो।'
एक क्षण रुकती नहीं, यह
काल से कर होड़ निकली।
आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी
शिला को फोड़ निकली।

ज्ञान-संयम के गहन स्वर
गा चुके थे गीत अपने,
प्रीत प्रियतम से चिरंतन
आज नाता जोड़ निकली।
आज फिर अवरुद्ध निर्झरिणी
शिला को फोड़ निकली।

बह चला निर्झर.....

[८]

बह चला निर्झर इसे अब
पर्वतों का डर नहीं ।

विश्व भर के आँसुओं से
भर गया कवि का हृदय,
सिंधु सूखें, सूखते पर
अश्रु के निर्झर नहीं ।
बह चला निर्झर इसे अब
पर्वतों का डर नहीं ।

रूप-दर्शन

रूप प्रियतम का निहारा,
अब जगत भाता नहीं ।
प्राण-प्रिय से विश्व में
कोई अधिक सुंदर नहीं ।
बह चला निर्झर इसे अब
पर्वतों का डर नहीं ।

दो घड़ी का है मिलन-सुख
है विरह का दुख अमर,
दर्द है जब तक हृदय में
प्रीत सकती मर नहीं ।
बह चला निर्झर इसे अब
पर्वतों का डर नहीं ।

वेदना में व्यस्त रहता,
गीत गा लेता विरह के,
विश्व की निर्मम दया पर
कवि कभी निर्भर नहीं ।
बह चला निर्झर इसे अब
पर्वतों का डर नहीं ।

मूक यौवन ने.....

[६]

मूक यौवन ने अचानक
हो मुखर मधु-गीत गाया।

आ गई कितनी बहारें
पर रहे अरमान नीरव,
कूक कर उर-कोकिला ने
आज उपवन को गुँजाया
मूक यौवन ने अचानक
हो मुखर मधु-गीत गाया।

रूप-दर्शन

छू दिया कोमल कमल की
पाँखुरी - सी उँगलियों ने,
उठ पड़ा तूफ़ान-सा कुछ,
ज़िंदगी में ज्वार आया।
मूक यौवन ने अचानक
हो मुखर मधु-गीत गाया।

मन गगन की शून्यता में
खोजता युग-युग रहा है,
रूप के इस मानसर में
उर-कमल-सा मुसकराया।
मूक यौवन ने अचानक
हो मुखर मधु-गीत गाया।

कल्पना कहले इसे जग,
स्वप्न चाहे मानले वह,
पी लिया कुछ मन-मधुप ने
इसलिए है गुनगुनाया।
मूक यौवन ने अचानक
हो मुखर मधु-गीत गाया।

दे गया दिल को जवानी.....

[१०]

दे गया दिल को जवानी
स्वप्न में अज्ञात कोई ।

ज्ञान ने अज्ञान में ही
कह दिया इनको तुहिन-कण,
अश्रुओं के मोतियों की
कर गया बरसात कोई ।
दे गया दिल को जवानी
स्वप्न में अज्ञात कोई ।

कह रहा है दीप दिल का
"और जलना चाहता हूँ।"
पर जले कैसे, जगत में
कर गया है घात कोई।
दे गया दिल को जवानी
स्वप्न में अज्ञात कोई।

मैं मरण को चाहता था
किंतु फिर जीने लगा,
कह गया है रूप मन से
ज़िंदगी की बात कोई।
दे गया दिल को जवानी
स्वप्न में अज्ञात कोई।

चांदनी छा जाय मन में
चांद मुसकाए गगन में,
चाहता हूँ अब न लाए
फिर अँधेरी रात कोई।
दे गया दिल को जवानी
स्वप्न में अज्ञात कोई।

गगन में घन नहीं,.....

[११]

गगन में घन नहीं, नाचा
मगन मन-मोर फिर भी तो।

चुराई रूप ने नज़रें,
छुपाया मुँह मधुर अपना।
दृगों को है दिखाई दी
कृपा की कोर फिर भी तो।
गगन में घन नहीं, नाचा
मगन मन-मोर फिर भी तो।

निराशा का दिशाओं में
अँधेरा ही अँधेरा है,
न आया रवि, मगर दिल में
हुआ है भोर फिर भी तो।
गगन में घन नहीं, नाचा
मगन मन-मोर फिर भी, तो।

जगत ने है बहुत चाहा,
'दिलों की हो नहीं चोरी।'
चुरा कर ले गया दिल को
मगर चित-चोर फिर भी तो।
गगन में घन नहीं नाचा
मगन मन-मोर फिर भी तो।

बहुत चाहा कि मैं दिल की
कहानी को रखूँ दिल में,
करूँ क्या प्रीत का जग में
हुआ है शोर फिर भी तो।
गगन में घन नहीं, नाचा
मगन मन-मोर फिर भी तो।

मौत को भी.....

[१२]

मौत को भी भूल कर मैं
गीत गाना चाहता हूं ।

युग हुए मुझसे हृदय-धन
रूठ बैठे हैं कहीं, पर
बीन की झंकार से
उनको मनाना चाहता हूं ।
मौत को भी भूल कर मैं
गीत गाना चाहता हूँ ।

रूप-दर्शन

ज्ञान कहता, "रूप के
गुण गान से क्या लाभ, पगले ?
गीत नीरस ज्ञान को मैं
कब सुनाना चाहता हूँ !
मौत को भी भूल कर मैं
गीत गाना चाहता हूँ ।

लोचनों के अश्रुओं में
गीत आते हैं उमड़ कर,
जग उन्हें क्यों देखता
जब मैं छुपाना चाहता हूँ ।
मौत को भी भूल कर मैं
गीत गाना चाहता हूँ ।

विश्व का मन प्राप्त करने
को हृदय गाता नहीं है ।
कल्पना का विश्व नूतन
मैं बनाना चाहता हूँ ।
मौत को भी भूल कर मैं
गीत गाना चाहता हूँ ।

किस लिए मैं.....

[१३]

किस लिए मैं मौन था
इस की नहीं दूंगा सफ़ाई।

मर गए थे गीत दिल के
बात यह भी सच नहीं थी,
पर न देती थीं मुझे भी
धड़कनें दिल की सुनाई।
किस लिए मैं मौन था
इस की नहीं दूंगा सफ़ाई।

रूप-दर्शन

छू दिया किसने अचानक
दी व्यथा ने खोल पलकें,
जो हृदय में सो गई थी
आग फिर किसने जगाई ?
किस लिए मैं मौन था,
इस की नहीं दूंगा सफ़ाई।

बावलापन ज़िंदगी का
भूलने के यत्न में था,
किंतु अब परिणाम में
केवल पराजय हाथ आई।
किस लिए मैं मौन था
इस की नहीं दूंगा सफ़ाई।

याद ने झकझोर डाला,
दर्द को दे दी जवानी,
गा उठी फिर प्रीत उनकी
है नहीं जाती भुलाई ।
किस लिए मैं मौन था
इस की नहीं दूंगा सफ़ाई।

हो गया है क्या.....

[१४]

हो गया है क्या मुझे
तूफ़ान उमड़ा आ रहा है !

कौन दिल को छू गया है
स्वप्न में आकर सुरीला,
किस लिए प्रतिरोम से
छवि-गान उमड़ा आ रहा है !
हो गया है क्या मुझे
तूफ़ान उमड़ा आ रहा है !

रूप-दर्शन

मैं रसातल में पड़ा हूँ
दूर नभ की उच्चता से,
कौन ऊपर ले चला
उत्थान उमड़ा आ रहा है !
हो गया है क्या मुझे
तूफ़ान उमड़ा आ रहा है !

भूल बैठा था स्वयं को
जिंदगी की रागिनी को,
आज नस-नस में नया
अभिमान उमड़ा आ रहा है !
हो गया है क्या मुझे
तूफ़ान उमड़ा आ रहा है !

हो उठीं चंचल अचानक
आज यौवन की तरंगें,
रूप छंदों में स्वयं
उद्दाम उमड़ा आ रहा है !
हो गया है क्या मुझे
तूफ़ान उमड़ा आ रहा है !

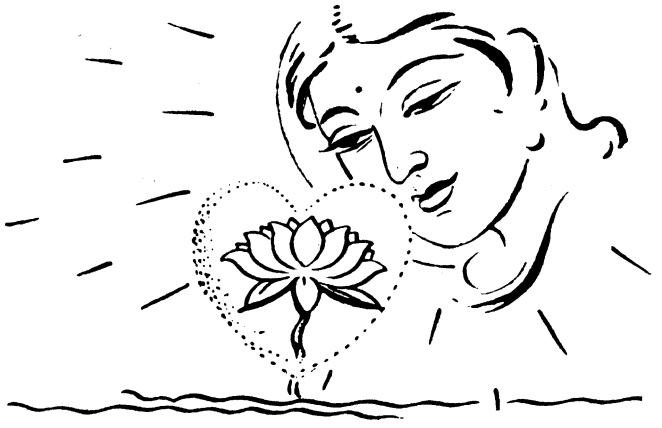

रूप-रवि की.....

[१५]

रूप-रवि की रश्मियों ने
उर-कमल कवि का खिलाया ।

है मधुर चितवन किसी की
चाँदनी-सी मुसकुराती,
चंद्रमा चमका गगन में
सिंधु में तूफ़ान आया ।
रूप-रवि की रश्मियों ने
उर-कमल कवि का खिलाया ।

रूप-दर्शन

दर्शनों में भी हृदय को
कम नहीं आनन्द मिलता,
मोर नाचा, क्यों कि घन के
रूप ने मन को लुभाया ।
रूप-रवि की रश्मियों ने
उर-कमल कवि का खिलाया ।

आ गया मधुमास तो
उल्लास भी आया स्वयं ही,
कोकिला ने बावली हो
कूक कर मधुवन गुँजाया ।
रूप-रवि की रश्मियों ने
उर-कमल कवि का खिलाया ।

खिल उठी कलिका स्वयं ही,
मुग्ध मधुकर गुनगुनाया
जब समीरण के स्वरों में
प्रेम का संदेश आया ।
रूप-रवि की रश्मियों ने
उर-कमल कवि का खिलाया ।

खे रहा हूँ.....

[१६]

खे रहा हूँ नाव प्रिय के
प्यार की पतवार से ।

मैं तुम्हारे ही सहारे
चल पड़ा तूफ़ान में भी,
लड़ रहा बल पा तुम्हीं से
इस भयानक धार से ।
खे रहा हूँ नाव प्रिय के
प्यार की पतवार से ।

रूप-दर्शन

देखता हूँ स्वर्ग सुन्दर
लोचनों में रूप के
काम मुझको कुछ नहीं है
अब किसी संसार से ।
खे रहा हूँ नाव प्रिय के
प्यार की पतवार से ।

वज्र से भी मर नहीं
सकता हठी प्रेमी कभी;
किंतु वह मर जायगा
छवि के निठुर इनकार से ।
खे रहा हूँ नाव प्रिय के
प्यार की पतवार से

जी रहा हूँ क्योंकि मुझको
रूप ने जीवन दिया,
रूप ही कर मुक्त सकता
ज़िंदगी के भार से ।
खे रहा हूँ नाव प्रिय के
प्यार की पतवार से ।

प्रीत प्राणों में.....

[१७]

प्रीत प्राणों में सुरीली
गा रही है रागिनी-सी।

खो गई थी विस्मरण के
बादलों में चेतना भी,
किंन्तु चमकी बादलों में
याद फिर सौदामिनी-सी।
प्रीत प्राणों में सुरीली
गा रही है रागिनी-सी

नींद सी आने लगी है,
स्वप्न कुछ जागे हृदय में,
जिंदगी कवि की बनी है
माधुरी - मय यामिनी-सी ।
प्रीत प्राणों में सुरीली
गा रही है रागिनी-सी ।

आज अपने आप दिलसे
हट गया ग़म का अंधेरा,
मुसकुराई छवि, हृदय में
छा गई है चाँदनी-सी ।
प्रीत प्राणों में सुरीली
गा रही है रागिनी-सी ।

कल्पना ने जिंदगी में
आज भर दी है जवानी,
कामना भी नाचती है
मस्त हो कर कामिनी-सी ।
प्रीत प्राणों में सुरीली
गा रही है रागिनी-सी ।

बज उठे हैं.....

[१८]

बज उठे हैं रूप के घुँघरू
क्षितिज के पार से ।

याद ने अँगड़ाइयाँ लीं,
दर्द दिल में उठ पड़ा,
आज प्रियतम ने पुकारा
है कहीं से प्यार से ।
बज उठे हैं रूप के घुँघरू
क्षितिज के पार से ।

रूप-दर्शन

'मत डरो तूफ़ान से भी
इस भँवर को चीर दो,
है मुझे उस पार जाना।'
कह रहा पतवार से।

बज उठे हैं रूप के घुँघरू
क्षितिज के पार से।

'प्रीत के इस बाबले को
पार तुम जाने न दो।'
मौज में आ मौत कहती
हर घड़ी मँझधार से।

बज उठे हैं रूप के घुँघरू
क्षितिज के पार से।

रह रहा हूँ विश्व में, पर
मोह दुनिया का नहीं,
रूप से जब लौ लगी तो
चल बसा संसार से।

बज उठे हैं रूप के घुँघरू
क्षितिज के पार से।

प्रात के पुलकित.....

[१६]

प्रात के पुलकित पवन ने
दे दिया जीवन नया ।

बाल-रवि की रश्मियों ने
लाल अंबर कर दिया ।
लालसाओं को मिला है
आज पागलपन नया ।
प्रात के पुलकित पवन ने
दे दिया जीवन नया ।

रूप-दर्शन

फूल आशा के खिले हैं,
कोकिलाएँ गा उठी,
आज मेरा तन नया है,
आज मेरा मन नया ।
प्रात के पुलकित पवन ने
दे दिया जीवन नया ।

दे रही मन को सुनाई
आज मधुमय बाँसुरी,
प्यार की यमुना उमड़कर
पा गई यौवन नया ।
प्रात के पुलकित पवन ने
दे दिया जीवन नया ।

हो उठे झंकृत अचानक
तार प्राणों के स्वयं,
रूप की किरणें हृदय को
दे रही स्पंदन नया ।
प्रात के पुललित पवन ने
दे दिया जीवन नया ।

खिली हैं.....

[२०]

खिली हैं कुंजकी कलियाँ
किसी ने मुसकुराया क्या ?

लगे हैं फड़फड़ाने पर
हृदय के नीड़ में पंछी,
क्षितिज के पार से इनको
किसी ने है बुलाया क्या ?
खिली हैं कुंज की कलियाँ
किसी ने मुसकुराया क्या ?

रूप-दर्शन

अँधेरी ज़िंदगी में फिर
उजाला होगया सहसा,
हृदय के दीप को आकर
किसी ने फिर जलाया क्या ?
खिली हैं कुंज की कलियाँ
किसी ने मुसकुराया क्या ?

हृदय के तार चंचल हैं,
मचलती प्रीत प्राणों में
जवानी को जगाने को
किसी ने गीत गाया क्या ?
खिली हैं कुंज की कलियाँ,
किसी ने मुसकुराया क्या ?

न जाने किस तरह मन में
नशा-सा छा गया गहरा
किसी ने स्वप्न में मुझको
सुरा-सा कुछ पिलाया क्या ?
खिली हैं कुंज की कलियाँ,
किसी ने मुसकुराया क्या ?

थे मिलन के क्षण.....

[२३]

थे मिलन के क्षण न जाने
कौन से युग में मिले !

आज तक कड़ियाँ न जिसकी
तोड़ पाया है जगत्,
प्रीत के बंधन न जाने
कौन से युग में मिले !
थे मिलन के क्षण न जाने
कौन से युग में मिले !

रूप-दर्शन

बिजलियाँ सी कौंधती हैं
याद के आकाश में,
रूप से लोचन न जाने
कौन से युग में मिले !
थे मिलन के क्षण न जाने
कौन से युग में मिले !

रूप नस-नस में तरंगित
हो गया अनुरक्ति बन,
बावले से मन न जाने
कौन से युग में मिले !
थे मिलन के क्षण न जाने
कौन से युग में मिले !

एक क्षण को भी सजन
दिल से जुदा होते नहीं,
प्राण पागल बन न जाने
कौन से युग में मिले !
थे मिलन के क्षण न जाने
कौन से युग में मिले !

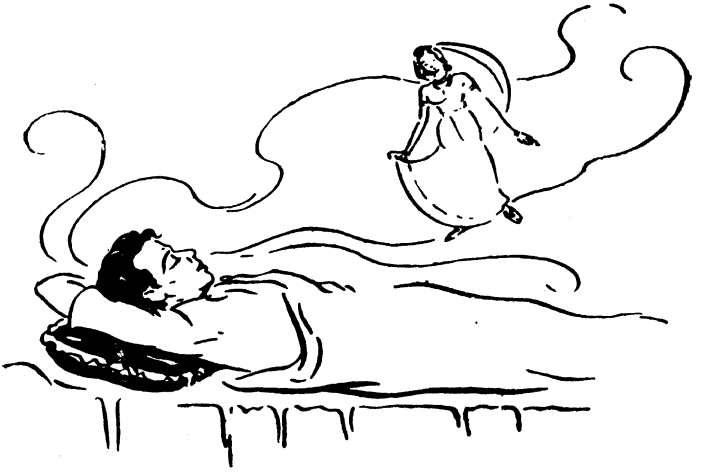

एक दिन.....

[२४]

एक दिन अनजान में ही
मिल गईं नज़रें हमारी।

बिजलियाँ दिल पर गिराकर
झुक गए चंचल पलक-दल
ज़िन्दगी भर फिर न भूली
जा सकीं नज़रें तुम्हारी।
एक दिन अनजान में ही
मिल गईं नज़रें हमारी।

रूप-दर्शन

मौन इंगित, नयन लज्जित
कुछ मुझे भरमा गए हैं,
विश्व की हर वस्तु में अब
दीखती तस्वीर प्यारी ।
एक दिन अनजान में ही
मिल गईं नज़रें हमारी ।

जिंदगी भर मैं भटकता
ही रहा, फिर मिल न पाया;
कर गई पागल हृदय को
एक क्षण की जानकारी ।
एक दिन अनजान में ही
मिल गईं नज़रें हमारी ।

मैं तुम्हारी खोज में
आकाश से ऊपर उड़ा हूँ,
प्रेरणा के पंख पाकर
बन गया हूँ व्योमचारी ।
एक दिन अनजान में ही
मिल गईं नज़रें हमारी ।

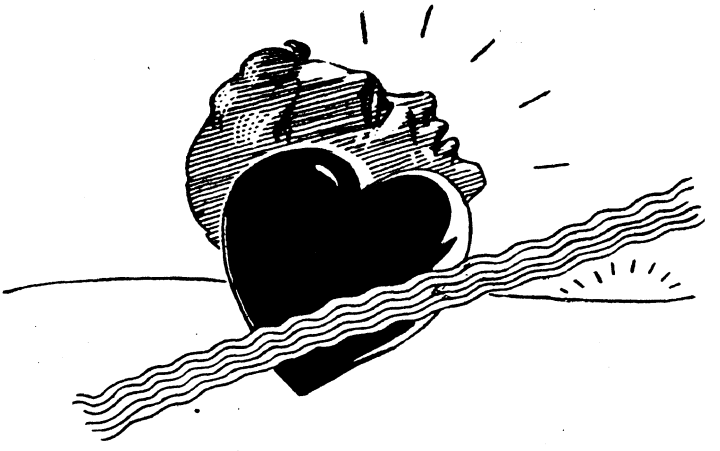

आज दिल के.....

[२१]

आज दिल के तार चंचल,
आज मेरा प्यार चंचल ।

हैं क्षितिज के पार प्रियतम,
और मैं इस पार आकुल ।
मैं हुआ इस पार चंचल,
और वह उस पार चंचल ।
आज दिल के तार चंचल,
आज मेरा प्यार चंचल ।

दो दिलों के मधु-मिलन में
जो खड़ी कर दी जगत ने,
मार्ग से अब दूर हटने
को हुई दीवार चंचल ।
आज दिल के तार चंचल,
आज मेरा प्यार चंचल ।

मुसकुराया चाँद नभ में,
फूल मुसकाए अवनि पर,
चूमता - सा, झूमता - सा,
हो उठा संसार चंचल ।
आज दिल के तार चंचल,
आज मेरा प्यार चंचल ।

कल्पना के लोक में सौन्दर्य
मैंने पा लिया है,
वेदना के सिंधु में आनन्द
का है ज्वार चंचल ।
आज दिल के तार चंचल,
आज मेरा प्यार चंचल ।

शून्यता में.....

[२२]

शून्यता में कौन मेरे
पास आते से रहे ?

स्वप्न में मैं प्राणधन को
देख मुसकाता रहा,
और वह प्रत्यक्ष आ
मुझ को जगाते से रहे ।
शून्यता में कौन मेरे
पास आते से रहे ?

रूप-दर्शन

प्रीत की किरणें हृदय को
स्पर्श - सा करती रहीं,
बन गगन के चन्द्रमा
प्रियतम बुलाते से रहे ।
शून्यता में कौन मेरे
पास आते से रहे ?

मैं भटकता - सा रहा
लेकिन न उनको पा सका,
प्रिय कहाँ छुप कर मधुर
बंसी बजाते से रहे ।
शून्यता में कौन मेरे
पास आते से रहे ?

रूप नयनों में किसी का
नाचता है हर घड़ी,
ज़िंदगी भर प्राण लेकिन
क्यों लजाते से रहे ?
शून्यता में कौन मेरे
पास आते से रहे ?

एक दिन कोई.....

[२५]

एक दिन कोई हँसी में
मंद मधुमय हँस गया।

जब घनी घन-सी लटों को
हो विमोहित छू लिया,
हो गया तन मन विमूर्छित
नाग मानो डस गया।

एक दिन कोई हँसी में
मंद मधुमय हँस गया।

रूप-दर्शन

रूप बिजली-सा चमक कर
हो गया ओझल चपल,
ज़िन्दगी भर के लिए
बंधन किसी का कस गया।
एक दिन कोई हँसी में
मंद मधुमय हँस गया।

गा उठीं कुछ मौन आँखें,
ज्वाल-सा स्वर-जाल बुन,
प्रीत-पिंजरे में विहग-सा
कवि-हृदय है फँस गया।
एक दिन कोई हँसी में
मंद मधुमय हँस गया।

किस लिए उनसे अधिक प्रिय
याद उनकी हो गई।
वेदना में भर मधुरतम
कौन इतना रस गया।
एक दिन कोई हँसी में
मंद मधुमय हँस गया।

खींच दूं तस्वीर.....

(२६)

खीच दूं तस्वीर कैसे
मैं मधुर मुसकान की ?

आ गया सौन्दर्य सम्मुख
चाँदनी सी छा गई,
हो गया जादू, खिली
कलियाँ हृदय-उद्यान की ।
खीच दूं तस्वीर कैसे
मैं मधुर मुसकान की ?

रूप-दर्शन

हो गया विस्मित चितेरा
मुग्ध निश्चल चित्र-सा,
लाज रखता किस तरह वह
तूलिका के मान की ?
खींच दूं तस्वीर कैसे
मैं मधुर मुसकान की ?

मन गगन में उड़ चला,
फिर गिर पड़ा पाताल में,
है बहुत अल्हड़ जवानी
प्रीत के तूफ़ान की ।
खींच दूं तस्वीर कैसे
मैं मधुर मुसकान की ?

बादलों की ओट में जब
रूप-शशि जाने लगा,
हो उठी तानें मुखर
अनजान जीवन-गान की ।
खींच दूं तस्वीर कैसे
मैं मधुर मुसकान की ?

वह सामने आए.....

[२७]

वह सामने आए, मगर
नादान शरमाते हुए ।

आँखें मिलीं, मिल कर झुकीं,
झुक कर उठीं, उठ कर झुकीं,
हम होश में रहते नहीं,
वह बात बतलाते हुए ।
वह सामने आए, मगर
नादान शरमाते हुए ।

रूप-दर्शन

कुछ मौन नयनों ने कहा,
कुछ मौन नयनों ने सुना,
कुछ मिल गया, कुछ खो गया,
क्या कर गए जाते हुए !
वह सामने आए, मगर
नादान शरमाते हुए ।

घूंघट उठाते रुक गई
क्यों प्रीत दुल्हन की तरह,
क्यों बोल अधरों पर अटक
कर रह गए आते हुए ।
वह सामने आए, मगर
नादान शरमाते हुए ।

वह एक क्षण का मधु-मिलन
देकर जलन है छुप गया,
जलते रहेंगे चिर-विरह के
गीत हम गाते हुए ।
वह सामने आए, मगर
नादान शरमाते हुए ।

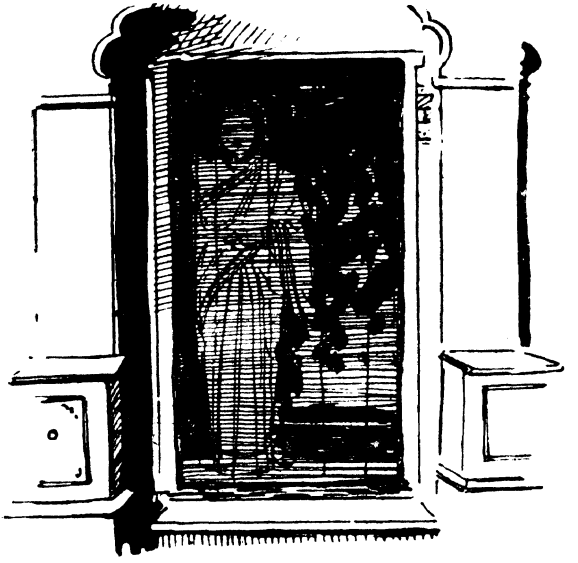

आप कुछ कुछ.....

[२८]

आप कुछ कुछ दिख रहे हैं
और कुछ कुछ छिप रहे।

रूप के ये अटपटे अक्षर
अपरिचित हैं मुझे,
आप ही बतलाइए, क्या
बात दिल में लिख रहे ?

आप कुछ कुछ दिख रहे हैं
और कुछ कुछ छिप रहे।

रूप-दर्शन

आप मेरी ज़िंदगी में
साथ आएँगे नहीं,
किस लिए बेचैन करने
के लिए हो दिख रहे ।
आप कुछ कुछ दिख रहे हैं
और कुछ कुछ छिप रहे ।

आप कहना चाहते कुछ
और कहते भी नहीं,
और मेरी भावना के
स्वप्न बन कर मिट रहे ।
आप कुछ कुछ दिख रहे हैं
और कुछ कुछ छिप रहे ।

आप ही कह डालिए,
"मत रूप की पूजा करो,
रूप-मंदिर में न कवि की
प्रार्थना गुंजित रहे ।"
आप कुछ कुछ दिख रहे हैं
और कुछ कुछ छिप रहे ।

रूप हँस कर.....

[२६]

रूप हँस कर कह रहा
बलिदान करना है करो ।

प्यास प्राणों की नहीं
बुझ पायगी कुछ भी करो ।
कांत कलियों का मधुरमधु
पान करना है करो ।
रूप हँस कर कह रहा
बलिदान करना है करो ।

रूप-दर्शन

हिल नहीं सकतीं किसी की
प्रार्थना से मूर्तियाँ,
ज़िंदगी भर रूप का
गुण-गान करना है करो ।
रूप हँस कर कह रहा
बलिदान करना है करो ।

मारना आसान लेकिन
ज़िंदगी देना कठिन,
शीघ्र ही संसार से
प्रस्थान करना है करो ।
रूप हँस कर कह रहा
बलिदान करना है करो ।

रूप के परिधान के पीछे
हृदय कैसा छुपा,
फूल है या शूल है,
अनुमान करना है करो ।
रूप हँस कर कह रहा
बलिदान करना है करो ।

देख कर मुसका गए.....

[३०]

देख कर मुसका गए प्रिय
कर गए अहसान-सा ।

कौन प्राणों के निकट आ
बांसुरी-सी है बजाता ?
गूंजता रहता हृदय में
एक मधुमय गान-सा ।
देख कर मुसका गए प्रिय
कर गए अहसान-सा ।

एक मधुमय दर्द दिल को
दे गए अनजान में,
दे दिया अभिशाप ऐसा
जो बना वरदान-सा ।
देख कर मुसका गए प्रिय
कर गए अहसान-सा ।

रख लिया दिल ने छुपा कर
उस नज़र के तीर को,
दर्द की दौलत मिली, दिल
को हुआ अभिमान-सा ।
देख कर मुसका गए प्रिय
कर गए अहसान-सा ।

प्रिय मिलेंगे या नहीं,
दिल धड़कनों से पूछता,
ध्यान प्रियतम का हृदय में
बस गया है प्राण-सा ।
देख कर मुसका गए प्रिय
कर गए अहसान-सा ।

वह मिले तो.....

[३१]

वह मिले तो कुछ नया-सा
मिल गया संसार सहसा ।

कौन हैं हम, कौन हैं वह,
रह गया परिचय अपरिचित,
रूप की झाँकी मिली तो
हो गया है प्यार सहसा ।
वह मिले तो कुछ नया-सा
मिल गया संसार सहसा ।

रूप-दर्शन

बोल मुँह से कुछ न बोले
बोल बैठे पर नयन कुछ,
गूंजने-सी लग पड़ी
दिल में मधुर झंकार सहसा ।
वह मिले तो कुछ नया-सा
मिल गया संसार सहसा ।

भर दिया मादक नज़र ने
कुछ नया मेरी नज़र में,
जीर्ण सूनी ज़िन्दगी में
वह पड़ी रस-धार सहसा ।
वह मिले तो कुछ नया-सा
मिल गया संसार सहसा ।

रूप-दर्शन ज़िंदगी है
या मरण है, कौन जाने ?
छू गई बिजली, हृदय के
बज उठे हैं तार सहसा ।
वह मिले तो कुछ नया-सा
मिल गया संसार सहसा ।

उस दिवस उनको.....

(३२)

उस दिवस उनको हुआ क्या
आ गए कवि की कुटी में !

चंद्रमा हैं वह गगन के,
है महल उनका असीमित,
किस तरह विस्तार नभ का
पा गए कवि की कुटी में।

उस दिवस उन को हुआ क्या
आ गए कवि की कुटी में !

रूप-दर्शन

चाँदनी सी छा गई सहसा,
अँधेरा मिट गया था,
पास आकर प्रिय मधुर
मुसका गए कवि की कुटी में।
उस दिवस उनको हुआ क्या
आ गए कवि की कुटी में!

क्या कहूं मैं उन क्षणों की
बात शब्दों के परे है,
मेघ-माला रूप की बरसा
गए कवि की कुटी में।
उस दिवस उनको हुआ क्या
आ गए कवि की कुटी में!

होश मुझको है नहीं, कब
आ गए, कब चल दिए वह,
प्रीत की चिनगारियाँ
सुलगा गए कवि की कुटी में।
उस दिवस उनको हुआ क्या
आ गए कवि की कुटी में।

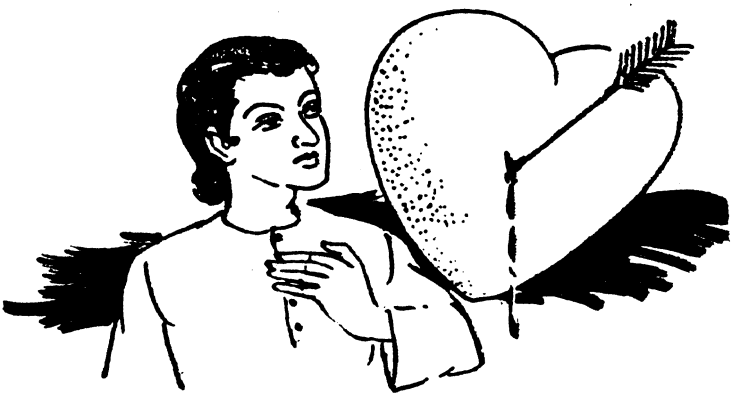

दर्द मीठा प्रेम का.....

[३३]

दर्द मीठा प्रेम का है
किसलिए इसको मिटाऊँ ?

एक दो क्षण पास आकर
वह लहर से बह गए हैं,
रोक कर पथ पाहुने को
किस लिए पाहन बनाऊँ ?
दर्द मीठा प्रेम का है
किसलिए इसको मिटाऊँ ?

रूप-दर्शन

वह अतिथि से आ गए,
पर ज़िंदगी पर छा रहे हैं,
कामना ने खोलदीं पलकें
इसे कैसे सुलाऊँ ?
दर्द मीठा प्रेम का है
किसलिए इसको मिटाऊँ ?

दो दिवस रह कर कुटी में
आग सी सुलगा गए हैं,
दीप-सा दिल जल उठा है
किसलिए इसको बुझाऊँ ?
दर्द मीठा प्रेम का है
किसलिए इसको मिटाऊँ ?

चुभ गई उनकी सरलता
तीर-सी मेरे हृदय में,
भूल जाएँ वह मुझे, पर
मैं उन्हें कैसे भुलाऊँ ?
दर्द मीठा प्रेम का है
किसलिए इसको मिटाऊँ ?

मैं कहानी कह रहा था.....

[३४]

मैं कहानी कह रहा था
खुद कहानी बन गया ।

ये नयन माने नहीं,
दर्शन किए सौन्दर्य के,
देख कर उनकी जवानी
मैं जवानी बन गया ।
मैं कहानी कह रहा था
खुद कहानी बन गया ।

रूप-दर्शन

सोचता था कवि कि छवि के
गीत गाएगा नहीं,
गा उठीं आँखें, हृदय का
मौन वाणी बन गया।
मैं कहानी कह रहा था
खुद कहानी बन गया।

सोचता था कवि कि अपना
सर झुकाएगा नहीं,
मूर्ति के आगे मगर
अभिमान पानी बन गया।
मैं कहानी कह रहा था
खुद कहानी बन गया।

माँग तो दिल ने न की,
पर दर्द दिल को मिल गया,
क्या कहूँ, नादान-सा
महमान दानी बन गया।
मैं कहानी कह रहा था
खुद कहानी बन गया।

रूप की मादक नज़र.....

[३५]

रूप की मादक नज़र में
भर उठा था प्यार-सा ।

कह उठे व्याकुल नयन,
"तुम प्राणधन मेरे बनो,"
कर लिया लज्जित नमित सी
दृष्टि ने स्वीकार-सा ।

रूप की मादक नज़र में
भर उठा था प्यार-सा ।

रूप-दर्शन

विश्व ने जिन को कहा,
बेपीर, बैरी, बेवफ़ा,
दिल उन्हीं में पा गया था
प्यार - पारावार - सा ।
रूप की मादक नज़र में
भर उठा था प्यार-सा ।

गीत उनके रूप के गाऊँ
नहीं, जग ने कहा,
किंतु छवि ने मुसकुराकर
दे दिया अधिकार-सा ।
रूप की मादक नज़र में
भर उठा था प्यार-सा ।

"फूल चरणों में चढ़ाना
छोड़ दूँ," मैंने कहा ।
कर दिया उनकी नज़र ने
तब मधुर इनकार सा ।
रूप की मादक नज़र में
भर उठा था प्यार सा ।

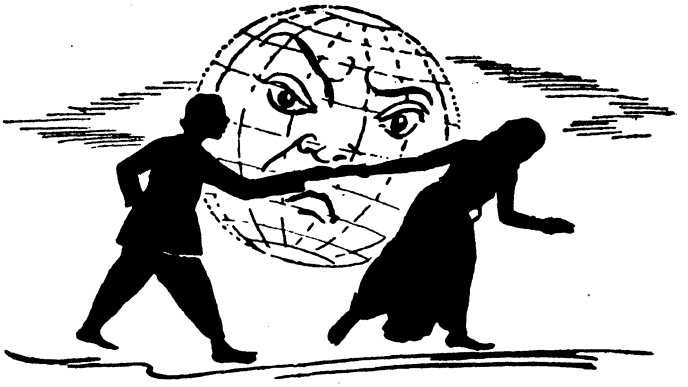

पास जो तुमने बुलाया.....

[३६]

पास जो तुमने बुलाया
दूर अब करना नहीं ।

जानता हूँ दो दिलों का
मेल प्रिय जग को नहीं,
प्रीत के पथ पर ज़माने
से, सजन, डरना नहीं ।
पास जो तुमने बुलाया
दूर अब करना नहीं ।

दी हँसी तुमने हृदय को
तो इसे मत छीनना,
वह पड़ा तो फिर रुकेगा
अश्रु का झरना नहीं ।
पास जो तुमने बुलाया
दूर अब करना नहीं ।

तुम अँधेरी रात में प्रिय,
मुसकुराए चंद्र से,
अब अँधेरा ज़िंदगी में
रूठ कर भरना नहीं ।
पास जो तुमने बुलाया
दूर अब करना नहीं ।

प्रीत करना है असंभव
तो मुझे तुम मार दो,
किंतु प्रेमी जानता है
मौत से मरना नहीं ।
पास जो तुमने बुलाया
दूर अब करना नहीं ।

निकट मैं आगया.....

[३७]

निकट मैं आगया इतना
न तुम भी दूर कर सकते।

मुझे पर्याप्त स्मृति का धन,
मुझे है कल्पना प्रियतम,
रचे जो स्वप्न प्राणों ने
न तुम भी चूर कर सकते।
निकट मैं आगया इतना
न तुम भी दूर कर सकते।

तुम्हारा चित्र आँखों में
लिया है आँक प्रेमी ने,
मिटाने को इसे प्रियतम
नहीं मजबूर कर सकते।
निकट मैं आगया इतना
न तुम भी दूर कर सकते।

मिटा डाला 'अहम्' को भी
स्वयं इस प्रीत के कारण,
विधाता को अधिक इससे
नहीं तुम क्रूर कर सकते।
निकट मैं आगया इतना
न तुम भी दूर कर सकते।

तुम्हारा नाम ले ले कर
फिरूँ मैं बावला बन कर,
तुम्हें बदनाम कर दूँ, क्या
इसे मंजूर कर सकते?
निकट मैं आगया इतना
न तुम भी दूर कर सकते।

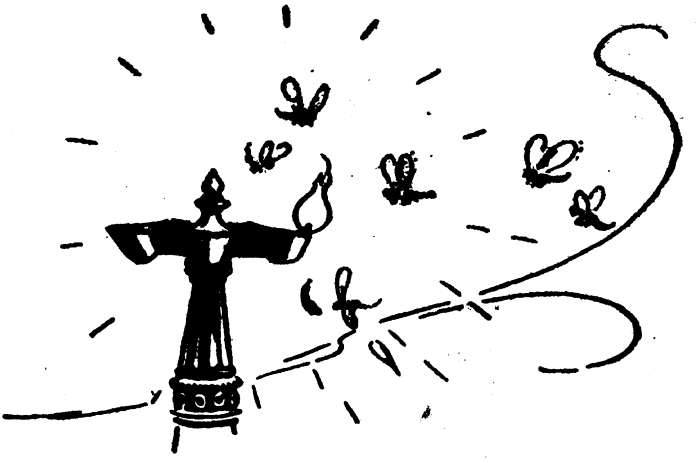

जानता हूँ रक्त में.....

[३८]

जानता हूँ रक्त में मेरे
भरी अनुरक्ति है ।

रोक लूँ कैसे दृगों को
रूप को देखें नहीं,
देख कर विचलित न हो
मन में न इतनी शक्ति है ।
जानता हूँ रक्त में मेरे
भरी अनुरक्ति है ।

सामने आजाय मदिरा
का छलकता पात्र तो
जो न चाहे पान करना
कौन ऐसा व्यक्ति है ?
जानता हूँ रक्त में मेरे
भरी अनुरक्ति है ।

फूल का मुख है मधुर तो
चूम लेता है मधुप,
यह हृदय का धर्म है,
बदनाम क्यों आसक्ति है ?
जानता हूँ रक्त में मेरे
भरी अनुरक्ति है ।

देव - मंदिर का पुजारी
देह - मंदिर में गया,
बोल बैठा तब हृदय
जो प्रीत है सो भक्ति है ।
जानता हूँ रक्त में मेरे
भरी अनुरक्ति है ।

समझ में कुछ नहीं आता.....

[३६]

समझ मे कुछ नहीं आता
कि यह तस्वीर कैसी है ?

इसे जब खोलने लगते
हृदय को और कसती है,
प्रणय की यह सुनहरी-सी
मृदुल ज़ंजीर कैसी है ?
समझ में कुछ नहीं आता
कि यह तस्वीर कैसी है ?

बनाते हैं, मिटाते हैं,
नयन जो भाग्य की रेखा,
उन्हीं से पूछता, "कवि" की
बनी तक़दीर कैसी है ?
समझ में कुछ नहीं आता
कि यह तस्वीर कैसी है ?

मिले थे एक क्षण दर्शन
तभी से दिल तड़पता है,
बहुत मीठी, बहुत प्यारी,
हृदय में पीर कैसी है ?
समझ में कुछ नहीं आता
कि यह तस्वीर कैसी है ?

कभी दिल को जिला देती,
कभी यह प्राण लेती है,
बता दो रूप-मदिरा की,
सजन, तासीर कैसी है ?
समझ में कुछ नहीं आता
कि यह तस्वीर कैसी है ?

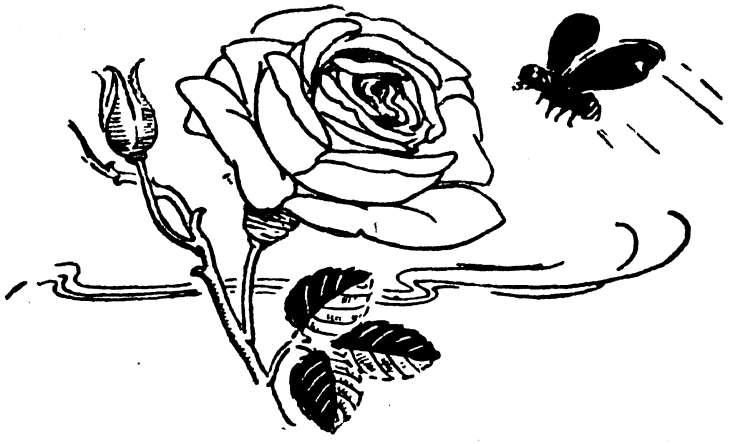

नहीं इसको रहम.....

[४०]

नहीं इसको रहम कुछ भी
जवानी तो जवानी है ।

शमा ने मुसकुराया तो
पतंगे आगए मरने,
इन्हें तो रूप की लौ में
जवानी भी जलानी है ।
नहीं इसको रहम कुछ भी
जवानी तो जवानी है ।

शहीदों के शवों को है
कुचलती जा रही दुनियाँ,
जिसे इतिहास कहते हैं
कहानी है, कहानी है।
नहीं इसको रहम कुछ भी
जवानी तो जवानी है।

हुआ क्या आँसुओं को यदि
किसी ने कर कृपा पोंछा,
जिसे यह अश्रु की धारा
बहानी है बहानी है।
नहीं इसको रहम कुछ भी
जवानी तो जवानी है।

उठाकर ले चले दिल को
कि शव को फूँक डालेंगे,
कहा तब मौत ने खुद ही
कि इस में ज़िंदगानी है।
नहीं इस को रहम कुछ भी
जवानी तो जवानी है।

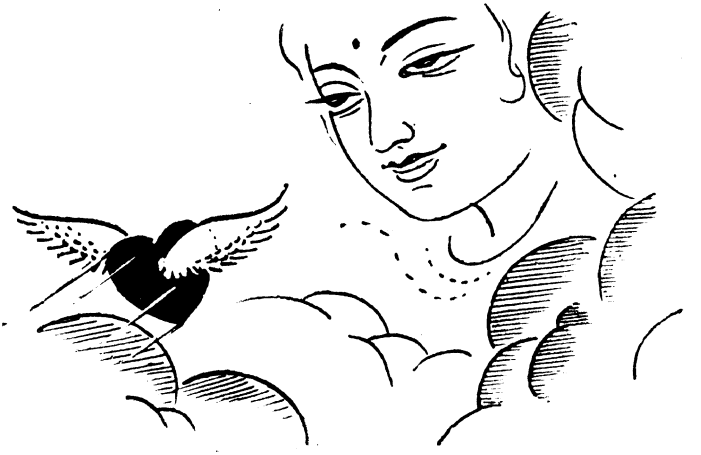

तन-सुतन कंचन.....

[४१]

तन-सुतन कंचन तुम्हारा,
मन-सुमन मधुमय तुम्हारा।

रूप के आकाश में पंछी
हृदय का उड़ रहा है,
क्या कभी करुणा-भरी
चितवन इसे देगी सहारा ?
तन-सुतन कंचन तुम्हारा,
मन-सुमन मधुमय तुम्हारा।

रूप-दर्शन

रूप - ज्वाला में जला कर
प्राण लेने में मज़ा क्या,
कर रहीं लपटें समुज्वल
किस लिए मुझको इशारा ?
तन-सुतन कंचन तुम्हारा,
मन-सुमन मधुमय तुम्हारा ।

प्यास प्राणों में जगा
मधुपात्र लेना था छुपा, तो
प्रीत की बंसी बजा कर
किसलिए मुझको पुकारा ?
तन-सुतन कंचन तुम्हारा,
मन-सुमन मधुमय तुम्हारा ।

रूप के रस-सिंधु के उस
पार जाना है असंभव,
लीन कर जीवन इसी में
पा सकेगा कवि किनारा ।
तन-सुतन कंचन तुम्हारा,
मन-सुमन मधुमय तुम्हारा ।

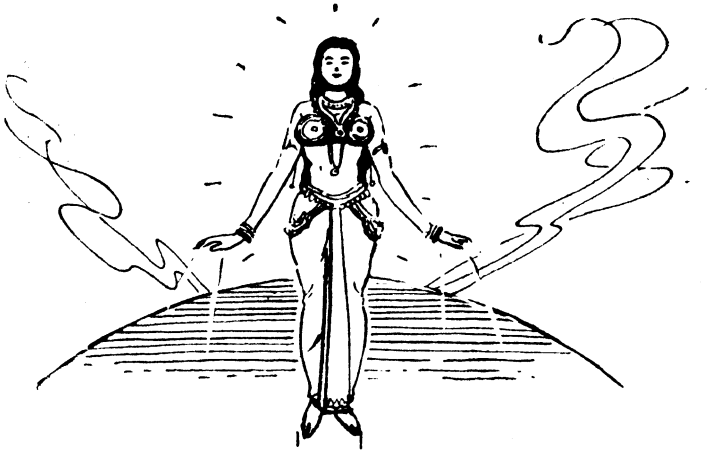

स्वर्ण-सा है तन.....

[४२]

स्वर्ण-सा है तन तुम्हारा,
स्वर्ण-सा है मन तुम्हारा ।

देखने को तो सुघर, सुंदर,
मधुर है रूप-यौवन,
किंतु कंचन की तरह मन
है कठिन, साजन, तुम्हारा ।
स्वर्ण-सा है तन तुम्हारा,
स्वर्ण-सा है मन तुम्हारा ।

रूप-दर्शन

एक दिन इस पर दया की,
एक दिन उस पर दया की,
एक का हो कर रहा है
कब चपल यौवन तुम्हारा ?
स्वर्ण-सा है तन तुम्हारा,
स्वर्ण-सा है मन तुम्हारा ।

क्या हुआ पिघला लिया जो
तप्त आहों ने किसी की,
किंतु कितनी देर पानी
रह सका जीवन तुम्हारा ?
स्वर्ण-सा है तन तुम्हारा,
स्वर्ण-सा है मन तुम्हारा ।

तुम प्रबल आवेग से हो
खींच लेते मुग्ध मन को,
बाँध लेता बंधनों में
तीव्र आकर्षण तुम्हारा ?
स्वर्ण-सा है तन तुम्हारा,
स्वर्ण-सा है मन तुम्हारा ।

कभी मुसकान अधरों पर.....

[४३]

कभी मुसकान अधरों पर,
कभी बरसात आँखों में ।

हृदय को छू गई उज्वल
किसी के रूप की किरणें,
न दिल को भी पता कैसे
खिले जलजात आँखों में ।
कभी मुसकान अधरों पर,
कभी बरसात आँखों में ।

निराशा के अँधेरे में
चमकती याद प्रियतम की,
जलाती दीप आशा का
किसी की बात आँखों में।
कभी मुसकान अधरों पर,
कमी बरसात आँखों में।

कभी काली अमावस है,
कभी पूनम जवानी की,
कभी संध्या उदासी की,
कभी मधुरात आँखों में।
कभी मुसकान अधरों पर,
कभी बरसात आँखों में।

कभी सपने बनाते हैं,
कभी सपने मिटाते हैं
न जाने क्या किया करते
सलौने गात आँखों में।
कभी मुसकान अधरों पर,
कभी बरसात आँखों में।

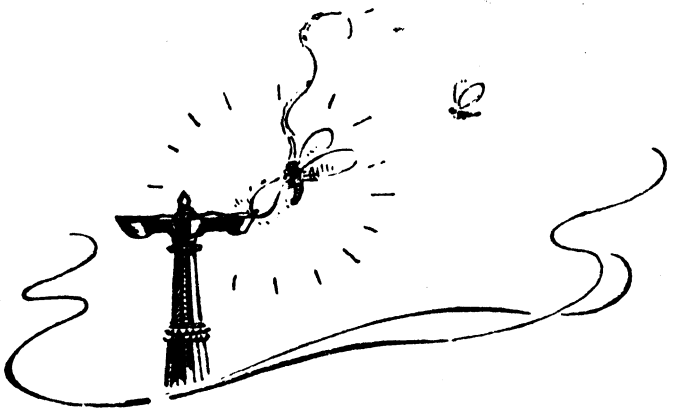

पतंगा तो नहीं डरता.....

[४४]

पतंगा तो नहीं डरता
शमा को चूम लेता है ।

बहुत बेचैन होता है
कि करले बात प्रियतम से,
बहुत कायर हृदय कवि का
निकट से घूम लेता है ।
पतंगा तो नहीं डरता
शमा को चूम लेता है ।

न छवि को यह पता चलता
कि कवि का प्रेम है उस पर,
सुनाकर गीत दुनिया को
मचा कुछ धूम लेता है।
पतंगा तो नहीं डरता
शमा को चूम लेता है

कभी छवि पूछ ही बैठी
कि किस पर गीत लिखता है,
यही कहता, "मुझे तो कुछ
नहीं मालूम देता है।"
पतंगा तो नहीं डरता है
शमा को चूम लेता है।

जगत कवि का निरा सपना
सचाई कल्पना जिसमें,
पिला मद भावनाओं को
नशे में झूम लेता है।
पतंगा तो नहीं डरता
शमा को चूम लेता है।

अमर है प्यास.....

[४५]

अमर है प्यास मधुपों की,
इन्हें मधुपान करने दो।

रखे हैं किस लिए जग ने
प्रसूनों के निकट काँटें,
अगर ये फूल चाहें तो
इन्हें मधुदान करने दो।
अमर है प्यास मधुपों की,
इन्हें मधुपान करने दो।

रूप-दर्शन

किसी कवि से नहीं कहना
कि कैसे गीत गाए वह,
किसी के रूप का उसका
मधुर गुण-गान करने दो।
अमर है प्यास मधुपों की,
इन्हें मधुपान करने दो।

शलभ ने ठान ली दिल में
कि दीपक से मिलेगा वह,
न रोको तुम, उसे इस
विश्व से प्रस्थान करने दो।
अमर है प्यास मधुपों की,
इन्हें मधुपान करने दो।

किसी से मत कहो छवि का
हृदय अतिशय कठिन, पाहन,
व्यथा से बावले दिलको
स्वयं पहचान करने दो।
अमर है प्यास मधुपों की,
इन्हें मधुपान करने दो।

ली तुम्हारी याद ने.....

[४६]

ली तुम्हारी याद ने करवट,
उठा तूफ़ान - सा ।

मैं समझता था समय ने
घाव दिल के भर दिए,
किंतु मर कर जी उठा है
दर्द फिर अरमान-सा ।
ली तुम्हारी याद ने करवट,
उठा तूफ़ान - सा ।

इस अँधेरी रात में, जब
विश्व में सुनसान है,
स्वर तुम्हारा गूँजने - सा
है लगा मधु - गान - सा ?
ली तुम्हारी याद ने करवट,
उठा तूफ़ान - सा ।

प्यार क्षण भर का तुम्हारा,
ज़िन्दगी भर की व्यथा,
किन्तु प्यारा है हृदय को
शाप भी वरदान - सा ।
ली तुम्हारी याद ने करवट,
उठा तूफ़ान - सा ।

प्रीत की पीड़ा मिटाए से
कभी मिटती नहीं,
दर्द भी बेदर्द है, प्रियतम,
तुम्हारे मान - सा ।
ली तुम्हारी याद ने करवट,
उठा तूफ़ान - सा ।

क्या हुआ अपराध.....

[४७]

क्या हुआ अपराध मुझ से
जो गिराया है नज़र से ?

प्रीत की पावन तरंगों ने
दिया मुझको निमंत्रण,
पर न मुझको बूँदभर भी
मिल सका पीयूष सर से।
क्या हुआ अपराध मुझ से
जो गिराया है नज़र से ?

नीर तो जग में बहुत है,
किंतु चातक है हठीला,
वह प्रतीक्षा कर रहा है
कब गगन से स्वाति बरसे।
क्या हुआ अपराध मुझ से
जो गिराया है नज़र से?

राह में बैठा हुआ हूँ
एक आशा के सहारे,
ज़िंदगी को प्राण देते
जायँगे प्रियतम इधर से।
क्या हुआ अपराध मुझ से
जो गिराया है नज़र से?

द्वार कर लें बंद प्रियतम,
पर न मुख मैं मोड़ सकता,
प्राणधन पहुँचायँगे
शमशान को ही लाश घर से।
क्या हुआ अपराध मुझ से
जो गिराया है नज़र से?

याद जब आई.....

[४८]

याद जब आई किसी की
दिल लगा तब गुनगुनाने।

मिल गए तो अश्रु छलके,
चल पड़े तो अश्रु बरसे।
देख आँखों में घटाएँ
लग पड़े प्रिय मुसकुराने।
याद जब आई किसी की
दिल लगा तब गुनगुनाने।

है मिलन में भी विकलता,
है विरह में भी विकलता,
तृप्ति तो मीठा ज़हर है
मार देता जो अजाने।
याद जब आई किसी की
दिल लगा तब गुनगुनाने।

भर दिए आँसू जगत में
हिम - कणों के तारकों ने,
यह रुदन है या हँसी है,
कौन जाने, कौन माने!
याद जब आई किसी की
दिल लगा तब गुनगुनाने।

राग छिड़ते हैं स्वयं ही
चोट जब लगती हृदय पर,
दर्द की जब उँगलियाँ
लगतीं हृदय को गुदगुदाने।
याद जब आई किसी की
दिल लगा तब गुनगुनाने।

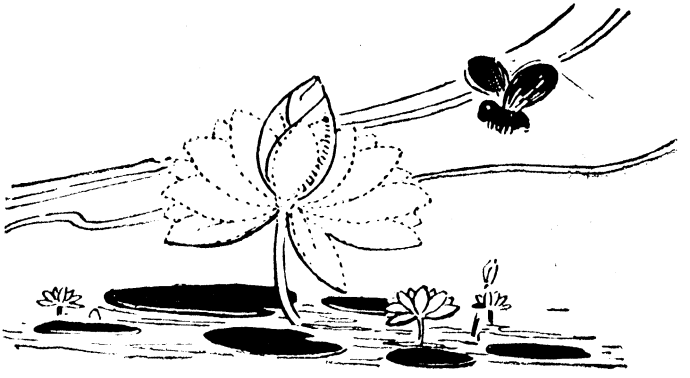

चुभा करती.....

[४६]

चुभा करती सदा दिल में
किसी की बात छोटी-सी।

मधुप का मन हुआ चंचल
उड़ा मधुपान करने को,
कली जब खिल पड़ी भोली
तुहिन-कण-स्नात छोटी-सी।
चुभा करती सदा दिल में
किसी की बात छोटी-सी।

न जाने कब चली आती,
न जाने कब चली जाती,
जला कर दिल चली जाती
मिलन की रात छोटी सी ।
चुभा करती सदा दिल में
किसी की बात छोटी-सी ।

यही सोचा कि प्रियतम जब
मिलेंगे बात कर लेंगे,
कहा कुछ भी न, नयनों से
हुई बरसात छोटी सी ।
चुभा करती सदा दिल में
किसी की बात छोटी-सी ।

किसे मालूम था दिनदिन
उलझता जायगा जीवन,
बनी है वल्लरी विस्तृत
व्यथा नवजात छोटी सी,
चुभा करती सदा दिल में
किसी की बात छोटी-सी ।

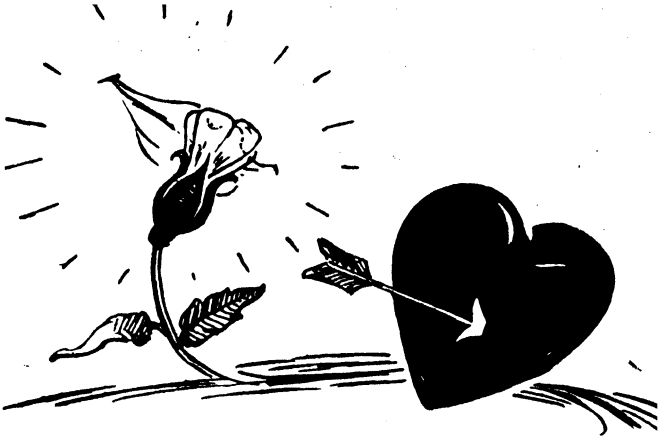

हो गया मुश्किल मुझे.....

[५०]

हो गया मुश्किल मुझे
मादक हँसी को भूल जाना।

एक कोमल सी कली
सौरभभरी मुसका पड़ी थी,
तीर सा दिल में चुभा है
उस कली का मुसकुराना।
हो गया मुश्किल मुझे
मादक हँसी को भूल जाना।

दीप की उज्वल शिखा सी
जल उठी छवि की जवानी,
चाहती है कवि-हृदय की
प्यास को ज्वाला बुझाना।
हो गया मुश्किल मुझे
मादक हँसी को भूल जाना।

बाँसुरी-सी इस हृदय के
कुंज में बजती निरंतर,
चैन दिल का लूटने को
गा रहा है रूप गाना।
हो गया मुश्किल मुझे
मादक हँसी को भूल जाना।

बिजलियाँ चमकी अचानक
दिल तड़प कर रह गया,
बन प्रलय मुझ को गया
सौन्दर्य का घूंघट उठाना।
हो गया मुश्किल मुझे
मादक हँसी को भूल जाना।

झर रहीं अविराम.....

[५१]

झर रहीं अविराम, आँखों
को अमर सावन मिला।

चाह है मन में मिलन की
पर विरह से डर नहीं,
मिल गया दिल को बहुत, यदि
वेदना का धन मिला।
झर रहीं अविराम, आँखों
को अमर सावन मिला।

मुक्त पंछी की गगन से
प्रार्थना है एक ही,
'क्यों न इसको आज तक
प्रिय-प्रीत का बंधन मिला ?'
झर रहीं अविराम, आँखों
को अमर सावन मिला।

हँस रहे नभ के सितारे
कवि-कुटी पर किस लिए,
जो अभावों में हँसे
कवि-सा किसे जीवन मिला ?
झर रहीं अविराम, आँखों
को अमर सावन मिला।

जल मरा पागल पतंगा,
बुझ गई जलकर शमा,
पर किसे कवि की तरह
संताप में गायन मिला ?
झर रहीं अविराम, आँखों
को अमर सावन मिला।

नींद आ जाए ज़रा तो.....

[५२]

नींद आ जाए ज़रा तो
स्वप्न में दर्शन मिलें ।

मौन हैं नभ के सितारे,
पूछ कर आँखें थकीं,
"देश मधुमय है कहाँ,
जिसमें हृदय के धन मिलें ।"

नींद आ जाए ज़रा तो
स्वप्न में दर्शन मिलें ।

रूप-दर्शन

प्रात की पहली किरण से
वह उतर आएँ हृदय में,
चितवनों के साथ दोनों
के तृषातुर मन मिलें।
नींद आ जाए ज़रा तो
स्वप्न में दर्शन मिलें।

आँसुओं के मोतियों ने
विश्व का कण-कण भरा,
अब पहन इन मोतियों का
हार मन-भावन मिलें।
नींद आ जाए ज़रा तो
स्वप्न में दर्शन मिलें।

खोल पलकें देख ली है
शून्यता संसार की,
बंद कर लूँ मुग्ध पलकें
तो मिलन के क्षण मिलें।
नींद आ जाए ज़रा तो
स्वप्न में दर्शन मिलें।

सामने हँसती रहे.....

[५३]

सामने हँसती रहे छवि
दिल हरा होता रहेगा।

मत डरो कवि का हृदय,
छवि-ज्वाल में जलता रहेगा,
स्वर्ण-सा उर ज्वाल में,
जल जल खरा होता रहेगा।
सामने हँसती रहे छवि
दिल हरा होता रहेगा।

रूप-दर्शन

रूप की नज़रें निरंतर
चीरती दिल को रहेंगी,
प्रात-नभ-सा उर-गगन भी
सुनहरा होता रहेगा।
सामने हँसती रहे छवि
दिल हरा होता रहेगा।

कुछ नशा-सा हो गया है,
यह न समझो चल बसा है,
वारुणी पी प्रीत की दिल
मदभरा होता रहेगा।
सामने हँसती रहे छवि
दिल हरा होता रहेगा।

देख सम्मुख रूप को, हर
सांस को यौवन मिलेगा,
भूलकर मत सोचना, कवि
अधमरा होता रहेगा।
सामने हँसती रहे छवि
दिल हरा होता रहेगा।

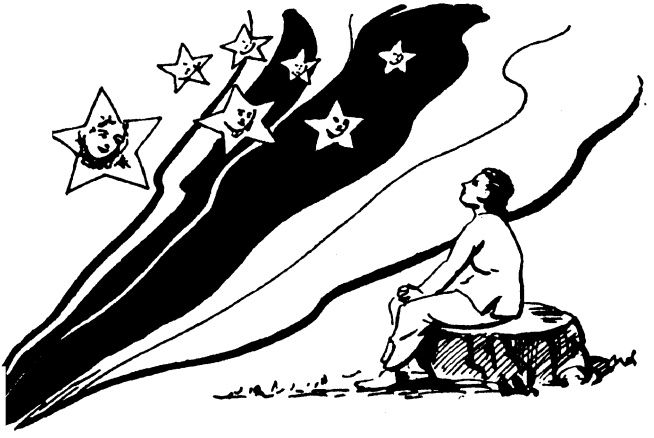

कह रही हैं तारिकाएँ.....

[५४]

कह रही हैं तारिकाएँ
गीत मधुमय कवि सुनाओ।

उड़ रहे उच्छ्वास जलते,
आग प्राणों में लगी है,
इस जलन से तुम जगत् को
ज्योति देकर मुसकुराओ।
कह रही हैं तारिकाएँ
गीत मधुमय कवि सुनाओ।

फँस गई है नाव जीवन की
विकट तूफ़ान में, तो
भावना के मोतियों को
प्राप्त करने डूब जाओ।
कह रही हैं तारिकाएँ
गीत मधुमय कवि सुनाओ।

जग ज़हर भर पात्र लाया
तो पियो, पीकर जियो कवि,
ज़िंदगी से खेल खेलो,
मृत्यु में अमरत्व पाओ।
कह रही हैं तारिकाएँ
गीत मधुमय कवि सुनाओ।

अश्रु तो हर शाख पर
जग-वाटिका की बिछ गए हैं,
बन वसंती वायु मन की
बंद कलियों को खिलाओ।
कह रही हैं तारिकाएँ
गीत मधुमय कवि सुनाओ।

आज महफ़िल ने.....

[५५]

आज महफ़िल ने बुलाया,
गीत गाना ही पड़ेगा।

वेदना अनमोल धन है
इसलिए रखता छुपा कर,
अश्रुओं के मोतियों को
अब लुटाना ही पड़ेगा।
आज महफ़िल ने बुलाया,
गीत गाना ही पड़ेगा।

एक दिन दिल पर किसी ने
लिख दिया था नाम अपना,
नाम उसका आज दुनिया को
बताना ही पड़ेगा ।
आज महफ़िल ने बुलाया,
गीत गाना ही पड़ेगा ।

मौन के आकाश में जो
गीत उड़ कर खो गए थे,
मिल गया आदेश तो
उनको बुलाना ही पड़ेगा ।
आज महफ़िल ने बुलाया,
गीत गाना ही पड़ेगा ।

गीत क्या है ज़िंदगी ही
मेघ बन आती उमड़ कर
विश्व डूबे, अश्रुओं को
पर बहाना ही पड़ेगा ।
आज महफ़िल ने बुलाया,
गीत गाना ही पड़ेगा ।

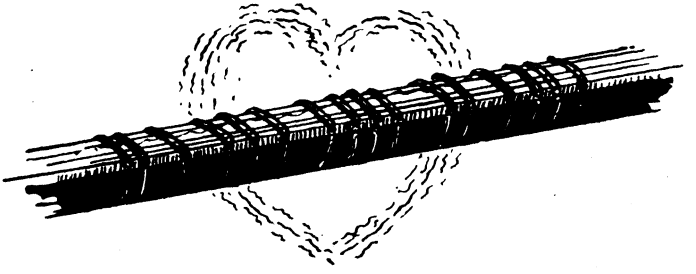

चाहता है जग कि.....

[५६]

चाहता है जग कि दिल के
तार बजते ही रहें ।

सोच पाया क्या जगत, है
कुछ हृदय की चाह भी,
पल अभावों में हृदय
झंकार करते ही रहें ।

चाहता है जग कि दिल के
तार बजते ही रहें ।

क्रूरता जग की मिटा दे
स्वप्न के संसार को,
किंतु कवि के स्वप्न तो
संसार रचते ही रहें।
चाहता है जग कि दिल के
तार बजते ही रहें।

प्यार पाने के लिए कवि का
हृदय तरसे सदा,
किंतु उस के बोल तो
रस-धार भरते ही रहें।
चाहता है जग कि दिल के
तार बजते ही रहें।

मिल गया कवि को जगत से
एक ही 'वरदान प्रिय,
अश्रु - माला से नयन
शृंगार करते ही रहें।
चाहता है जग कि दिल के
तार बजते ही रहें।

उमड़ते आ रहे.....

[५७]

उमड़ते आ रहे आँसू,
उमड़ता आ रहा दरिया।

हठीला रूप है जितना,
हठीला प्यार उतना ही,
सितम है रूप ने ढाया,
जवानी पा रहा दरिया,
उमड़ते आ रहे आँसू,
उमड़ता आ रहा दरिया।

किनारे ही किनारे चल
जगत ने खोज ही कब की ?
उमड़ बेचैन प्राणों से
किधर है जा रहा दरिया ?
उमड़ते आ रहे आँसू,
उमड़ता आ रहा दरिया।

इसे परवाह किसकी है,
चला यह राह अपनी ही,
तभी तो ठोकरें जग की
सदा से खा रहा दरिया।
उमड़ते आ रहे आँसू,
उमड़ता आ रहा दरिया।

मिलन की रात सुंदर थी,
विरह की रात भी अनुपम,
विरह के गीत लहरों में
युगों से गा रहा दरिया।
उमड़ते आ रहे आँसू,
उमड़ता आ रहा दरिया।

प्यार हो जाता.....

[५८]

प्यार हो जाता स्वयं ही
यह किया जाता नहीं।

वारि के बदले बरसता
बादलों से हो अमृत,
स्वाति के अतिरिक्त चातक
से पिया जाता नहीं।
प्यार हो जाता स्वयं ही
यह किया जाता नहीं।

रूप-दर्शन

क्या अनोखी बात प्रिय में
लग गई दिल को भली,
दिल नज़र होता रहा है,
यह दिया जाता नहीं ।
प्यार हो जाता स्वयं ही
यह किया जाता नहीं ।

कह दिया संसार ने तो,
"प्यार करना पाप है ।"
प्यार से हो शून्य जीवन
से जिया जाता नहीं ।
प्यार हो जाता स्वयं ही
यह किया जाता नहीं ।

किस तरह मैं रूप से
संबंध अपना तोड़ लूं,
हो गया जब दिल किसी का
तो लिया जाता नहीं ।
प्यार हो जाता स्वयं ही
यह किया जाता नहीं ।

प्रीत के अक्षर नहीं.....

[५६]

प्रीत के अक्षर नहीं
मिटते मिटाए से कभी ।

काल नभ की दीप-माला
को बुझा देगा कभी,
पर जलन दिल की नहीं
बुझती बुझाए से कभी ।

प्रीत के अक्षर नहीं
मिटते मिटाए से कभी ।

प्रीत का यह धर्म है
वह कर्म करता है स्वयं,
रूप से मिलती नहीं
नज़रें मिलाए से कभी।
प्रीत के अक्षर नहीं
मिटते मिटाए से कभी।

है सरल मुख देख लेना,
पर कठिन दिल देखना,
रूप का घूंघट नहीं
उठता उठाए से कभी।
प्रीत के अक्षर नहीं
मिटते मिटाए से कभी।

जब हुई इच्छा हृदय में
आ बसी चुपचाप ही,
प्रीत प्राणों में नहीं
आती बुलाए से कभी।
प्रीत के अक्षर नहीं
मिटते मिटाए से कभी।

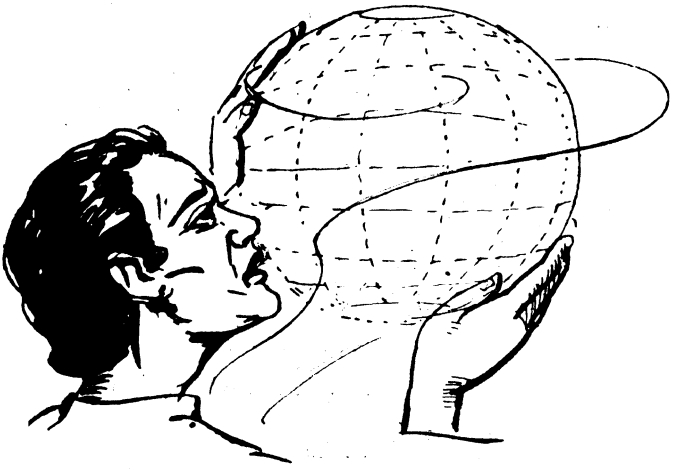

विश्व में मैं खोजता हूँ .....

[६०]

विश्व में मैं खोजता हूँ,
किंतु प्रिय दिल में बसे हैं।

बन गए अंगार - माला
फूल मेरी वाटिका के,
बाल-रवि से उर-गगन में
हो उदय छविमय हँसे हैं।

विश्व में मैं खोजता हूँ,
किंतु प्रिय दिल में बसे हैं।

चाँद-तारों के हृदय को
मैं विकल करने लगा हूँ,
दग्ध वे होने लगे जलते
हुए उच्छ्वास से हैं।
विश्व में मैं खोजता हूँ,
किंतु प्रिय दिल में बसे हैं।

तार सारे तोड़ डाले,
हो गई निस्पंद वीणा,
वेदना ने तार इतनी
ज़ोर से दिल के कसे हैं।
विश्व में मैं खोजता हूँ,
किंतु प्रिय दिल में बसे हैं।

प्यार मुझ पर है सजन का
यह नहीं मालूम अब तक,
स्वप्न में तो पास हैं,
प्रत्यक्ष में वह दूर से हैं।
विश्व में मैं खोजता हूँ,
किंतु प्रिय दिल में बसे हैं।

मौन मूर्छित मन.....

[६१]

मौन मूर्छित मन हुआ,
जग मान बैठा मर गया।

वेदना के गीत गाकर,
पर्वतों को भी रुला,
साधना में हो सफल दिल
काम अपना कर गया।
मौन मूर्छित मन हुआ,
जग मान बैठा मर गया।

आँसुओं का सिंधु भरकर
भी नयन रीते नहीं,
विश्व समझा ताप सहकर
सूख रस - निर्झर गया।
मौन मूर्छित मन हुआ,
जग मान बैठा मर गया।

खींच कर तलवार दुनिया ने
कहा, "मत प्रीत कर।"
ध्यान में तल्लीन मन,
जग मान बैठा डर गया।
मौन मूर्छित मन हुआ,
जग मान बैठा मर गया।

गीत फिर मुखरित हुए तो
विश्व क्यों होता चकित,
रूप मेरी ज़िंदगी को ही
बना कर स्वर गया।
मौन मूर्छित मन हुआ,
जग मान बैठा मर गया।

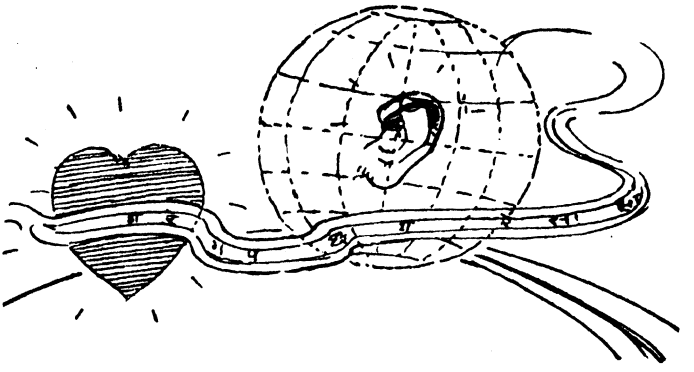

गीत जो दिल गा रहा था.....

(६२)

गीत जो दिल गा रहा था
विश्व गुप चुप सुन रहा था।

वाटिका में देख कर
सौंदर्य फूलों का मनोरम,
मन मधुप-सा मस्त होकर
रूप के गा गुण रहा था।
गीत जो दिल गा रहा था
विश्व गुप चुप सुन रहा था।

प्रीत जग ने दी न मुझको
इसलिए जग से अलग हो
कल्पना के लोक में ही
स्वप्न सुंदर बुन रहा था।
गीत जो दिल गा रहा था
विश्व गुप चुप सुन रहा था।

कंटकों ने इस हृदय को
छेद कर छलनी किया था,
विश्व समझा झूमता है
और कवि सर धुन रहा था।
गीत जो दिल गा रहा था,
विश्व गुप चुप सुन रहा था।

क्या मिला कवि के स्वरों में
कह रहा जग, 'और गाओ।'
बज व्यथा के पायलों का
स्वर मधुर रुनझुन रहा था।
गीत जो दिल गा रहा था
विश्व गुप चुप सुन रहा था।

नशे में हैं नयन.....

[६३]

नशे में हैं नयन कवि के
कि रँग इनका गुलाबी है।

पिलाया क्या इसे छवि ने
कि आँखें लाल रहती हैं,
हुआ बदनाम दुनिया में
कि शायर तो शराबी है।
नशे में हैं नयन कवि के
कि रँग इनका गुलाबी है।

सजाकर स्वप्न में महफ़िल
नचाता अप्सराओं को,
अभावों के धनी कवि का
हृदय करता नवाबी है।
नशे में हैं नयन कवि के
कि रँग इनका गुलाबी है।

सितारों को पकड़ लूंगा,
निशाकर को बुला लूंगा,
न जाने क्या बहकता है
मगज़ में कुछ खराबी है।
नशे में हैं नयन कवि के
कि रँग इनका गुलाबी है।

हुई है प्रीत जिस दिन से
न दुनिया यह सुहाती है,
नहीं है होश, प्राणों पर
किसी का रूप हावी है।
नशे में हैं नयन कवि के
कि रँग इनका गुलाबी है।

वेदना की निधि मिली.....

[६४]

वेदना की निधि मिली जो
ज़िंदगी की जान होगी।

इस अँधेरी रात में कवि
दीप बन जलता रहेगा,
दग्ध अधरों पर निरंतर
खेलती मुसकान होगी।
वेदना की निधि मिली जो
ज़िंदगी की जान होगी।

रूप-दर्शन

रूप ने करके रहम जब
स्नेह ढाला था नज़र से,
जान बैठा था हृदय, अब
आग से पहचान होगी।
वेदना की निधि मिली जो
ज़िंदगी की जान होगी।

ज़िंदगी की आस ही क्या
साँस की कब डोर टूटे,
इसलिए सोचा किसी के
रूप पर कुरबान होगी।
वेदना की निधि मिली जो
ज़िंदगी की जान होगी।

कवि मरेगा, किंतु उसकी
प्रीत तो ज़िंदा रहेगी,
गीत बन कर जो युगों तक
विश्व का अभिमान होगी।
वेदना की निधि मिली जो
ज़िंदगी की जान होगी।

इकरार से ज़्यादा मज़ा.....

[६५]

इकरार से ज़्यादा मज़ा
दिल को मिला इनकार में।

जब रूठ सब साथी गए
तब दर्द ने दी सान्त्वना,
है दर्द जैसा दोस्त कोई
भी नहीं संसार में।

इकरार से ज़्यादा मज़ा
दिल को मिला इनकार में।

भरकर नज़र सुखकी न क्षणभर
ले सका झाँकी कभी,
पर मिल गई दुनिया नई
दिल को दुखों के प्यार में।
इकरार से ज़्यादा मज़ा
दिलको मिला इनकार में।

बिजली हँसी की एक क्षण,
पर अश्रु-वर्षण सर्वदा,
है ज़िंदगी अविराम बहती
अश्रुओं की धार में।
इकरार से ज़्यादा मज़ा
दिल को मिला इनकार में।

है मौन वीणा हो उठी
झंकृत अचानक चोट खा,
दे दिल दुआ, वे दे गए हैं
वेदना उपहार में।
इकरार से ज़्यादा मज़ा
दिल को मिला इनकार में।

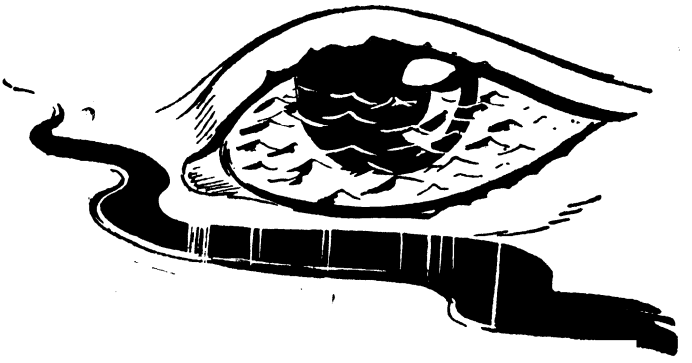

बह चली यह रक्त-धारा.....

[६६]

बह चली यह रक्त-धारा
रूप ने जब तीर मारा।

सिंधु आँखों ने भरा है,
आ गया पानी कहाँ से ?
है चकित संसार 'इसका
क्यों नहीं मिलता किनारा ?'
बह चली यह रक्त-धारा
रूप ने जब तीर मारा।

रूप का शर अब हृदय से
किस लिए कवि दूर कर दे ?
दी किसी ने यह निशानी
इसलिए है तीर प्यारा ।
बह चली यह रक्त-धारा
रूप ने जब तीर मारा ।

तीर ने जो कर दिए हैं
रंध्र, उनसे छंद निकले,
सप्त रंध्रों के स्वरों से
रूप को कवि ने पुकारा ।
बह चली यह रक्त-धारा
रूप ने जब तीर मारा ।

दर्द प्राणों में न हो तो
बाँसुरी रुक जाय मन की,
मुग्ध दर्दीले स्वरों पर
हो गया संसार सारा ।
बह चली यह रक्त-धारा
रूप ने जब तीर मारा ।

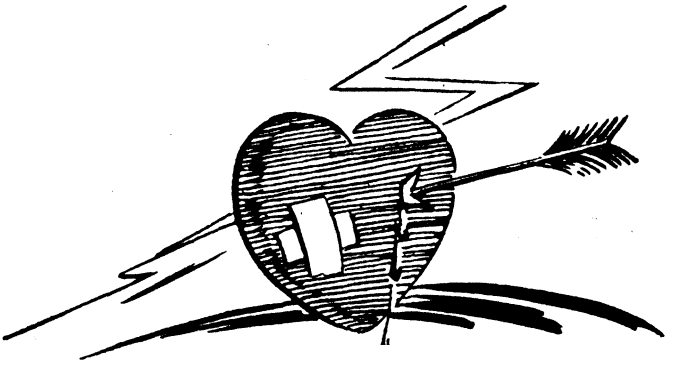

प्रीत करने के नशे ने.....

[६७]

प्रीत करने के नशे ने
पी लिया है ज़िंदगी को।

चाह की थी चाँदनी की
पर गिरी बिजली गगन से,
माँग क्या थी और छवि ने
क्या दिया है ज़िंदगी को।
प्रीत करने के नशे ने
पी लिया है ज़िंदगी को।

रूप-दर्शन

ज़िंदगी की कामना थी
पंछियों की भाँति चहके,
किंतु साँसों ने सिसकते
ही जिया है ज़िंदगी को ।
त करने के नशे ने
लिया है ज़िंदगी को ।

घाव भरने भी न पाते
तीर कोई मार देता,
धैर्य की लेकर सुई
दिल ने सिया है ज़िंदगी को ।
प्रीत करने के नशे ने,
पी लिया है ज़िंदगी को ।

रूप को देखा न था तो
विश्व भर में था अँधेरा,
रूप-दर्शन ने दिया क्यों
चौंधिया है ज़िंदगी को ।
प्रीत करने के नशे ने,
पी लिया है ज़िंदगी को ।

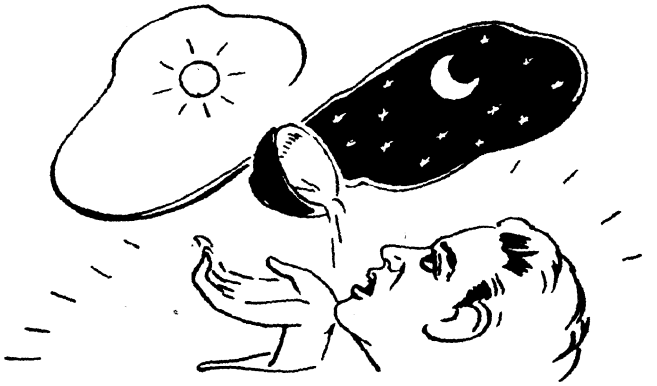

मौत सी.....

[६८]

मौत सी इस ज़िंदगी को,
मैं युगों से जी रहा हूँ ।

क्या करूँ मैं जब बुलाए
से न निर्मम मौत आती,
रात-दिन की प्यालियों में
घूंट विष के पी रहा हूँ ।
मौत सी इस ज़िंदगी को,
मैं युगों से जी रहा हूँ ।

घाव अनगिनती किए हैं
बावले दिल पर जगत ने,
दूसरा दिल मिल नहीं
सकता, इसी को सी रहा हूँ।
मौत सी इस ज़िंदगी को
मैं युगों से जी रहा हूँ।

स्नेह तुमसे मिल न पाया
तो रगों का ख़ून पीकर,
दीप-सा मैं आँधियों के
बीच जलता ही रहा हूँ।
मौत सी इस ज़िंदगी को,
मैं युगों से जी रहा हूँ।

मैं जलूं युगयुग विरह की
आग में है न्याय छवि का,
क्यों करूँ इनकार जब मैं
प्रीत का दोषी रहा हूँ।
मौत सी इस ज़िंदगी को,
मैं युगों से जी रहा हूँ।

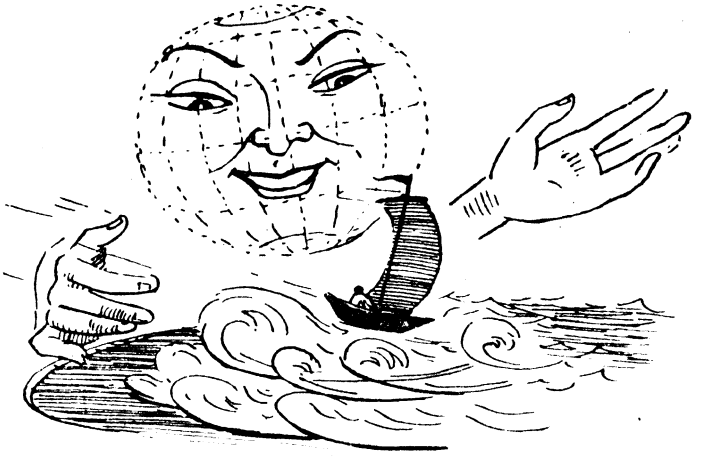

आज पहली बार.....

[६६]

आज पहली बार जग से
मान ली है हार मैंने।

मैं किनारे के निकट तक
आ गया, लेकिन अचानक
ज्वार ने फेंका भँवर में,
फेंक दी पतवार मैंने ।
आज पहली बार जग से
मान ली है हार मैंने।

चाहता था मैं कि वीणा
से खुशी की तान गूँजे,
किंतु हा हा कार गूंजा—
तोड़ डाले तार मने ।
आज पहली बार जग से
मान ली है हार मैंने।

स्वप्न आशा के उजाले ने
दिखाए, पर विफल हो,
कर दिया तम-सिंधु में लय
स्वप्न का संसार मैंने ।
आज पहली बार जग से
मान ली है हार मैंने।

लेख भावी के मिटाने
का किया है यत्न कितना,
पर नहीं ये मिट सकेंगे
कर लिया स्वीकार मैंने।
आज पहली बार जग से
मान ली है हार मैंने।

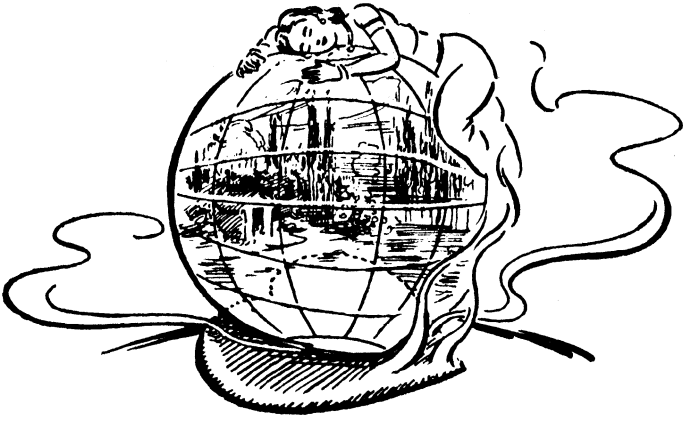

ज़िन्दगी के आवरण में.....

[७०]

ज़िन्दगी के आवरण में
मैं मरण को पा गया हूँ।

एक कवि मेरे हृदय में
देखता दिन-रात सपने,
प्रीत ने पागल किया,
पर प्रीत मैं करता गया हूँ।
ज़िन्दगी के आवरण में
मैं मरण को पा गया हूँ।

रूप-दर्शन

एक छवि मुझको निरंतर
खींचती है पास अपने,
रूप ने मुझको जलाया
और मैं जलता गया हूँ।
ज़िन्दगी के आवरण में
मैं मरण को पा गया हूँ।

चाहता था, चाहता हूँ,
मैं हृदय में स्थान पाऊँ,
आप अपने लोचनों में
मेघ बन कर छा गया हूँ।
ज़िन्दगी के आवरण में
मैं मरण को पा गया हूँ।

विश्व की इस वाटिका में
फूल-सा दिल मिल न पाया,
कंटकों को, संकटों को,
क्या करूँ, मैं भा गया हूँ।
ज़िन्दगी के आवरण में
मैं मरण को पा गया हूँ।

हमें दी ज़िंदगी जिसने.....

[७१]

हमें दी ज़िंदगी जिसने
उसी ने मौत दे डाली ।

दिखाई दी मधुर मादक
किसी की मूर्ति मुसकाती,
पता क्या था कि पी लेगी
हृदय को रूप की प्याली ।
हमें दी ज़िंदगी जिसने
उसीने मौत दे डाली ।

मिलन मिल कर बिछुड़ जाता
घड़ी भर दिल्लगी-सी कर।
युगों तक, पर, कसकती है
किसी की याद मतवाली।
हमें दी ज़िंदगी जिसने
उसीने मौत दे डाली।

निराशा की अमावस में
चमकते याद के तारे,
हृदय में तेज भाले से
चुभाती है निशा काली।
हमें दी ज़िंदगी जिसने
उसी ने मौत दे डाली।

रुलाने के लिए निशि है,
जलाने के लिए दिन है,
विकल आँखें बरस कर भी
न हो पाईं कभी ख़ाली।
हमें दी ज़िंदगी जिसने
उसीने मौत दे डाली।

है चिता मैंने सजाली.....

[७२]

है चिता मैंने सजाली
आप ही अपने लिए ।

विश्व आया था मुझे
वरदान देने के लिए,
ले लिया है किंतु मैंने
शाप ही अपने लिए ।
है चिता मैंने सजाली
आप ही अपने लिए ।

चन्द्र ने चाहा कि मुझ पर
वह सुधा-रस ढाल दे,
किंतु मैंने ले लिया
जग-ताप ही अपने लिए।
है चिता मैंने सजाली
आप ही अपने लिए।

पुण्य के पथ पर चला जग
और कवि को भी बुलाया,
किंतु कवि ने चुन लिया है
पाप ही अपने लिए।
है चिता मैंने सजाली
आप ही अपने लिए।

देवता का नाम लेकर
संत कितने पुज गए,
चुन चुका प्रिय-नाम का
कवि जाप ही अपने लिए।
है चिता मैंने सजाली
आप ही अपने लिए।

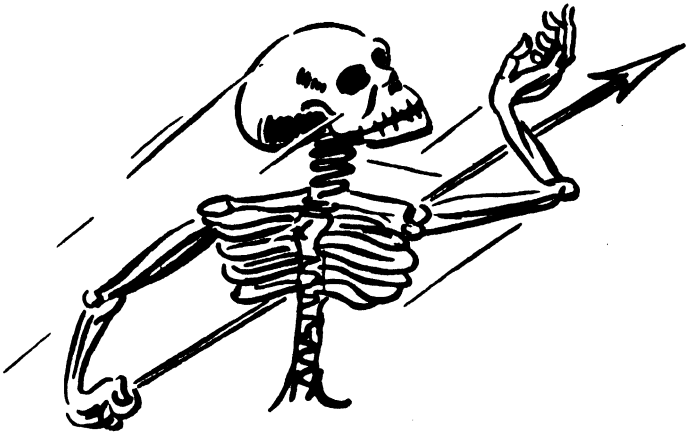

मौत आकर द्वार से.....

[७३]

मौत आकर द्वार से
वापिस चली, वापिस चली।

ज़िंदगी के बोझ को
लेकर चली संसार से,
नाव क्यों मँझधार से
वापिस चली, वापिस चली,
मौत आकर द्वार से
वापिस चली, वापिस चली।

जान देने को गई थी
भावना बलि - भूमि पर,
जुल्म के मनुहार से
वापिस चली, वापिस चली।
मौत आकर द्वार से
वापिस चली, वापिस चली।

देख कर दिल को तड़पता
मौत को आता मज़ा,
घाव कर तलवार से
वापिस चली, वापिस चली।
मौत आकर द्वार से
वापिस चली, वापिस चली।

नाश करने के लिए
हिंसा बढ़ी भूकंप सी,
मोड़ मुँह संहार से
वापिस चली, वापिस चली।
मौत आकर द्वार से
वापिस चली, वापिस चली।

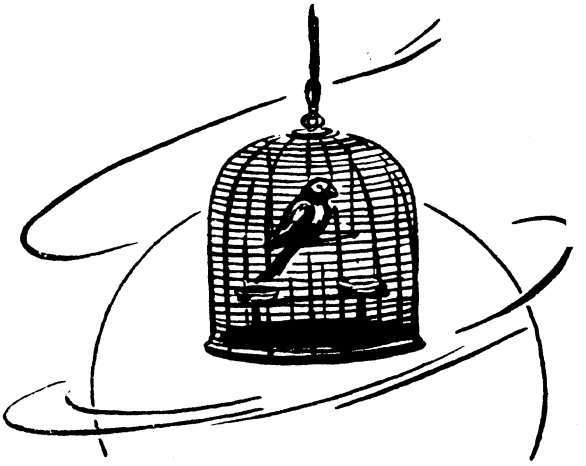

है नहीं आसान.....

[७४]

है नहीं आसान जीवन-
भार से इनकार करना।

ज़िंदगी के पींजरे में
बंद है मज़बूर पंछी,
है नहीं आसान, बंधन-
मुक्त हो नभ में विचरना।
है नहीं आसान जीवन-
भार से इनकार करना।

ज़िंदगी को मौत से
बदतर बनाता है जगत ही,
और जग ही रोकता यदि
चाहता इंसान मरना।
है नहीं आसान जीवन-
भार से इनकार करना।

दुःख की ज्वाला जलाती
ज़िंदगी की वाटिका को,
तो उसे सरसब्ज़ करता
आँसुओं का अमर झरना।
है नहीं आसान जीवन-
भार से इनकार करना।

इस निराशा की अमा में
मन खुशी के गीत गाले,
मौत में भी ज़िंदगी है,
मौत से बेकार डरना।
है नहीं आसान जीवन-
भार से इनकार करना।

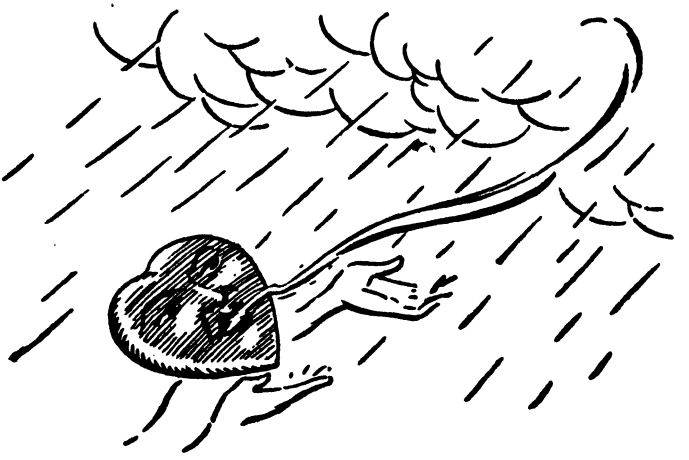

जो बुझाए से न बुझती.....

[७५]

जो बुझाए से न बुझती
प्यास उसका नाम है।

मौत तो आती रही, पर
हम न मर पाए कभी,
साँस को जो आसरा दे
आस उसका नाम है।
जो बुझाए से न बुझती
प्यास उसका नाम है।

है अमृत झरता जहाँ से
वज्र बरसाता वही,
हैं निहित सुख-दुख जहाँ
आकाश उसका नाम है।
जो बुझाए से न बुझती
प्यास उसका नाम है।

मेघ बन कर उड़ पड़े जो,
झर पड़े फिर नीर बन,
जो न रोके रुक सके
उच्छ्वास उसका नाम है।
जो बुझाए से न बुझती
प्यास उसका नाम है।

ज़िंदगी को मौत कर दे,
मौत को आने न दे,
मीत कहती है हृदय से
त्रास उसका नाम है।
जो बुझाए से न बुझती
प्यास उसका नाम है।

किसी को प्रेम दे पाते.....

[७६]

किसी को प्रेम दे पाते,
किसी का प्रेम पा जाते।

किया है यत्न कंचन ने
कि प्राणों पर करे शासन,
चमक में रस कहाँ, जिससे
तृषा मन की बुझा पाते।
किसी को प्रेम दे पाते,
किसी का प्रेम पा जाते।

कला के हो विवश नूपुर
विभव के सामने बजते,
कला के पारखी को कब
कला के स्वर सुना पाते ?
किसी को प्रेम दे पाते,
किसी का प्रेम पा जाते ।

उधर भी हों अधर प्यासे,
इधर भी हों अधर प्यासे,
उन्हें हम मधु पिला पाते,
हमें वह मधु पिला पाते ।
किसी को प्रेम दे पाते,
किसी का प्रेम पा जाते ।

उमंगों से भरी सरिता,
मिली ज्यों सिंधु में जाकर,
किसी व्यक्तित्व में हम भी
विकल जीवन मिला पाते ।
किसी को प्रेम दे पाते,
किसी का प्रेम पा जाते ।

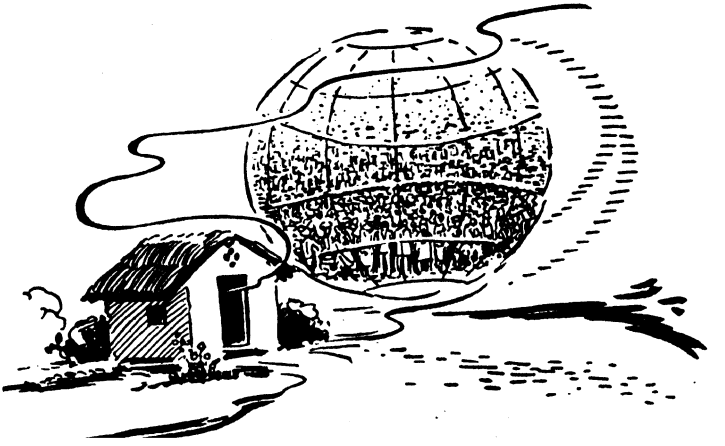

भीड़ दुनिया में बहुत.....

[७७]

भीड़ दुनिया में बहुत, पर
भीड़ में है कौन मेरा ?

दीप जगमग हैं गगन में,
दीप जगमग हैं भवन में,
किंतु मेरी शून्य कुटिया
में निराशा का अँधेरा।
भीड़ दुनिया में बहुत, पर
भीड़ में है कौन मेरा ?

रूप-दर्शन

युगयुगों से चल रही है
रात-दिन की गति जगत में,
पर न मेरी ज़िंदगी की
रात का आया सबेरा।
भीड़ दुनिया में बहुत, पर
भीड़ में है कौन मेरा ?

सोचता था दो घड़ी की
वेदना व्याकुल विरह की,
पर अतिथि-सा दर्द आया,
कर लिया दिल में बसेरा।
भीड़ दुनिया में बहुत, पर
भीड़ में है कौन मेरा ?

रूप ने घूंघट उठाकर
देख, नज़रें फेर ली हैं,
चल दिया दिल में मनोरम
चित्र चित्रित कर चितेरा।
भीड़ दुनिया में बहुत, पर
भीड़ में है कौन मेरा ?

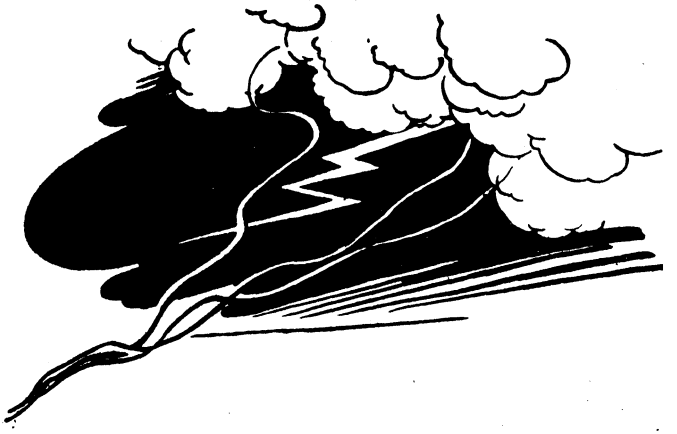

रूप की मदिरा न पी थी.....

[७८]

रूप की मदिरा न पी थी,
था अपरिचित प्यास से।

चल दिया मेरे हृदय की
वासनाओं को खिला;
एक काँटा-सा खटकता,
क्या मिला मधुमास से ?
रूप की मदिरा न पी थी,
था अपरिचित प्यास से।

रूप-दर्शन

छा गई नभ में घटाएँ,
हैं चमकती बिजलियाँ,
कर लिया काला गगन
मैंने स्वयं उच्छ्वास से।
रूप की मदिरा न पी थी,
था अपरिचित प्यास से।

प्यार ठुकराया जगत का
पर न प्रियतम भी मिले,
भग्न आशा को मिला
कुछ भी नहीं विश्वास से।
रूप की मदिरा न पी थी,
था अपरिचित प्यास से।

क्या करूं काली घटाएँ
तो हटेंगी ही नहीं,
बज्र प्रलयंकर गिरा दो
कह रहा आकाश से।
रूप की मदिरा न पी थी,
था अपरिचित प्यास से।

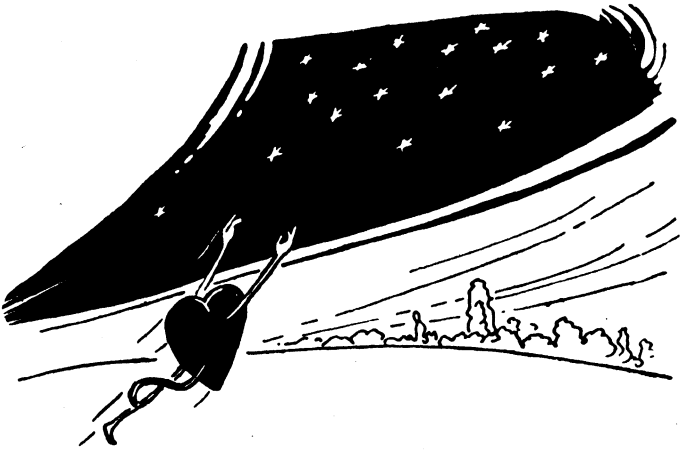

हैं बहुत सुन्दर सितारे.....

[७६]

हैं बहुत सुंदर सितारे,
किंतु कितनी दूर हैं ?

रूप की झाँकी मिली,
दिल प्यार करने को बढ़ा,
हम हृदय के बावलेपन
से बहुत मजबूर हैं ।
हैं बहुत सुंदर सितारे,
किंतु कितनी दूर हैं ?

रूप-दर्शन

मस्त नज़रों ने किसी की
भूल से देखा इधर,
घाव दिल में हो गए,
बढ़कर बने नासूर हैं।
हैं बहुत सुंदर सितारे,
किंतु कितनी दूर हैं ?

भूमि पर वह आ न सकते,
पंख पा सकते न हम,
स्वप्न तो देखे बहुत, पर
हो गए सब चूर हैं।
हैं बहुत सुंदर सितारे,
किंतु कितनी दूर हैं ?

बादलों की ओट से ही
मुसकुरा छवि झाँक ले,
तो हमें ये दर्द, तड़पन,
ग़म सभी मंज़ूर हैं।
हैं बहुत सुंदर सितारे,
किंतु कितनी दूर हैं ?

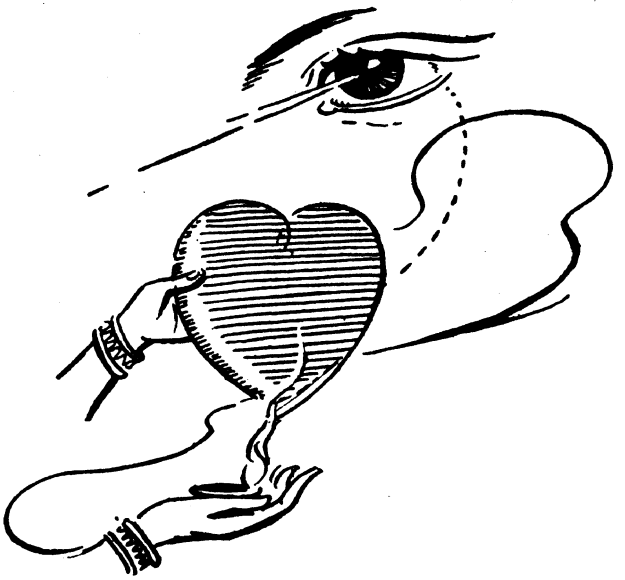

जिसे हम याद करते हैं.....

[८०]

जिसे हम याद करते हैं
हमें उसने भुलाया है।

खिलौने की तरह दिल क्यों
हमारा तोड़ डाला है,
समझ कर प्रीत को बचपन
बड़ा बचपन दिखाया है।

जिसे हम याद करते हैं
हमें उसने भुलाया है।

किसी से प्रीत पाने की
न दिल में लालसा रखना,
यहाँ है प्रेम दो दिन का,
सदा किसने निभाया है ?
जिसे हम याद करते हैं
हमें उसने भुलाया है।

जमाने ने मुहब्बत को
ख़रीदा, हाय, दौलत से,
जिसे अपना समझते हैं
वही निर्मम पराया है।
जिसे हम याद करते हैं
हमें उसने भुलाया है।

नज़र में आ बसा कोई,
नज़र से आ बसा दिल में,
जिसे घर में बसाया है,
उसी ने घर जलाया है।
जिसे हम याद करते हैं
हमें उसने भुलाया है।

दे गए हैं आग-सी.....

[८१]

दे गए हैं आग - सी जो
याद उनका भी भला हो।

बावला-सा हो उठा मैं
देख सुंदर चंद्रमा को,
दे गए दिल को अमर
उन्माद उनका भी भला हो।
दे गए हैं आग-सी जो
याद उनका भी भला हो।

फेरलीं नज़रें सजन ने
डूबता दिल जा रहा है,
दे गए हैं जो गहन
अवसाद उनका भी भला हो।
दे गए हैं आग-सी जो
याद उनका भी भला हो।

रह गया है काम उनकी
याद में आँसू बहाना,
कर गए जो ज़िंदगी
बर्बाद उनका भी भला हो।
दे गए हैं आग-सी जो
याद उनका भी भला हो।

क्यों कहूँ, निष्ठुर सजन से
कुछ नहीं पाया हृदय ने।
दर्द को जो कर गए
आबाद उनका भी भला हो।
दे गए हैं आग-सी जो
याद उनका भी भला हो।

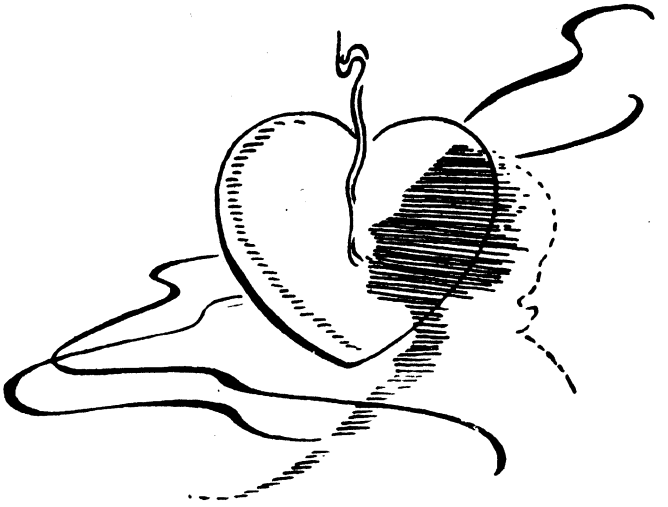

वेदना रहती सदा.....

[८२]

वेदना रहती सदा
अन्तर्निहित प्रति श्वास में।

गीत पतझड़ का सदा ही
ज़िंदगी में गूँजता,
कोकिला उल्लास की
है कूकती मधुमास में।
वेदना रहती सदा
अन्तर्निहित प्रति श्वास में।

भूमि पर ये गिर रहे,
वह उड़ रहा आकाश में,
है यही अन्तर निरन्तर
आँसुओं में हास में।
वेदना रहती सदा
अन्तर्निहित प्रति श्वास में।

क्या हुआ वह चैन जी का
छीन कर चलते बने,
याद का सौरभ बसेगा
अब सदा उच्छ्वास में।
वेदना रहती सदा
अन्तर्निहित प्रति श्वास में।

वह मिलें अथवा नहीं,
पर है मिलन की आस तो,
यह अँधेरी रात भी
कट जायगी विश्वास में।
वेदना रहती सदा
अन्तर्निहित प्रति श्वास में।

शक्ल शीशे में निरख.....

[८३]

शक्ल शीशे में निरख कर
मैं स्वयं ही डर गया।

ये नयन जिन में चमकती
ज्योति उज्ज्वल प्रेम की,
कौन इनमें लाल अंगारे
धधकते भर गया।
शक्ल शीशे में निरख कर
मैं स्वयं ही डर गया।

ये अधर जिनसे सुधा की
निर्झरी झरती रही,
कौन, कब, इनको ज़हर से
सींच नीले कर गया।
शक्ल शीशे में निरख कर
मैं स्वयं ही डर गया।

वह मधुर मुस्कान जिससे
छवि - सुमन खिलता रहा,
कौन निर्मम लूट उसको
भर विरस पतझर गया।
शक्ल शीशे में निरख कर
मैं स्वयं ही डर गया।

मैं अमरता प्राप्त करने
के लिए नभ में उड़ा,
कब लगा शर मृत्यु का
कब मैं स्वयं ही मर गया।
शक्ल शीशे में निरख कर
मैं स्वयं ही डर गया।

मैं अभावों का.....

[८४]

मैं अभावों का धनी हूँ,
है मुझे अभिमान इसका।

छवि क्षितिज पर मुसकुराती,
पर निरंतर दूर रहती,
छवि बढ़ाती प्यास केवल
है मुझे भी भान इसका।
मैं अभावों का धनी हूँ,
है मुझे अभिमान इसका।

छवि मिलन के गीत गाती
है विरह की बाँसुरी पर,
दिल उधर क्यों खिंच रहा है,
है न मुझको ज्ञान इसका।
मैं अभावों का धनी हूँ,
है मुझे अभिमान इसका।

कल्पना के लोक में छवि
मुसकुराई, खिल पड़ा मैं,
शून्य में क्या मिल गया,
जग को नहीं अनुमान इसका।
मैं अभावों का धनी हूँ,
है मुझे अभिमान इसका।

वेदना मद-मस्त रखती
है निरंतर ज़िंदगी को,
प्राण जिसको प्रीत कहते
है यही वरदान इसका।
मैं अभावों का धनी हूँ,
है मुझे अभिमान इसका।

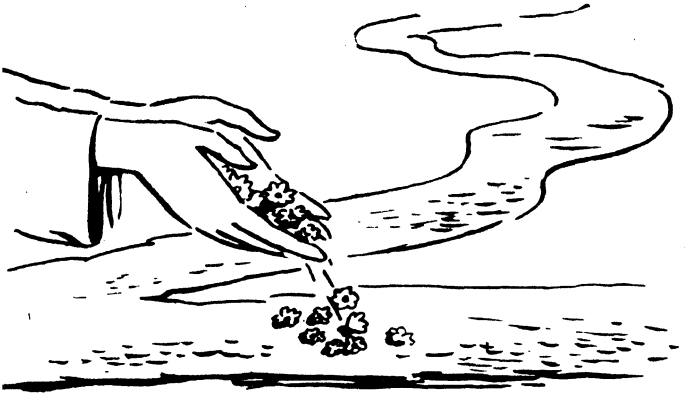

राज-पथ मुझको अपरिचित.....

[८५]

राज-पथ मुझको अपरिचित,
प्रीत की गलियाँ सुपरिचित।

कवि-हृदय को है न माती
भव्यता अट्टालिका की,
झोंपड़ी के चिर अभावों
के लिए मन-प्राण अर्पित।
राज-पथ मुझको अपरिचित,
प्रीत की गलियाँ सुपरिचित।

स्वर्ण-प्रतिमा को प्रतिष्ठित
कर सुमन जगने चढ़ाए,
किंतु है सौंदर्य मेरे
देवता का तो असज्जित।
राज-पथ मुझको अपरिचित,
प्रीत की गलियाँ सुपरिचित।

जो हुआ उत्पन्न तम में
पल रहा जो कालिमा में,
उस जगत् से प्रीत करने
में न कवि-अभिमान लज्जित।
राज-पथ मुझको अपरिचित,
प्रीत की गलियाँ सुपरिचित।

जिस जगह कुरबानियाँ हैं,
जिस जगह बदनामियाँ हैं,
उस गली को कर दिया
कवि ने स्वयं जीवन समर्पित।
राज-पथ मुझको अपरिचित,
प्रीत की गलियाँ सुपरिचित।

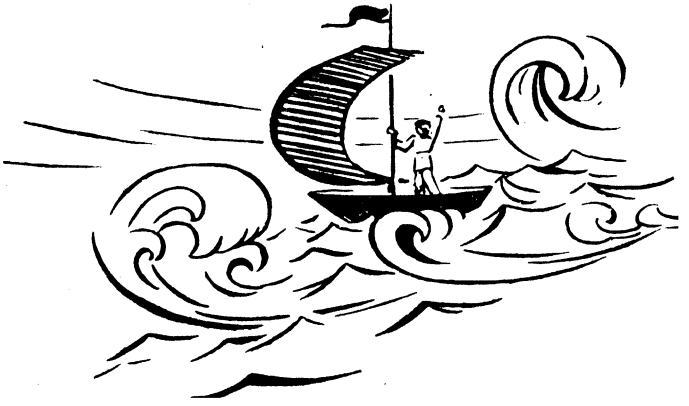

मैं स्वयं तूफ़ान में हूँ.....

[८६]

मैं स्वयं तूफ़ान में हूँ,
ले चलूँ उस पार कैसे ?

उठ रही लहरें भयंकर
डूबता दिल जा रहा है,
डूबनेवाला किसी का
कर सके उद्धार कैसे ?
मैं स्वयं तूफ़ान में हूँ,
ले चलूँ उस पार कैसे ?

नाव डगमग डोलती है
मौत भी मुँह खोलती है,
मैं निराश्रय हूँ, किसी का
बन सकूँ आधार कैसे ?
मैं स्वयं तूफ़ान में हूँ,
ले चलूँ उस पार कैसे ?

खेल सकता हूँ स्वयं की
ज़िंदगी से खेल, लेकिन
नष्ट कर दूं मैं किसी के
स्वप्न का संसार कैसा ?
मैं स्वयं तूफ़ान में हूँ,
ले चलूँ उस पार कैसे ?

मैं अकेला ही लड़ूँगा,
साथ मेरे तुम न आओ,
दूं तुम्हें अपनी सुनिश्चित
हार का उपहार कैसे ?
मैं स्वयं तूफ़ान में हूँ,
ले चलूँ उस पार कैसे ?

विश्व में अब हूँ अकेला.....

[८७]

विश्व में अब हूँ अकेला,
मैं अकेला ही रहूँगा।

जब दिवस सुख के रहे तब
साथ देने को जगत् था,
जब दुखों का प्यार उमड़ा
तो अकेला ही सहूँगा।
विश्व में अब हूँ अकेला,
मैं अकेला ही रहूँगा।

चल दिए तूफ़ान देकर
जब खिवैया ज़िंदगी के,
तो प्रबल उन्मत्त लहरों
में अकेला ही बहूँगा।
विश्व में अब हूँ अकेला,
मैं अकेला ही रहूँगा।

कह रहा कवि का हृदय है,
"एक दिन दिनकर बुझेगा,
पर, प्रलय की रात में भी
मैं अकेला ही दहूँगा।"
विश्व में अब हूँ अकेला,
मैं अकेला ही रहूँगा।

कौन आया है मरण के
बाद कहने को कहानी,
मृत्यु में भी ज़िंदगी है
मैं अकेला ही कहूँगा।
विश्व में अब हूँ अकेला,
मैं अकेला ही रहूँगा।

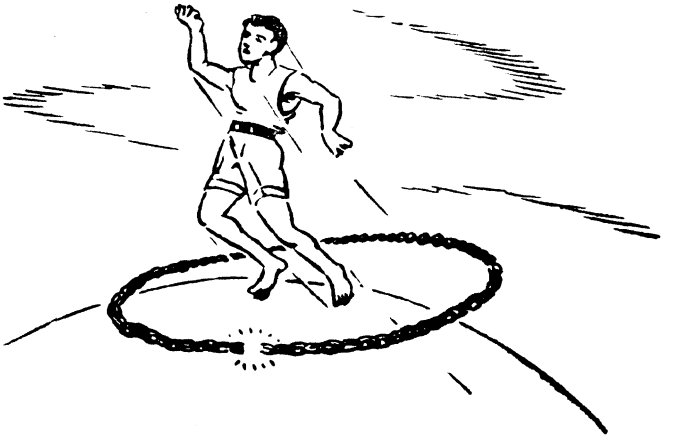

चल खिलाड़ी.....

[८८]

चल खिलाड़ी, बढ़ खिलाड़ी,
दूर होगा यह अँधेरा ।

रात दिन का चक्र चलता
है जगत में रातदिन ही,
इस निराशा की निशा के
बाद आएगा सबेरा ।
चल खिलाड़ी, बढ़ खिलाड़ी,
दूर होगा यह अँधेरा ।

तू अमर है और बंधन
विश्व के अस्थिर अचिर हैं,
मुक्ति के आकाश में उड़
बंधनों का तोड़ घेरा।
चल खिलाड़ी, बढ़ खिलाड़ी,
दूर होगा यह अँधेरा।

स्वप्न की दुनिया हुई है
राख तो फिर से बसाले,
ज़िंदगी में डालने दे
तू निराशा को न डेरा।
चल खिलाड़ी, बढ़ खिलाड़ी,
दूर होगा यह अँधेरा।

विश्व में मत खोज साथी,
ढूँढ मत कोई सहारा,
कर भरोसा तू स्वयं पर
तो बनेगा विश्व तेरा।
चल खिलाड़ी, बढ़ खिलाड़ी,
दूर होगा यह अँधेरा।

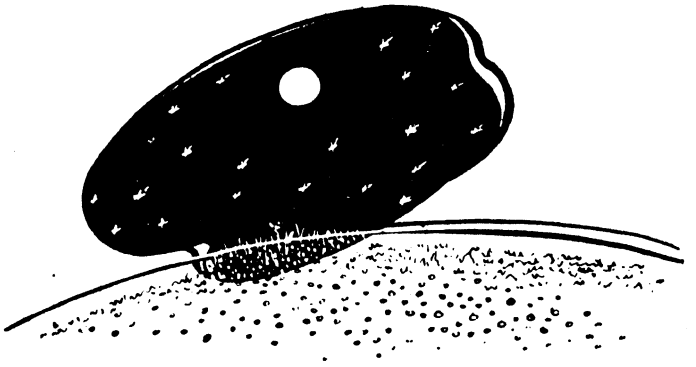

स्वर्ग को मैं.....

[८६]

स्वर्ग को मैं खोजता हूँ,
स्वर्ग मेरे पास में है।

प्रेम को ढूँढा गगन में,
प्रेम को ढूँढा अवनि पर,
अब पता पाया हृदय ने
प्रेम तो विश्वास में है।
स्वर्ग को मैं खोजता हूँ,
स्वर्ग मेरे पास में है।

बात कहने को उड़े
नभ के निवासी से हृदय की,
लौट कर उच्छ्वास बोले
कुछ नहीं आकाश में है।
स्वर्ग को मैं खोजता था,
स्वर्ग मेरे पास में है।

कह रही शबनम धरा से
माँग भर दूँ मोतियों से,
आँसुओं में जो विभव है
क्या किसी के हास में है?
स्वर्ग को मैं खोजता था,
स्वर्ग मेरे पास में है।

राज-महलों में पहुँच कर
तो मिली दिल को निराशा,
कह रहा पंछी कि सुख तो
नीड़ के अधिवास में है।
स्वर्ग को मैं खोजता था,
स्वर्ग मेरे पास में है।

रूप के प्यासे.....

[६०]

रूप के प्यासे नयन
संसार से क्या माँगते हैं ?

जो डुबाने के लिए है
वह डुबाकर ही रहेगी,
भीख - सी बेकार अब
मझधार से क्या माँगते हैं ?
रूप के प्यासे नयन
संसार से क्या माँगते हैं ?

रूप-दर्शन

विश्व के सौंदर्य के हैं
जो नयन अनमोल भूषण,
वे जगत के दीनतम
शृंगार से क्या माँगते हैं ?
रूप के प्यासे नयन
संसार से क्या माँगते हैं ?

माँगने से तो किसी का
प्यार मिल सकता न दिल को,
अश्रुओं की इस सजल
मनुहार से क्या माँगते हैं ?
रूप के प्यासे नयन
संसार से क्या माँगते हैं ?

इस पार भी छवि है निठुर,
उस पार भी छवि है निठुर,
हार कर इस पार से
उस पार से क्या माँगते हैं।
रूप के प्यासे नयन
संसार से क्या माँगते हैं ?

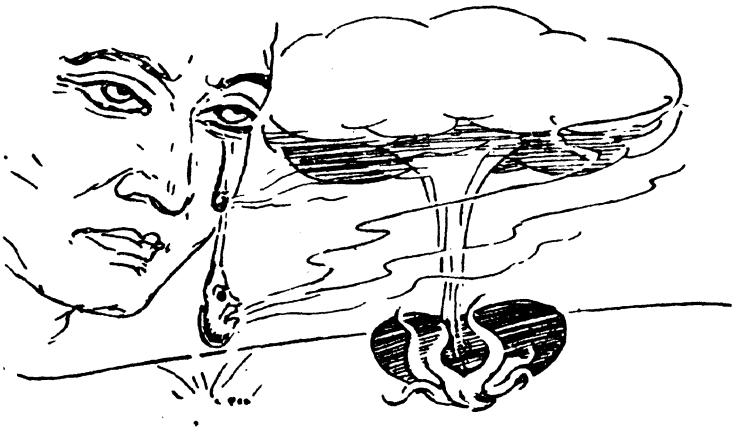

आँसुओं को.....

[६१]

आँसुओं को बोलने का
दे दिया वरदान मैंने ।

तुम कुचल कर चल पड़े तो
भूमि में जग ने दबाया ।
अंकुरित हो बढ़ चला मैं,
पा लिया उत्थान मैंने ।
आँसुओं को बोलने का
दे दिया वरदान मैंने ।

वार जो दिल पर किया
वह मुसकुरा कर सह लिया है,
तार झंकृत हो उठे तो
गा लिया है गान मैंने।
आँसुओं को बोलने का
दे दिया वरदान मैंने।

दिल जला तो आह उमड़ी
छा गई आकाश भर में,
ज़िंदगी पर ख़ुद लिया है
मेघ-मंडप तान मैंने।
आँसुओं को बोलने का
दे दिया वरदान मैंने।

घोल मसि में दर्द दिल का
लिख दिए हैं छन्द मैंने,
स्तूप अपनी ज़िंदगी का
कर लिया निर्माण मैंने।
आँसुओं को बोलने का
दे दिया वरदान मैंने।

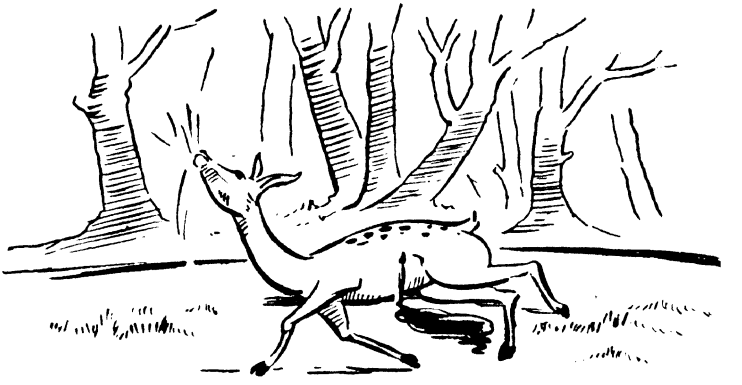

तीर बनकर.....

[६२]

तीर बनकर चुभ गया है,
प्यार प्रातः की किरण सा।

प्रीत से परिचित नहीं था
दिल बड़े आराम में था,
एक ही मुसकान से
जीवन बना मेरा मरण सा।
तीर बनकर चुभ गया है,
प्यार प्रातः की किरण सा।

गीत-सा कुछ गा गए हो,
बावला मन कर गए हो,
अब तड़पता हूँ निरंतर
मैं व्यथित घायल हिरण-सा।
तीर बनकर चुभ गया है,
प्यार प्रातः की किरण सा।

विश्व में मुझको न कोई
वस्तु देती है दिखाई,
रूप प्रिय का छा गया है
विश्व में घन-आवरण-सा।
तीर बनकर चुभ गया है,
प्यार प्रातः की किरण सा।

जान पड़ता नभ नहीं है,
ठोस पृथ्वी हट गई है,
मैं हवा में बेसहारा
कर रहा हूँ संतरण-सा।
तीर बनकर चुभ गया है,
प्यार प्रातः की किरण सा।

लाल लपटों से.....

[६३]

लाल लपटों से लिपट कर
गा रहा कवि गान कितने !

रूप की जलती जवानी
भस्म कर देती शलभ को,
साँस अंतिम ले चुके कुछ,
हो रहे निष्प्राण कितने !

लाल लपटों से लिपट कर
गा रहा कवि गान कितने !

रूप-दर्शन

प्रीत की बलि-वेदिका पर
है शहीदों का न टोटा,
रूप - मन्दिर में निरंतर
हो रहे बलिदान कितने !
लाल लपटों से लिपट कर
गा रहा कवि गान कितने !

जो स्वयं ही जल रहा है
शांति देगा किस तरह वह,
चूम ज्वाला के अधर-दल
जल रहे अरमान कितने !
लाल लपटों से लिपट कर
गा रहा कवि गान कितने !

क्या मज़ा है इस जलन में,
क्या मज़ा है इस मरण में,
छवि - शिखा से प्रीत करने
उड़ रहे नादान कितने !
लाल लपटों से लिपट कर
गा रहा कवि गान कितने !

स्नेह का स्वर.....

[६४]

स्नेह का स्वर धड़कनों में
सुन स्वयं मैं हूँ सिहरता।

मस्त नयनों की नज़र को
पी लिया प्यासे हृदय ने,
है अमृत की निर्झरी ने
वेदना को दी अमरता।

स्नेह का स्वर धड़कनों में
सुन स्वयं मैं हूँ सिहरता।

रूप-दर्शन

झाँक कर फिर छुप गया
नीरव निमंत्रण लोचनों में,
उस घड़ी से बावला मन
स्वप्न के जग में विचरता।
स्नेह के स्वर धड़कनों में
सुन स्वयं मैं हूँ सिहरता।

तीर - सी घुसती गई है
चीर मेरे वक्ष को छवि,
बस गई बरबस हृदय में,
क्या करूँ, उनकी सुघरता।
स्नेह के स्वर धड़कनों में
सुन स्वयं मैं हूँ सिहरता।

जल रहा हूँ मैं, जगत कहता
कि सुंदर हो रहा हूँ।
स्वर्ण - सा पल पल हृदय
जल कर निरंतर है निखरता।
स्नेह का स्वर धड़कनों में,
सुन स्वयं मैं हूँ सिहरता।

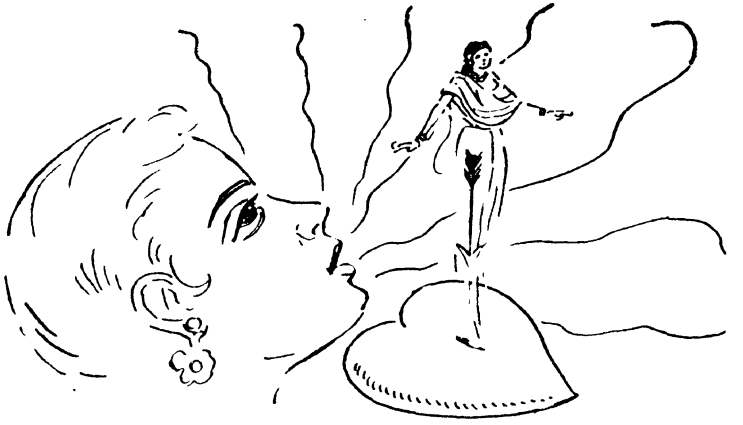

ज़िन्दगी भर दर्द को.....

[६५]

ज़िन्दगी भर दर्द को
महमान रखना भी कठिन है।

ख़ुश रहे दिल की जवानी
है जवानी की तमन्ना,
पर जवानी में हमेशा
जान रखना भी कठिन है।
ज़िन्दगी भर दर्द को
महमान रखना भी कठिन है।

आँक चेहरे पर उदासी
प्रीत पा सकते न जग की,
किन्तु ओठों पर अमर
मुसकान रखना भी कठिन है।
ज़िन्दगी भर दर्द को
महमान रखना भी कठिन है।

चाहता निर्दय जगत के
सामने आँसू न बरसें,
कौन बैठा पास, इसका
ध्यान रखना भी कठिन है।
ज़िन्दगी भर दर्द को
महमान रखना भी कठिन है।

आँसुओं को थाम लेना
काम मुश्किल है बहुत ही,
बह पड़े तो मोतियों का
मान रखना भी कठिन है।
ज़िन्दगी भर दर्द को
महमान रखना भी कठिन है।

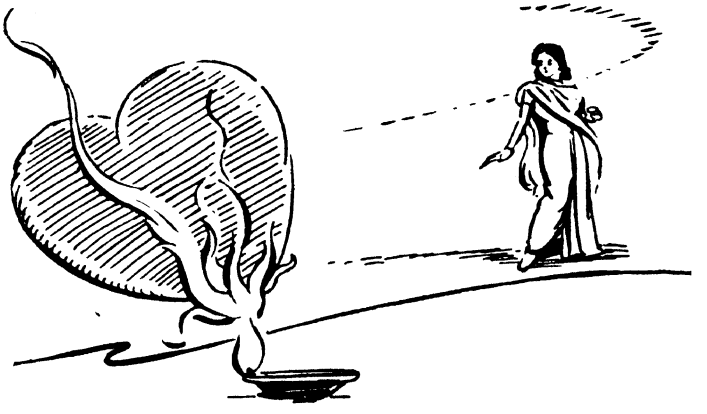

है सरल नज़रें मिलाना.....

[९६]

है सरल नज़रें मिलाना,
दिल मिलाना है कठिन ।

जोड़ने को जोड़ लेते
स्नेह का संबंध सब,
किन्तु दुख सुख में सदा
नाता निभाना है कठिन ।
है सरल नज़रें मिलाना,
दिल मिलाना है कठिन ।

आग लगती ज़िन्दगी में
झेलते मजबूर हो,
दीप - से जल कर निरंतर
मुसकुराना है कठिन ।
है सरल नज़रें मिलाना,
दिल मिलाना है कठिन ।

वार मानव ने सहे हैं
और सह लेगा बहुत,
वेदना कवि की तरह सह
गुनगुनाना है कठिन ।
है सरल नज़रें मिलाना,
दिल मिलाना है कठिन ।

दिल्लगी में आग दिल में
वह लगा कर चल दिए,
पर उन्हें भी आग दिल की
अब बुझाना है कठिन ।
है सरल नज़रें मिलाना,
दिल मिलाना है कठिन ।

फूल का या शूल का.....

[६७]

फूल का या शूल का, किसका
हृदय आभार माने ?

कुछ मिलन के गीत मधुमय,
कुछ विरह के गीत व्याकुल,
सान्त्वना या वेदना का
यह हृदय आभार माने ?
फूल का या शूल का, किसका
हृदय आभार माने ?

प्यास ने भी तार छेड़े,
तृप्ति ने भी गीत गाए,
प्यास को या तृप्ति को
कवि गीत का आधार माने ?
फूल का या शूल का, किसका
हृदय आभार माने ?

ज़िंदगी भी है, मरण भी
है नज़र की बिजलियों में,
अश्रु को या हास को कवि
प्यार का आसार माने ?
फूल का या शूल का, किसका
हृदय आभार माने ?

मुसकुराता प्रात सुंदर,
रात भी सुंदर सुशीतल,
तम गहन अथवा उजाला,
कवि किसे शृंगार माने ?
फूल का या शूल का, किसका
हृदय आभार माने ?

आ गई अंतिम घड़ी.....

[९८]

आ गई अंतिम घड़ी तो
क्यों न अंतिम गीत गा लूँ ?

कह रहा सुरभित समीरण
'आज प्रियतम आ रहे हैं।'
इस खुशी में तार दिल के
मैं बजा कर तोड़ डालूँ।
आ गई अंतिम घड़ी तो
क्यों न अंतिम गीत गा लूँ ?

देखता जो रूप उनका
हाथ धोता ज़िन्दगी से,
लिए अपनी चिता भी
थ से अपने सजा लूँ।
आ गई अंतिम घड़ी तो
क्यों न अंतिम गीत गा लूँ?

श्व कहता है कि मुझ में
ंदगी बाकी नहीं है,
बिना ही स्नेह पाए
प जीवन का जला लूँ।
आ गई अंतिम घड़ी तो
क्यों न अंतिम गीत गा लूँ?

क करदे दो दिलों को
प्रीत की तो जीत तब है,
आज जब वह आ रहे हैं
तो स्वयं को मैं मिटा लूँ।
आ गई अंतिम घड़ी तो
क्यों न अंतिम गीत गा लूँ?

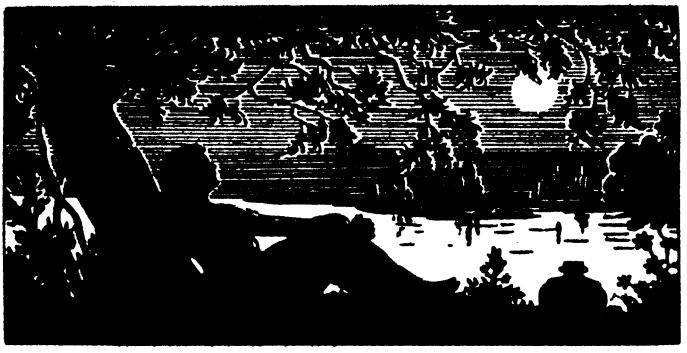

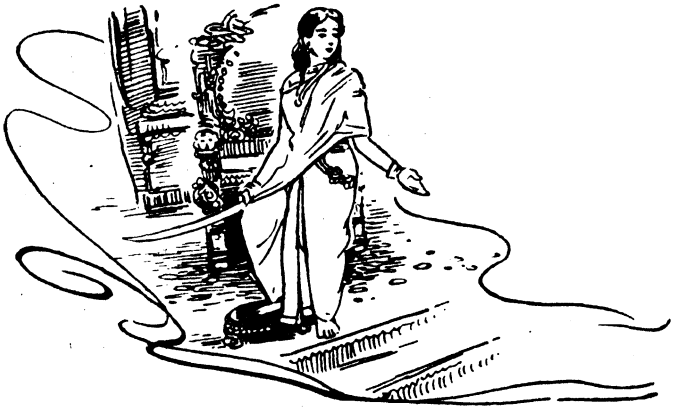

है पुकारा आज.....

[९९]

है पुकारा आज कवि को
रूप ने दरबार में ।

शीश कवि का चाहिए
यह कह रही छवि की नज़र,
हो गया है एक मोती
कम किसी के हार में ।
है पुकारा आज कवि को
रूप ने दरबार में ।

रूप-दर्शन

रूप ने खोजा बहुत, पर
मिल सका जग में नहीं,
दिल किसी कवि का नहीं
मिलता कहीं बाज़ार में।
है पुकारा आज कवि को
रूप ने दरबार में।

काट डाला सर, मगर स्वर
काट सकते हो नहीं,
क्या कमी है, देख लो,
सौन्दर्य की तलवार में।
है पुकारा आज कवि को
रूप ने दरबार में।

है चकित आश्चर्य कैसे
सर कटा कवि हँस रहा,
है गुँजाता गीत छवि के
कवि लहू की धार में।
है पुकारा आज कवि को
रूप ने दरबार में।

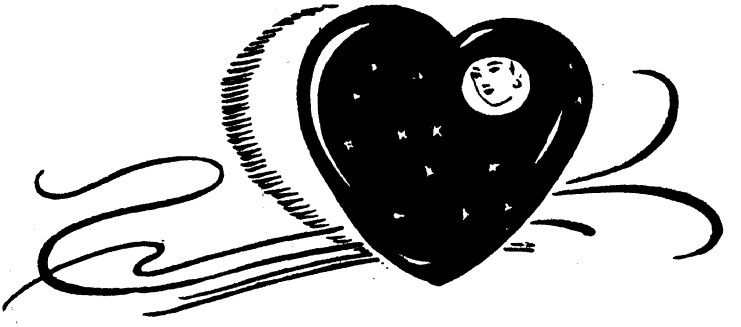

चन्द्रमा माना जिन्हें.....

[१००]

चन्द्रमा माना जिन्हें था
वह हृदय-धन आग निकले !

जब मिले प्रियतम, मिलन में
स्वर बजे भावी विरह के,
बाँसुरी से शुद्ध सुख के
हैं न मधुमय राग निकले।
चन्द्रमा माना जिन्हें था
वह हृदय-धन आग निकले !

मुसकुराते माधुरी - मय
जग जिन्हें नक्षत्र कहता,
जब उन्हें देखा निकट से
तो हृदय के दाग़ निकले !
चन्द्रमा माना जिन्हें था
वह हृदय-धन आग निकले !

बाहुओं में बाँधने का
यत्न भी कितना किया है,
हाथ जब जब हैं बढ़ाए
प्राण तब-तब भाग निकले !
चन्द्रमा माना जिन्हें था
वह हृदय-धन आग निकले !

हों मिलन के या विरह के
गीत गाने ही पड़ेंगे ।
मौन से हो रुष्ठ जाते
गीत-प्रिय प्रिय नाग निकले !
चन्द्रमा माना जिन्हें था
वह हृदय-धन आग निकले !

डर न यौवन.....

[१०१]

डर न यौवन, विश्व नूतन
है तुझे निर्माण करना।

आँसुओं की बाढ़ आँखों
में न भर आए निरंतर,
फूल से कोमल हृदय को
है तुझे पाषाण करना।
डर न यौवन, विश्व नूतन
है तुझे निर्माण करना।

स्वप्न पूरे हों न तेरे
विश्व ने चाहा हमेशा,
पर बदल अभिशाप को भी
है तुझे वरदान करना।
डर न यौवन, विश्व नूतन
है तुझे निर्माण करना।

नाव नन्ही ज़िंदगी की
और लहरें हैं भयंकर,
किंतु इस तूफ़ान में भी
है तुझे प्रस्थान करना।
डर न यौवन, विश्व नूतन
है तुझे निर्माण करना।

छवि कमल-कर में सम्हाले
पात्र ले आई गरल भर,
पी उसे, है क्योंकि तुझको
रूप का सम्मान करना।
डर न यौवन, विश्व नूतन
है तुझे निर्माण करना।

जवानी तो चला करती.....

[१०२]

जवानी तो चला करती
सदा दिल के सहारे पर !

भँवर भी हार जाएगी,
अगर हिम्मत न मन हारा,
चलो तूफ़ान से लड़ने,
खड़े हो क्यों किनारे पर ?
जवानी तो चला करती
सदा दिल के सहारे पर !

न बिगड़ेगा तुम्हारा कुछ
किसी की क्रूर नज़रों से,
चला है प्रीत का राही
हमेशा ही दुधारे पर।
जवानी तो चला करती
सदा दिल के सहारे पर।

चुनौती दे प्रलय आकर
न मन भयभीत हो क्षणभर,
तुम्हारे भाग्य की रेखा
न निर्भर हो सितारे पर।
जवानी तो चला करती
सदा दिल के सहारे पर।

बना दो ईश मानव को
बना मंदिर नया मन में,
सितारों को चलाना है
तुम्हें अपने इशारे पर।
जवानी तो चला करती
सदा दिल के सहारे पर।

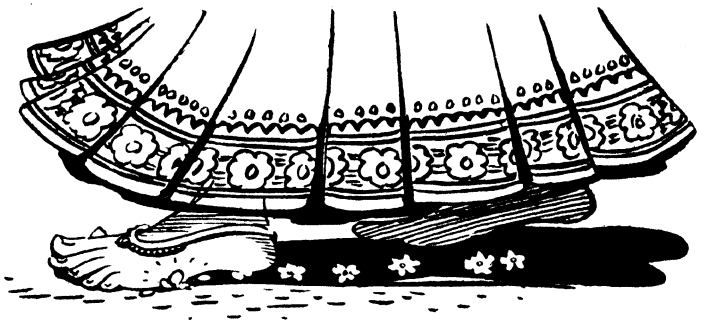

शाप दुनिया ने दिया.....

[१०३]

शाप दुनिया ने दिया, वह
बन गया वरदान मुझको।

भग्न वीणा के स्वयं ही
बज उठे हैं तार टूटे,
मौन देने विश्व आया,
दे गया है गान मुझको।

शाप दुनिया ने दिया, वह
बन गया वरदान मुझको।

अश्रु - सा भूपर गिराया,
पर उड़ा मैं आह बनकर,
जग पतन देने चला था
दे गया उत्थान मुझको।
शाप दुनिया ने दिया, वह
बन गया वरदान मुझको।

फूल-सा कुचला गया दिल
स्पर्श चरणों का मिला तब,
रूप ने दी थी उपेक्षा
मिल गया सम्मान मुझको।
शाप दुनिया ने दिया, वह
बन गया वरदान मुझको।

प्रीत की बलिवेदिका पर
मौत देती है अमरता,
प्राण लेने आ गया जग
दे गया नवप्राण मुझको।
शाप दुनिया ने दिया, वह
बन गया वरदान मुझको।

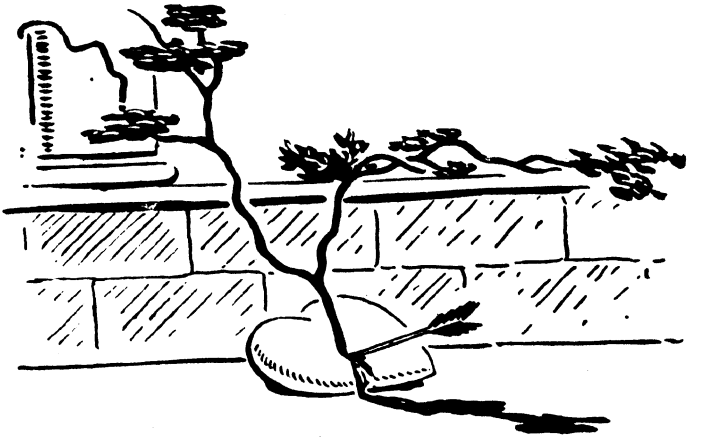

फिर हृदय की.....

[१०४]

फिर हृदय की वाटिका में
खिल गए हैं फूल से।

ज़िंदगी में शेष केवल
याद है, उन्माद है,
भावना की बेल उपजी
वेदना के मूल से।
फिर हृदय की वाटिका में
खिल गए हैं फूल से।

रूप-दर्शन

कौन सौरभ भर गया
अनजान में, चुपचाप आ,
विश्व सुरभित हो उठा
मेरे हृदय की धूल से।
फिर हृदय की वाटिका में
खिल गए हैं फूल से।

जीर्ण वीणा को उठाकर
छेड़ बैठा गीत मैं,
आज अपने आप ही
स्वर हो गए अनुकूल से।
फिर हृदय की वाटिका में
खिल गए हैं फूल से।

आज जीवन बोलता है,
और यौवन बोलता है,
लाश अपने आपको
मैं मान बैठा भूल से।
फिर हृदय की वाटिका में
खिल गए हैं फूल से।

मैं शिला पर आँक दूँगा.....

[१०५]

मैं शिला पर आँक दूँगा
प्रीत के पीयूष - अक्षर ।

दिल जगत् का है कठिन
चट्टान-सा, यह जानता हूँ,
पर बहा दूँगा शिला की
क्रूर छाती चीर निर्झर ।
मैं शिला पर आँक दूँगा
प्रीत के पीयूष - अक्षर ।

रेंगती है जग - विषमता
विषधरों - सी प्राण लेने,
किंतु नाचेंगे हृदय की
तान पर हो मस्त विषधर ।
मैं शिला पर आँक दूँगा
प्रीत के पीयूष - अक्षर ।

सूय - शाश बुझ जायँगे,
होगा अखिल जग में अँधेरा,
प्रीत के अक्षर करेंगे
विश्व भर को तब उजागर ।
मैं शिला पर आँक दूँगा
प्रीत के पीयूष - अक्षर ।

होश खोकर प्रीत का पथ
भूल जाएगा जगत जब,
राह तब गुमराह पाएँगे
शिला के लेख पढ़कर ।
मैं शिला पर आँक दूँगा
प्रीत के पीयूष - अक्षर ।

लेखनी है गीत लिखती.....

[१०६]

लेखनी है गीत लिखती,
तूलिका तस्वीर लिखती ।

चित्र में से गीत बोला,
गीत में से चित्र झाँका,
लेखनी भी पीर लिखती,
तूलिका भी पीर लिखती ।
लेखनी है गीत लिखती,
तूलिका तस्वीर लिखती ।

रूप-दर्शन

एक ही है वस्तु, लेकिन
रूप दोनों ने दिए दो,
लेखनी लिखती नज़र तो
तूलिका है तीर लिखती ।
लेखनी है गीत लिखती,
तूलिका तस्वीर लिखती ।

है विकल कवि चित्र रचने,
गीत लिखने को चितेरा,
पा गई अमरत्व प्रतिभा
जो हृदय को चीर लिखती ।
लेखनी है गीत लिखती,
तूलिका तस्वीर लिखती ।

लेखनी है आह भरती,
तूलिका बादल बनाती,
लेखनी है प्यार लिखती,
तूलिका ज़ंजीर लिखती ।
लेखनी है गीत लिखती,
तूलिका तस्वीर लिखती ।

की मरण की कामना.....

[१०७]

की मरण की कामना,
दी ज़िंदगी संसार ने।

स्नेह-वंचित, चिर - उपेक्षित
दीप जब बुझने लगा,
स्नेह जलने के लिए
टाला किसी के प्यार ने।
की मरण की कामना,
दी ज़िंदगी संसार ने।

छोड़ दी पतवार, नैया
सौंप दी तूफ़ान को,
रख लिया तब रूप खेवट
का स्वयं मझधार ने।
की मरण की कामना,
दी ज़िंदगी संसार ने।

शीश चरणों पर रखा,
मैंने कहा, "लो काट लो।"
वह लगे मिलने गले जो
आ गए थे मारने।
की मरण की कामना,
दी ज़िंदगी संसार ने।

शून्य घड़ियों में निराशा
जान जब लेने लगी,
तब दिया दिल को सहारा
आँसुओं की धार ने।
की मरण की कामना,
दी ज़िंदगी संसार ने।

हो गए अरमान मूर्च्छित.....

[१०८]

हो गए अरमान मूर्च्छित
तुम जगाने आ गए हो।

यह हृदय जल जल निरंतर
हो चला था शांत शीतल,
फूंक कर दिल में पुनः
लपटें उठाने आ गए हो।
हो गए अरमान मूर्च्छित
तुम जगाने आ गए हो।

रूप-दर्शन

भूलने के यत्न में तुमको
स्वयं को भूल बैठा।
और भी ज़्यादा मुझे
पागल बनाने आ गए हो।
हो गए अरमान मूर्च्छित
तुम जगाने आ गए हो।

रूप की किरणें तुम्हारी
बादलों में छुप चली थीं,
वायु बन विस्मृति-घटाओं
को हटाने आ गए हो।
हो गए अरमान मूर्च्छित
तुम जगाने आ गए हो।

जग जिसे म्रियमाण समझा
तुम उसी दिल की व्यथा को
ज़िंदगी देने सुधा छवि
की पिलाने आ गए हो।
हो गए अरमान मूर्च्छित
तुम जगाए आ गए हो।

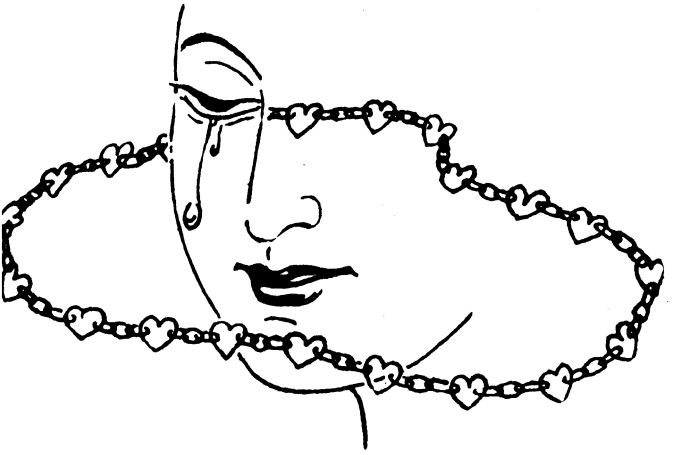

मुसकुराहट पूछती है.....

[१०६]

मुसकुराहट पूछती है
लोचनों में नीर क्यों है ?

था समझता एक क्षण में
गीत गा लूँगा व्यथा के,
दर्द की गाथा बनी अब
द्रोपदी का चीर क्यों है ?

मुसकुराहट पूछती है
लोचनों में नीर क्यों है ?

दिल समझता था कि प्रिय से
प्रीत करना दिल्लगी है,
किंतु यह तो युग-युगों को
बन गई ज़ंज़ीर क्यों है ?
मुसकुराहट पूछती है
लोचनों में नीर क्यों है ?

एक क्षण ही के लिए तो
रूप ने घूंघट हटाया,
लोचनों की पुतलियों में
खिंच गई तस्वीर क्यों है ?
मुसकुराहट पूछती है
लोचनों में नीर क्यों है ?

कौन जाने चितवनों में
ज़िंदगी थी या मरण था,
एक क्षण देखा तभी से
इस हृदय में पीर क्यों है ?
मुसकुराहट पूछती है
लोचनों में नीर क्यों है ?

मैं नहीं डरता जलन से.....

[११०]

मैं नहीं डरता जलन से
ज़िंदगी को तुम जला दो।

देखता हूँ राह प्रिय की
मैं जलाकर दीप दिल का,
कब कहा तुमसे—"कृपाकर
दीप की बाती बुझा दो।"
मैं नहीं डरता जलन से
ज़िंदगी को तुम जला दो।

मौन जब होने लगे
झंकार मेरी वेदना की
चोट तब दिल पर लगा कर
तार इसके झनझना दो।
मैं नहीं डरता जलन से
ज़िंदगी को तुम जला दो।

चैन जब मिलने लगे
घायल हृदय की धड़कनों को,
तो पुनः पागल बनाने
चंद्रमा से मुसकुरा दो।
मैं नहीं डरता जलन से
ज़िंदगी को तुम जला दो।

पा लिया है वेदना में
प्रिय-मिलन का सुख मधुरतम,
है नहीं संभव, मुझे तुम
प्रीत के पथ से हटा दो।
मैं नहीं डरता जलन से
ज़िंदगी को तुम जला दो।

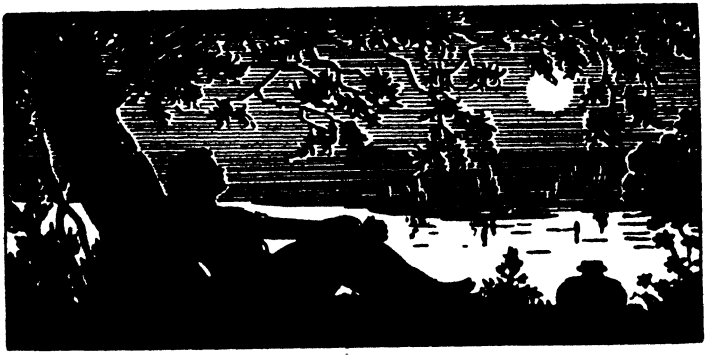

जो लगा दे आग.....

[१११]

जो लगा दे आग दिल में
प्यार उसका नाम है।

वह पिलाना चाहते हैं
और हम पीना सुरा,
किंतु अधरों के निकट आ
छूट जाता जाम है।
जो लगा दे आग दिल में
प्यार उसका नाम है।

मदभरी मीठी नज़र की
प्यालियाँ देखीं छलकतीं,
जल पड़ा दिल, यह नज़र की
भूल का अंजाम है।
जो लगा दे आग दिल में
प्यार उसका नाम है।

बिन पिए भी मर रहे हैं
पी चुके वे भी मरे,
इस जले दिल को किसी से
कब मिला आराम है।
जो लगा दे आग दिल में
प्यार उसका नाम है।

राज़ दिल ने तो छुपाया
पर नज़र ने कह दिया,
और दुनिया की नज़र में
दिल हुआ बदनाम है।
जो लगा दे आग दिल में
प्यार उसका नाम है।

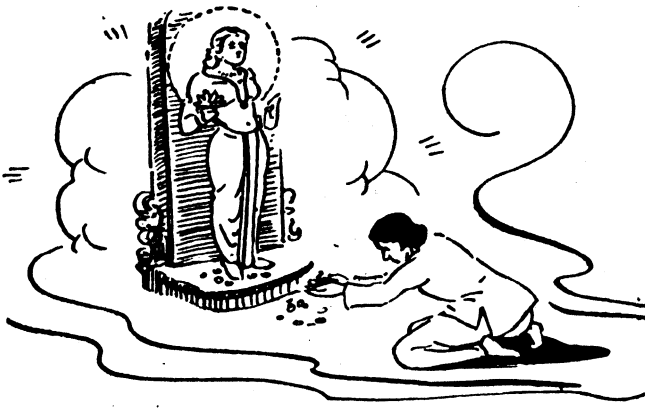

मूर्ति है पत्थर.....

[११२]

मूर्ति है पत्थर मगर मैं
कर रहा आराधना ।

गीत जो गाए हृदय ने
मौन मैं प्रिय पी गए,
किंतु आँखें कर रही हैं
एक युग से वंदना ।
मूर्ति है पत्थर मगर मैं
कर रहा आराधना ।

रूप-दर्शन

रीझते प्रियतम नहीं, पर
प्रीत मेरी है अटल,
रूप पाहन, या स्वयं
मुझ में नहीं है चेतना।
मूर्ति है पत्थर मगर मैं
कर रहा आराधना।

एक पल पलकें हिलें ये,
दें अधर मुसका मधुर,
बैठ चरणों में निरंतर
कर रहा हूँ प्रार्थना।
मूर्ति है पत्थर मगर मैं
कर रहा आराधना।

फूल जो जग ने चढ़ाए
वे सभी मुरझा गए,
किंतु मुरझाती नहीं
प्रेमी हृदय की साधना।
मूर्ति है पत्थर मगर मैं
कर रहा आराधना।

चल रहा हूँ मैं अलग.....

[११३]

चल रहा हूँ मैं अलग, जग
से निराली राह पकड़े ।

नील नभ की शून्यता में
खोजता हूँ मैं सहारा,
उड़ रहे निश्वास नभ में
प्रिय-मिलन की चाह पकड़े ।

चल रहा हूँ मैं अलग, जग
से निराली राह पकड़े ।

बह पड़ा सो बह पड़ा, यह
प्रीत का दरया उमड़ कर
कौन दुनिया में जवानी
की लहर की बाँह पकड़े।
चल रहा हूँ मैं अलग, जग
से निराली राह पकड़े।

प्राप्त कर लूँगा किसी दिन
इस विरह के सिंधु का तट,
खे रहा है नाव स्मृति-पतवार
मन - मल्लाह पकड़े।
चल रहा हूँ मै अलग, जग
से निराली राह पकड़े।

पा रहा हूँ वेदना में
मैं किसी का प्यार पागल,
पा रहा आराम कितना
दाह की मैं छाँह पकड़े।
चल रहा हूँ मैं अलग, जग
से निराली राह पकड़े।

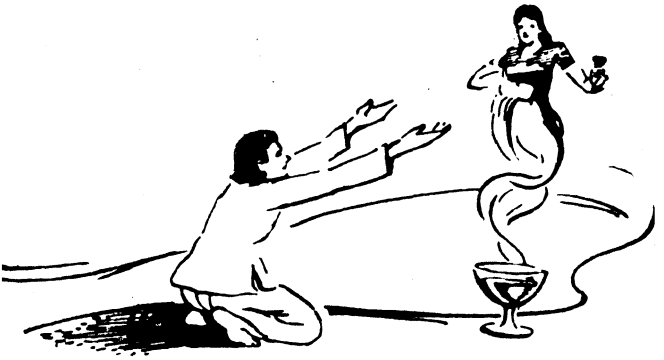

आज साक़ी फिर पिला.....

[११४]

आज साक़ी फिर पिला,
इन मस्त आँखों से पिला।

ज्वार जीवन में उठा दे
रूप की मुसकान से,
फिर शुरू हो जाय दिल में
दर्द का कुछ सिलसिला।
आज साक़ी फिर पिला,
इन मस्त आँखों से पिला।

आज फिर भर जाय नस नस
में जवानी का नशा,
लालसाओं की जवानी
को पिलाकर मद जिला।
आज साक़ी फिर पिला,
इन मस्त आँखों से पिला।

हो उठूँ बेचैन छवि को
बाहुओं में बाँधने,
बढ़ चले उन्माद उर का
तोड़ संयम की शिला।
आज साक़ी फिर पिला,
इन मस्त आँखों से पिला।

डर नहीं जल जायगा कवि
का हृदय छवि-ज्वाल से,
कवि-हृदय को दीप-सा
वरदान जलने का मिला।
आज साक़ी फिर पिला,
इन मस्त आँखों से पिला।

प्यार मैंने तो किया.....

[११५]

प्यार मैंने तो किया है,
क्या किया तुमने बताओ ?

आवरण पर आवरण क्यों
डालते सौन्दर्यशाली,
रूप तो खुद आवरण है
रूप का घूंघट हटाओ।
प्यार मैंने तो किया है,
क्या किया तुमने बताओ।

रूप-दर्शन

रूप है जलती शिखा-सा,
है हृदय पागल शलभ सा,
जान देना चाहता है
तो इसे हँस कर जलाओ।
प्यार मैंने तो किया है,
क्या किया तुमने बताओ ?

आग है जब तक हृदय में
प्रीत भी हँसती रहेगी,
प्रीत मुझसे भी तुम्हें है,
प्रिय, भले ही तुम छुपाओ।
प्यार मैंने तो किया है,
क्या किया तुमने बताओ ?

रूप के जो छवि परे है,
मैं उसे भी देख लूँगा,
प्राण-धन, मेरी नज़र से
आज नज़रें तो मिलाओ।
प्यार मैंने तो किया है,
क्या किया तुमने बताओ ?

विश्व ने मुझको दिया सम्मान.....

[११६]

विश्व ने मुझको दिया
सम्मान, मैं व्याकुल हुआ।

है कहाँ वह रूप, जिसकी
खींचता तस्वीर मैं,
जब जगत सुनने लगा
छवि-गान, मैं व्याकुल हुआ।
विश्व ने मुझको दिया
सम्मान, मैं व्याकुल हुआ।

गीत जिन में आग है,
उच्छ्वास है, तूफ़ान है,
सुन उन्हें जब खिल उठी
मुस्कान, मैं व्याकुल हुआ।
विश्व ने मुझको दिया
सम्मान, मैं व्याकुल हुआ।

जो लिखा सो लिख दिया,
किसने लिखा, कैसे लिखा,
लेखनी को जब हुआ
अभिमान, मैं व्याकुल हुआ।
विश्व ने मुझको दिया
सम्मान, मैं व्याकुल हुआ।

कल्पना के लोक में
छविमान आते हैं कभी,
तोड़ डाला जब किसी ने
ध्यान, मैं व्याकुल हुआ।
विश्व ने मुझको दिया
सम्मान, मैं व्याकुल हुआ।

आप मुझको दें सहारा.....

[११७]

आप मुझको दें सहारा,
यह हृदय कहता नहीं है।

आप को आती दया है
देख कर आँखें बरसती,
पोंछ दें यह अश्रु-धारा
यह हृदय कहता नहीं है।
आप मुझको दें सहारा,
यह हृदय कहता नहीं है।

रूप-दर्शन

मैं खड़ा मझधार में हूँ,
है पड़ी नया भँवर में,
पा सकूं इसका किनारा
यह हृदय कहता नहीं है।
आप मुझको दें सहारा,
यह हृदय कहता नहीं है।

मैं युगों से देखता हूँ,
रूप नभ में मुसकुराता,
पास आ जाए सितारा,
यह हृदय कहता नहीं है।
आप मुझको दें सहारा,
यह हृदय कहता नहीं है।

रूप के दर्शन किए तो
झूम कर हैं गीत गाए,
पा सकूं छवि का इशारा
यह हृदय कहता नहीं है।
आप मुझको दें सहारा,
यह हृदय कहता नहीं है।

भूमि का वासी गगन में.....

[११८]

भूमि का वासी गगन में
खोजता आधार अपना ।

रह गई कलियाँ कुँआरी
प्रीत की प्यासी उपेक्षित,
तारिकाओं को पिलाना
चाहता कवि प्यार अपना ।
भूमि का वासी गगन में
खोजता आधार अपना ।

रूप-दर्शन

सूर्य बनकर नील नभ में
चाहता है जगमगाना,
पर अँधेरे से निरंतर
भर रहा संसार अपना।
भूमि का वासी गगन में
खोजता आधार अपना।

इस ज़रा सी ज़िंदगी से
है नहीं संतोष मन को,
ज़िंदगी को ही मिटाकर
कर रहा विस्तार अपना।
भूमि का वासी गगन में
खोजता आधार अपना।

एक छोटे-से हृदय पर
भी नहीं अधिकार जिसका,
विश्व भर पर चाहती
कवि-कामना अधिकार अपना।
भूमि का वासी गगन में
खोजता आधार अपना।

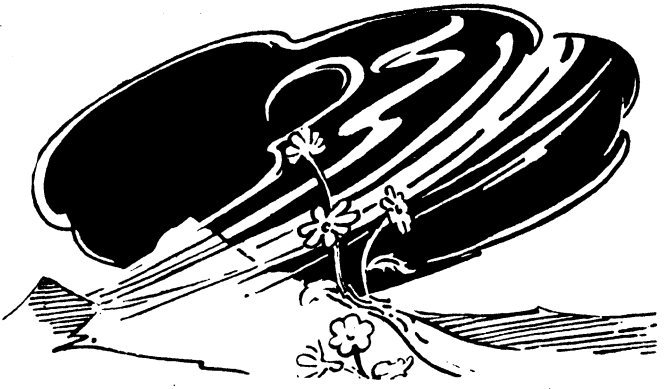

खिल उठीं कलियाँ.....

[११६]

खिल उठीं कलियाँ, मलय की
वायु जब बहने लगी ।

छुप गए नक्षत्र नभ के
चन्द्रमा भी छुप गया,
नभ हुआ लोहित समय
की वायु जब बहने लगी ।
खिल उठीं कलियाँ, मलय की
वायु जब बहने लगी ।

कौन जाने किस तरह
उड़ने लगी उर-लालसा,
मुग्ध प्राणों में प्रणय की
वायु जब बहने लगी।
खिल उठीं कलियाँ, मलय की
वायु जब बहने लगी।

कर न पाए प्रीत मानव,
गा न पाए गीत मन,
क्रोध में भर कर प्रलय की
वायु जब बहने लगी।
खिल उठीं कलियाँ, मलय की
वायु जब बहने लगी।

आग में तप कर हँसा
कवि का हृदय प्रह्लाद-सा,
प्रीत के जग में विजय की
वायु जब बहने लगी।
खिल उठीं कलियाँ, मलय की
वायु जब बहने लगी।

भरी इन स्वर-लहरियों में.....

[१२०]

भरी इन स्वर-लहरियों में
किसी छवि की जवानी है।

हुई जो बात जीवन में
वही तो कह रहा हूँ मैं,
मगर नादान दुनिया ने
कहा, "यह तो कहानी है।"

भरी इन स्वर-लहरियों में
किसी छवि की जवानी है।

सुनाई दे रही स्वर में
जगत को पीर परिचित सी,
कथा अपनी सुनाता हूँ,
न समझो यह पुरानी है।
भरी इन स्वर-लहरियों में
किसी छवि की जवानी है।

शमा भी मुसकराती है,
शलभ भी जान देते हैं;
न दिल इतिहास पढ़ता है
न जग की बात मानी है।
भरी इन स्वर-लहरियों में
किसी छवि की जवानी है।

शलभ की राख रह जाती,
बचेंगे गीत मेरे भी,
इन्हें भी मत उड़ा देना
किसी की यह निशानी है।
भरी इन स्वर-लहरियों में
किसी छवि की जवानी है।

यह जले दिल की तड़प है.....

[१२१]

यह जले दिल की तड़प है,
कौन कहता गीत है ?

है अलग मधुमास कवि के
कुंज का उन्मादमय,
गा उठी कोयल व्यथा की,
खुश हुआ मन-मीत है।
यह जले दिल की तड़प है,
कौन कहता गीत है ?

रूप-दर्शन

स्वप्न में या जागरण में
रूप के दर्शन मिले,
बावला मन हो उठा,
जग ने कहा यह प्रीत है।
यह जले दिल की तड़प है,
कौन कहता गीत है ?

प्रीत का मंथन किया तो
पा गया दिल दर्द को,
कवि-हृदय को प्रिय बहुत
यह प्रीत का नवनीत है।
यह जले दिल की तड़प है,
कौन कहता गीत है ?

दिल मिलन लेने चला था
पा गया है चिर-विरह,
कौन जाने यह हृदय की
हार है या जीत है।
यह जले दिल की तड़प है,
कौन कहता गीत है ?

मत कुरेदो, दर्द होता.....

[१२२]

मत कुरेदो, दर्द होता
है हृदय के घाव में।

फेर लीं नज़रें, हृदय-धन,
तो न अब देखो इधर,
किस लिए फिर स्नेह सा
दिखने लगा बर्ताव में।
मत कुरेदो, दर्द होता
है हृदय के घाव में।

मैं अकेला पार करना
चाहता हूँ सिंधु को,
पास आकर प्रिय न बैठो
जीर्ण जीवन - नाव में।
मत कुरेदो, दर्द होता
है हृदय के घाव में।

माफ़ करदो, मानता हूँ
भूल थी मेरी बड़ी,
चूम छवि का मुख लिया
उन्मत्त होकर ख़्वाब में।
मत कुरेदो, दर्द होता
है हृदय के घाव में।

अब न कुछ भी पास मेरे,
माँगता है रूप क्या,
हार बैठा ज़िंदगी का
दाव पहले दाव में।
मत कुरेदो, दर्द होता
है हृदय के घाव में।

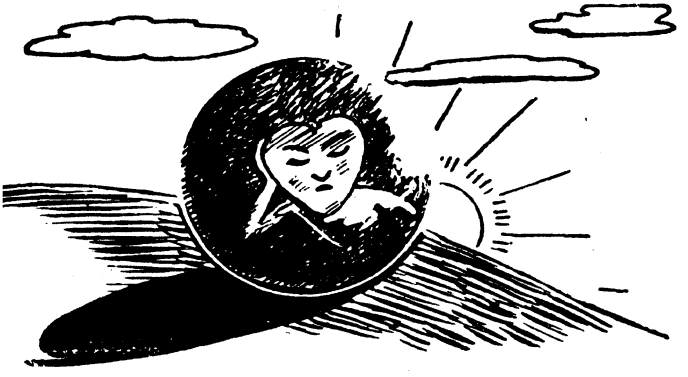

मत जगाओ, मान जाओ.....

[१२३]

मत जगाओ, मान जाओ,
दर्द दिल का सो चला है।

दीं मुझे बर्बादियाँ जिसमें
दिखाई, वह उजाला
चल दिया, अच्छा हुआ
गहरा अँधेरा हो चला है।
मत जगाओ, मान जाओ,
दर्द दिल का सो चला है।

दूर तक मुझको कहीं
आशा नज़र आती नहीं है,
और दुनिया कह रही है,
"लो सवेरा हो चला है।"
मत जगाओ, मान जाओ,
दर्द दिल का सो चला है।

फूल लेने मैं गया था,
शूल लेकर मुड़ चला हूँ,
और कहती हैं हवाएँ,
कुंज तेरा हो चला है।
मत जगाओ, मान जाओ,
दर्द दिल का सो चला है।

यह न समझो कंटकों पर
नींद आएगी न खग को,
कंटकों के नीड़ में दिल
का बसेरा हो चला है।
मत जगाओ, मान जाओ,
दर्द दिल का सो चला है।

नीड़ से झांकी विहंगिनि.....

[१२४]

नीड़ से झांकी विहंगिनि,
आ रहा होगा विहग।

दे रही है बाल-विहगों
को मधुर संदेश वह,
चोंच में दाने उठाकर
ला रहा होगा विहग।
नीड़ से झांकी विहंगिनि,
आ रहा होगा विहग।

हो बहुत बेचैन विहगी
सोचती दिन भर रही,
धूप में उड़ कर बहुत दुख
पा रहा होगा विहग।
नीड़ से झांकी विहंगिनि,
आ रहा होगा विहग।

आगमन में जब विहग के
देर सी होने लगी,
तो डरी, होकर विफल
शरमा रहा होगा विहग।
नीड़ से झांकी विहंगिनि,
आ रहा होगा विहग।

चल दिया पंछी सवेरे
गर्व विहगी को हुआ,
नील नभ में तेज़ सबसे
जा रहा होगा विहग।
नीड़ से झांकी विहंगिनि,
आ रहा होगा विहग।

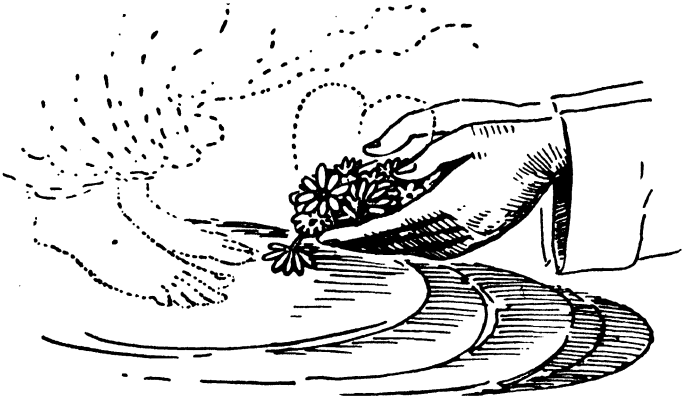

प्राण, चरणों में समर्पित.....

[१२५]

प्राण, चरणों में समर्पित
यह हृदय का फूल है।

जानता हूँ यह तुम्हारे
रूप-सा सुंदर नहीं,
प्रीत की कवि के हृदय में
किंतु सुरभित धूल है।
प्राण, चरणों में समर्पित
यह हृदय का फूल है।

शूल इसमें हैं कहीं तो
दोष यह मेरा नहीं है,
रूप ने ही तो दिया
मेरे हृदय को शूल है।
प्राण, चरणों में समर्पित
यह हृदय का फूल है।

विश्व ने प्रेमी हृदय को
किसलिए पागल कहा,
रूप के गुण-गान करना
क्या हृदय की भूल है?
प्राण, चरणों में समर्पित
यह हृदय का फूल है।

इन नवल चम्पा-कली सी
उँगलियों से स्पर्श कर
दो बिदा, यह क्षण बिदाई
के लिए अनुकूल है।
प्राण, चरणों में समर्पित
यह हृदय का फूल है।

रूप के रस-सिंधु से मैं.....

[१२६]

रूप के रस-सिंधु से मैं
प्यास लेकर चल दिया।

लोल लहरों ने कहा,
"पीलो यहाँ बंधन नहीं।"
किंतु छवि-तट से हृदय
उच्छ्वास लेकर चल दिया।
रूप के रस-सिंधु से मैं
प्यास लेकर चल दिया।

बात यह भी तो नहीं
पीना नहीं दिल चाहता,
क्या करूँ दिल को उठा
आकाश लेकर चल दिया।
रूप के रस-सिंधु से मैं
प्यास लेकर चल दिया।

फिर किसी दिन जन्म लेकर
आ सकूंगा मैं यहाँ,
यह विदाई के समय
विश्वास लेकर चल दिया।
रूप के रस-सिंधु से मैं
प्यास लेकर चल दिया।

मत कहो दिल में बसी
केवल विरह की वेदना,
याद का सौरभ - भरा
मधुमास लेकर चल दिया।
रूप के रस-सिंधु से मैं
प्यास लेकर चल दिया।

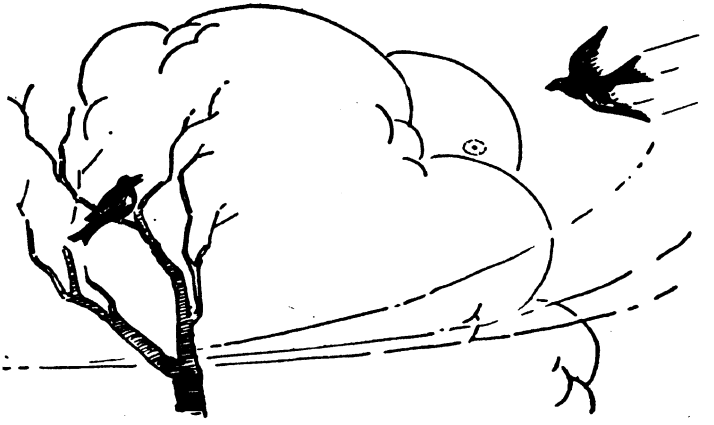

हार कर बिछुड़ा विहग फिर.....

[१२७]

हार कर बिछुड़ा विहग फिर
नीड़ में है लौट आया।

पंख बोले, "उड़ चलो खग,
चूम लो मुख चन्द्रमा का।"
उड़ चला पंछी गगन में
चन्द्रमा तब मुसकुराया।
हार कर बिछुड़ा विहग फिर
नीड़ में है लौट आया।

रूप-दर्शन

नीड़ की दूरी बढ़ी, शशि
की न दूरी हो सकी कम,
कांत किरणों ने चमक
उद्भ्रान्त मानस को जलाया।
हार कर बिछुड़ा विहग फिर
नीड़ में है लौट आया।

नीड़ में बैठी विहंगिनि,
राह में आँखें बिछाए,
मौन प्राणों की व्यथा ने
गीत अगजग में गुँजाया।
हार कर बिछुड़ा विहग फिर
नीड़ में है लौट आया।

चूर स्वप्नों को लिए
मजबूर पंछी आगया है,
झाँक नयनों में खगी के
मुसकुराता चाँद आया।
हार कर बिछुड़ा विहग फिर
नीड़ में है लौट आया।

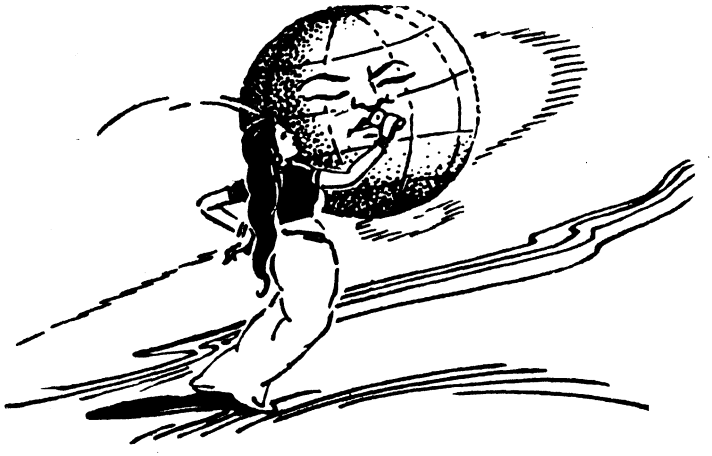

गया था प्यार पाने को.....

[१२८]

गया था प्यार पाने को
मुड़ा हूँ हार लेकर मैं।

पिलाई है ज़माने को
जवानी ने मधुर मदिरा,
जवानी की जवानी से
मुड़ा इनकार लेकर मैं।

गया था प्यार पाने को
मुड़ा हूँ हार लेकर मैं।

रूप-दर्शन

गया था रूप-मंदिर में
हृदय का ग़म ग़लत करने,
ज़माने की व्यथाओं का
मुड़ा हूँ भार लेकर मैं।
गया था प्यार पाने को
मुड़ा हूँ हार लेकर मैं।

गया था रूप-यौवन के
नशीले गीत गाने को,
मगर टूटे हुए दिल के
मुड़ा हूँ तार लेकर मैं।
गया था प्यार पाने को
मुड़ा हूँ हार लेकर मैं।

हँसी के उस ख़जाने से
गया था मैं हँसी लेने,
मुड़ा हूँ आँसुओं का ही
अमर संसार लेकर मैं।
गया था प्यार पाने को
मुड़ा हूँ हार लेकर मैं।

मिल सके तो अश्रु-धारा.....

[१२६]

मिल सके तो अश्रु-धारा
का किनारा खोजता हूँ।

नाव जीवन की बहाऊँ
किस तरह सूखी धरा पर,
मैं किसी के लोचनों में
स्नेह-धारा खोजता हूँ।
मिल सके तो अश्रु-धारा
का किनारा खोजता हूँ।

सूर्य से जल जायगा दिल,
चन्द्र से उन्मत्त होगा,
इसलिए मन के गगन में
एक तारा खोजता हूँ।
मिल सके तो अश्रु-धारा
का किनारा खोजता हूँ।

पास अपने जग बुला कर
दूर ही करता रहा है,
जो बुला कर दे न ठोकर
वह इशारा खोजता हूँ।
मिल सके तो अश्रु-धारा
का किनारा खोजता हूँ।

नील नयनों के गगन में
खो गया पंछी हृदय का,
मैं किसी के लोचनों में
अब सहारा खोजता हूँ।
मिल सके तो अश्रु-धारा
का किनारा खोजता हूँ।

हम नदी के इस किनारे.....

[१३०]

हम नदी के इस किनारे,
बह नदी के उस किनारे।

है न हमको होश अपना,
है न उनको होश अपना,
ले चले दिल को भँवर में
मस्त आँखों के इशारे।
हम नदी के इस किनारे,
वह नदी के उस किनारे।

प्यास इस दिल को जलाती,
प्यास उस दिल को जलाती,
पास में प्याली मगर
अरमान प्यासे हैं हमारे।
हम नदी के इस किनारे,
वह नदी के उस किनारे।

वह पिलाना चाहते हैं,
हम पिलाना चाहते हैं,
सोचते दोनों कि देखे
कौन जीते, कौन हारे?
हम नदी के इस किनारे,
वह नदी के उस किनारे।

कट गई है रात सारी,
हो न पाई बात प्यारी,
ओस के आँसू गिराकर
चल पड़े हँसते सितारे।
हम नदी के इस किनारे,
वह नदी के उस किनारे।

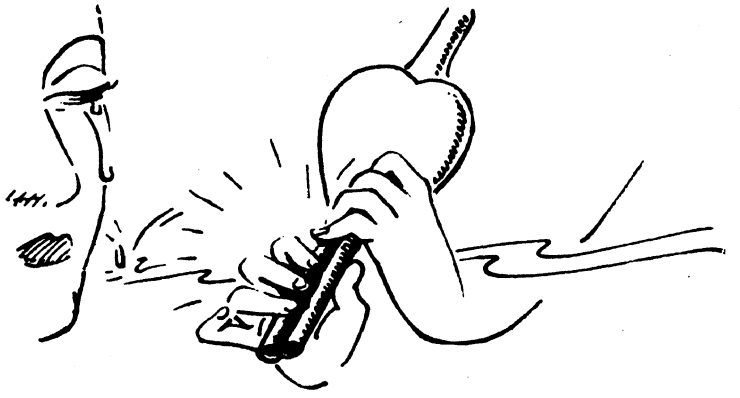

कह रहा हूँ मैं हृदय की.....

[१३१]

कह रहा हूँ मैं हृदय की
बीन से अब चुप रहो,

गीत गाने से मिलन के
क्षण निकट आते नहीं,
अब विरह की वेदना
चुपचाप प्राणों में सहो।
कर रहा हूँ मैं हृदय की
बीन से अब चुप रहो।

आँसुओं के सिंधु की
लहरें न प्रिय तक जा सकीं,
लोचनों के सावनों से
कह रहा हूँ, "मत बहो।"
कह रहा हूँ मैं हृदय की
बीन से, "अब चुप रहो।"

विश्व को तो चाहिए, बस
छंद मृदु आनंद के,
भग्न मानस की कहानी
वेदना - मय मत कहो।
कह रहा हूँ मैं हृदय की
बीन से, "अब चुप रहो।"

चाहता हूँ मैं हृदय की
धड़कनें भी बंद हों,
मौन में स्वर लीन हों,
अभिव्यक्ति का कम्पन न हो।
कह रहा हूँ मैं हृदय की
बीन से, "अब चुप रहो।"

फूल भी हैं, शूल भी.....

[१३२]

फूल भी हैं, शूल भी
कवि के हृदय - उद्यान में।

है धधकती आग तो
है आँसुओं की बाढ़ भी,
हास भी, उच्छ्वास भी
है ज़िंदगी के गान में।
फूल भी हैं, शूल भी
कवि के हृदय - उद्यान में।

रूप-दर्शन

सुख मिला सुनकर मिलन को
पर विरह को दुख मिला,
ज़िंदगी है, मौत भी है
कोकिला के गान में।
फूल भी हैं, शूल भी
कवि के हृदय - उद्यान में।

प्रात की कोमल किरण भी
तीर सी दिल में चुभी,
जीत भी है, हार भी है
रूप की मुसकान में।
फूल भी हैं, शूल भी
कवि के हृदय - उद्यान में।

मिल गया चुंबन कभी
तो मिल गई ठोकर कभी,
मान है, अपमान भी है
प्रीत की पहचान में।
फूल भी हैं, शूल भी
कवि के हृदय - उद्यान में।

गीत की पोथी किसी ने.....

[१३३]

गीत की पोथी किसी ने
फाड़ डाली खेल में।

मैं हृदय के पात्र से
मदिरा पिलाता रूप को,
तोड़ डाली है किसी ने
आज प्याली खेल में।
गीत की पोथी किसी ने
फाड़ डाली खेल में।

फूल जो दिल में खिले थे
तोड़ डाला है उन्हें,
कौन शिशु - सा कर गया है
पायमाली खेल में ?
गीत की पोथी किसी ने
फाड़ डाली खेल में ?

बादलों से ढक दिया है
शशिकला को किस लिए,
कर रहा है कौन मेरी
रात काली खेल में ?
गीत की पोथी किसी ने
फाड़ डाली खेल में।

खून दिल का कर दिया
होली उसी से खेल ली,
भर किसी ने दी गगन में
आज लाली खेल में ?
गीत की पोथी किसी ने
फाड़ डाली खेल में।

चाहता गा गीत अंतिम.....

[१३४]

चाहता गा गीत अंतिम
बाँसुरी को तोड़ दूँ।

ये बुझा पाई न मेरी
प्यास को आसव पिलाकर,
चूम कर फेकूँ धरा पर
प्यालियों को फोड़ दूँ।
चाहता गा गीत अंतिम
बाँसुरी को तोड़ दूँ।

खे रहा यद्यपि युगों से
पर किनारा मिल न पाया,
क्यों न लहरों की कृपा पर
नाव अपनी छोड़ दूँ?
चाहता गा गीत अंतिम
बाँसुरी को तोड़ दूँ।

ज़िंदगी तो दूर ही होती
गई प्रतिपल क्षितिज सी,
मौत की ही ओर सहसा
क्यों न साँसें मोड़ दूँ?
चाहता गा गीत अंतिम
बाँसुरी को तोड़ दूँ।

हैं मिलन के क्षण अनिश्चित
मिल गए, मिलकर गए,
ज़िंदगी का चिर-विरह से
क्यों न नाता जोड़ दूँ।
चाहता गा गीत अंतिम
बाँसुरी को तोड़ दूँ।